Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

हिंदी व्याकरण

- **व्याकरण शब्द**–'वि + आ + करण' (कृ + अन) के योग से बना है, जिसका शाब्दिक अर्थ है 'विशेष रूप से चारों ओर से भाषा को शुद्ध करने वाला'।
- अर्थात् शब्दानुशासन व्याकरण कहलाता है।

  अथवा
- जो भाषा को नियमों में आबद्ध (बांधना) करता हैं, उसे व्याकरण कहते हैं।

नोट– (टिप्पणी) :

1. संयुक्त व्यंजनों के अलावा (क्ष, त्र, ज्ञ, श्र) ध्वनि या वर्णों का टुकड़ा किया हुआ रूप सर्वाधिक शुद्ध माना जाता है जैसे–

   (i) आबद्ध (ii) आबद्ध (ii) सही है

   (i) कक्षा (ii) कक्षा (i) सही है

   (i) विद्यालय (ii) विद्यालय (ii) सही है
2. व्याकरण शब्द तथा पुस्तकों के नाम सदैव पुल्लिंग होते हैं। जैसे– (i) कामता प्रसाद 'गुरु' ने व्याकरण लिखा।

   (ii) वाल्मीकि ने रामायण लिखा।
3. **धातु–** क्रिया के मूलरूप को धातु कहते हैं। धातु के अंत में ना' लगाकर हिंदी में क्रिया बनाई जाती है अर्थात् क्रिया के अंत में से ना' हटाने पर धातु बनाई जाती है जैसे– चल, खा, पी, कर, सो, जा।

   व्याकरण कुल 3 भागों या 3 विचारों में विभक्त है–

   (i) वर्ण–विचार

   (ii) शब्द–विचार

   (iii) वाक्य–विचार

(ii) **शब्द–विचार–** एक या एक से अधिक वर्णों के या दो से दो से अधिक वर्णों के सार्थक मेल को शब्द कहते हैं।

शब्द के 2 भेद हैं–

(अ) सार्थक शब्द (ब) निरर्थक शब्द

(अ) सार्थक शब्द– सार्थक शब्द 'स + अर्थ + क' के योग योग से बना है, जिसका शाब्दिक अर्थ है 'अर्थ के साथ' अर्थात् जिन शब्दों के अर्थग्रहण किए जाते हैं, उन्हें सार्थक शब्द कहते हैं।

जैसे– चाय, पानी, सब्जी, सामने, पूछ इत्यादि।

(ब) निरर्थक शब्द– निरर्थक शब्द 'निर् + अर्थ + क' के योग से बना है। जिसका शाब्दिक अर्थ है 'अर्थ से रहित' अर्थात् जिन शब्दों के अर्थ ग्रहण नहीं किए जाते, उन्हें निरर्थक शब्द कहते हैं। स्वतंत्र रूप से इन शब्दो का कोई अर्थ नहीं होता अर्थात् ये शब्द सार्थक शब्दों के साथ लगकर अपना अर्थ निकलवा लेते हैं।

जैसे– वाय, वानी, बब्जी, आमने, ताछ इत्यादि।

सार्थक शब्दों का वर्गीकरण

- अर्थ के आधार पर
  - एकार्थी
  - अनेकार्थी
  - विलोम
  - पर्यायवाची
  - शब्द–युग्म
  - वाक्यांश के लिए एक शब्द
- व्युत्पत्ति / व्युत्पत्ति / बनावट / रचना के आधार पर
  - रूढ़
  - यौगिक
  - योगरूढ़
- इतिहास / स्रोत / उत्पत्ति के आधार पर
  - तत्सम
  - तद्भव
  - देशज
  - विदेशी
  - संकर शब्द
  - अनुकरणात्मक शब्द
- प्रयोग / रूप / रूप के आधार पर
  - विकारी
  - अविकारी

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

एकार्थी शब्द

एकार्थी शब्द 'एक + अर्थ + ई' के योग से बना है, जिसका शाब्दिक अर्थ है 'एक अर्थ वाला' अर्थात् जिन शब्दों के एक ही अर्थ ग्रहण' किए जाते हैं, उन्हें एकार्थी शब्द कहते हैं। जैसे– मकान, पुस्तक, घर, पत्थर, सड़क इत्यादि।

1.	**अंहकार**	–	मन का गर्व : झूठे अपनापन का बोध।
	अभिमान	–	प्रतिष्ठा में अपने को बड़ा और दूसरे को छोटा समझना।
2.	**अनुग्रह**	–	कृपाः किसी छोटे से प्रसन्न होकर उसकी भलाई करना।
	अनुकम्पा	–	बड़ी कृपाः किसी के दुःख से दुःखी होकर उस पर की गयी मेहरबानी।
3.	**अनुभव**	–	अनुभव इन्द्रियों के माध्यम से होता है।
	अनुभूति	–	अनुभव की तीव्रता के बाद अनुभूति होती है।
4.	**अनुरोध**	–	अनुरोध बराबर वालों से किया जाता है।
	प्रार्थना	–	ईश्वर या अपने से बड़ों से की जाती है।
5.	**अस्त्र**	–	जो हथियार फेंककर चलाया जाता हैं जैसे – भाला, तीर, बर्छी आदि ।
	शस्त्र	–	वह हथियार जो हाथ में पकड़कर चलाया जाता है। जैसे तलवार।
6.	**अनभिज्ञ**	–	जिसे किसी बात की जानकारी नहीं हो।
	अज्ञ	–	जिसे कुछ जानकारी नहीं हो।
7.	**अनुरूप**	–	अनुरूप से 'योग्यता' का बोध होता है। जैसे – मोहन को उसकी पुस्तक के अनुरूप इनाम मिला।
	अनुकूल	–	जिस शब्द से 'उपादेयता' और 'उपयोगिता' का बोध होता है। जैसे –भारत की जलवायु मेरे लिए अनुकूल है।
8.	**अभिमान**	–	प्रतिष्ठा में अपने को बड़ा मानना।
	घमंड	–	अपने को बड़ा दूसरों को छोटा या हीन समझना।
9.	**अपराध**	–	सामाजिक या कानून का उल्लंघन अपराध है। जैसे – हत्या।
	पाप	–	नैतिक नियमों का उल्लंघन पाप है जैसे – झूठ बोलना।
10.	**अवस्था**	–	जीवन के कुछ बीते हुए काल को अवस्था कहते हैं जैसे – उसकी अवस्था क्या होगी ?
	आयु	–	जीवन की संपूर्ण अवधि को आयु कहते हैं। जैसे – आपकी आयु लंबी हो।
11.	**अपवाद**	–	किसी पर मिथ्या दोष लगाना या निन्दा करना।
	निन्दा	–	किसी के अवगुणों को बढ़ा–चढ़ा कर वर्णन करना।
12.	**अपयश**	–	स्थायी रूप से अपकीर्ति होना।
	कलंक	–	कुसंगति के कारण चरित्र पर दोष लगना।
13.	**अलौकिक**	–	जो संसार में दुर्लभ कार्य या वस्तु हो।
	असाधारण	–	जो कार्य या भाव साधारण से बहुत बढ़कर हो।
14.	**अधिक**	–	आवश्यकता से ज्यादा। जैसे– गंगा में बाढ़ के कारण जल अधिक हो जाता है।
	काफी	–	आवश्यकता से न कम, न अधिक। जैसे' ग्रीष्म में भी यमुना में काफी पानी रहता है।
15.	**अगोचर**	–	जो इन्द्रियों के द्वारा ग्रहण न किया जा सके पर जो ज्ञान या बुद्धि से जाना जा सकता है।
	अज्ञेय	–	जो किसी भी प्रकार जाना न जा सके।
16.	**अद्वितीय**	–	जिसकी बराबरी का ओर कोई न हो।
	अनुपम	–	जिसकी किसी से उपमा न की जा सकती हो।
17.	**अनबन**	–	दो व्यक्तियों में आपस में न बनना और उनका अलग रहना, मन–मुटाव।
	खट–पट	–	दो पक्षों में साधारण कहा–सुनी या झगड़ा होना।
18.	**अन्वेषण**	–	अज्ञात वस्तु, स्थान आदि का पता लगाना।
	अनुसंधान	–	प्रत्यक्ष तथ्यों में से कुछ प्रच्छन्न सूक्ष्म तथ्यों या ब्योरेवार छान– बीन या जांच – पड़ताल करना।
	गवेषणा	–	किसी विषय की मूल स्थिति जानने के लिए कुछ समय तक चलती रहने वाली खोज पूर्ण छानबीन।
19.	**अनुराग**	–	किसी व्यक्ति पर शुद्ध भाव से मन केन्द्रित करना।
	आसक्ति	–	मोहजनित प्रेम।
20.	**अन्तःकाल**	–	विशुद्ध मन की विवेक पूर्ण शक्ति।
	आत्मा	–	एक अतीन्द्रिय और अभौतिक तत्व जो अविनाशी होता है।

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

21.	**अधिवेशन**	–	किसी कार्य को लक्ष्य कर होने वाली सदस्यों की बड़ी किन्तु अस्थायी सभा को अधिवेशन कहते हैं।
	परिषद्	–	किसी विशिष्ट विषय पर विचार–विमर्श करने के लिए बनायी गई स्थायी समिति।
22.	**अध्यक्ष**	–	किसी समिति या संस्था के स्थायी प्रधान को अध्यक्ष कहते हैं।
	सभापति	–	किसी आयोजित अस्थायी सभा के प्रधान को सभापति कहते हैं।
23.	**अर्चना**	–	धूप, दीप, फूल इत्यादि से देवता की पूजा।
	पूजा	–	बिना किसी सामग्री के भी श्रद्धा पूर्ण प्रार्थना।
24.	**अभिनन्दन**	–	किसी श्रेष्ठ के प्रति निमंत्रितवत् स्वागत।
	स्वागत	–	अपनी सभ्यता और प्रथा के अनुसार किसी को सम्मान देना।
25.	**आह्लाद**	–	क्षणिक और तीव्र भाव से युक्त प्रसन्नता आह्लाद है।
	उल्लास	–	किसी कार्य की सफलता या उसकी सफलता की तत्काल आशा पर उत्पन्न क्षणिक प्रसन्नता उल्लास है।
	हर्ष	–	इच्छित व्यक्ति को स्वस्थ्य पाने का सुख।
26.	**आज्ञा**	–	आदरणीय या पूज्य व्यक्ति द्वारा दिया गया कार्य–निर्देश। जैसे – दादाजी की आज्ञा है कि मैं धूप में बाहर न जाऊँ
	आदेश	–	किसी अधिकारी व्यक्ति द्वारा दिया गया कार्य–निर्देश जैसे– जिलाधीश का आदेश है कि नगर में सर्वत्र शान्ति बनी रहे।
27.	**आलोचना**	–	किसी आलोच्य विषय के किसी पक्ष का विवेचन।
	समालोचना	–	किसी आलोच्य विषय की सम्यक्, सन्तुलित और सम्पूर्ण आलोचना
28.	**आधिदैविक**	–	देवी या देवताओं से मिलने वाला दुःख । जैसे– भूत – प्रेतादि का उत्पाद।
	आधिभौतिक	–	भौतिक प्राणियों या पंचभूतों से मिलने वाला दुःख । जैसे – बाढ़ में बह जाना।
29.	**अराधना**	–	किसी देवता या इष्टदेव के सामने की गयी दया याचना।
	उपासना	–	किसी महान उद्देश्य की पूर्ति में की गयी एकनिष्ठ साधना।
30.	**आधि**	–	मानसिक कष्ट को आधि कहते हैं। जैसे – चिन्ता।
	व्याधि	–	शारीरिक कष्ट को व्याधि कहते हैं। जैसे – ज्वर, खाँसी आदि।
31.	**आदणीय**	–	अपने से बड़ों या सम्माननीय व्यक्तियों के प्रति सम्मानसूचक शब्द
	पूजनीय	–	पिता, गुरु आदि के प्रति सम्मानसूचक शब्द।
32.	**इच्छा**	–	किसी भी वस्तु की सामान्य इच्छा।
	अभिलाषा	–	किसी वस्तु विशेष की हार्दिक इच्छा।
	कामना	–	किसी विशेष वस्तु की साधारण इच्छा।
33.	**ईर्ष्या**	–	दूसरे की सफलता पर मन में जलना।
	स्पर्द्धा	–	दूसरों को बढ़ता हुआ देख कर स्वयं बढ़ने की इच्छा करना।
	द्वेष	–	कारणवश दूसरे के प्रति घृणा और वैमनस्य का भाव।
34.	**उदाहरण**	–	किसी नियम सा सिद्धान्त के विवेचन में दिया गया तथ्य।
	दृष्टान्त	–	किसी भी कथन की पुष्टि या समर्थन में दिखलाया जाने वाला कथन या तथ्य।
35.	**उपयोग**	–	सुन्दर ढंग से काम में लाना उपयोग है।
	प्रयोग	–	किसी वस्तु को साधारण रूप से व्यवहार में लाना प्रयोग है।
36.	**उद्योग**	–	किसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए उत्साह में किया गया प्रयत्न।
	प्रयास	–	साधारण प्रयत्न।
37.	**उपक्रमणिका**	–	विषय– सूची, जो पुस्तक के प्रारम्भ में दी जाती है।
	अनुक्रमणिका	–	वर्णानुक्रम विषय – सूची , जो पुस्तक के अन्त में दी जाती है।
38.	**उपकरण**	–	ऐसी जुटायी गयी सामग्री जिससे कोई कार्य सिद्ध हो। जैसे – औजार, कपड़ा।
	उपादान	–	किसी वस्तु के निर्माण में प्रयुक्त होने वाली सामग्री। जैसे – कपड़े के लिए रूई।
39.	**उत्साह**	–	काम करने की बढ़ती हुइ रूचि।
	साहस	–	साधन के अभाव में भी काम करने की तीव्र इच्छा।
40.	**ऋषि**	–	ब्रह्मज्ञानी । जैसे– वशिष्ठ
	मुनि	–	धर्म और तत्व पर विचार करने वाले पुरुष।

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

41.	**ओज**	–	वह आंतरिक शक्ति जो मन और शरीर को जीवित रखती है। पौरुष, आवेश और उत्साह ओज के फल है।
	पौरुष	–	ओज से प्राप्त वीरतापूर्ण कार्य करने की अपूर्व क्षमता ।
42.	**कष्ट**	–	असमर्थता के कारण मानसिक और शारीरिक कष्ट होता है।
	क्लेश	–	वह मानसिक पीड़ा या अवस्थाओं का सूचक है।
	पीड़ा	–	रोग – चोट आदि के कारण शारीरिक पीड़ा होती है।
43.	**कल्पना**	–	मन की वह क्रिया जिससे हम अपनी मानस दृष्टि के सामने नये रूप या विचारों की मूर्ति खड़ी करते हैं।
	भावना	–	मन का संक्षिप्त चित्र या मूर्त रूप।
	चिन्तना	–	किसी विषय या समस्या के सभी अंगो और सम्भावनों पर भलीभाँती सोच–विचार कर चिन्तन करना।
44.	**करुणा**	–	दूसरे के दुःख को देखकर दुःखी होना।
	संवेदना	–	दूसरे के कष्ट में उस जैसी ही वेदना का अनुभव करना।
45.	**कर्तव्य**	–	जिस कार्य में धार्मिक या नैतिक बन्धन है। जैसे – गुरुजनों की सेवा करना प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है।
	कार्य	–	साधारण काम को कार्य कहते हैं।
46.	**कृपा**	–	दूसरे के कष्ट को दूर करने की साधारण चेष्टा।
	दया	–	दूसरों का दुःख दुर करने की स्वाभाविक इच्छा।
47.	**कंगाल**	–	जिसे पेट पालने के लिए भीख मांगनी पड़े जैसे– निर्धन।
	दीन	–	निर्धनता के कारण जिसका स्वाभिमान नष्ट हो चुका है।
48.	**क्रोध**	–	अपमानित होने पर क्रोध आता है।
	अप्रसन्नता	–	उचित आदर या स्थान न मिलने पर अप्रसन्नता होती है। इसमें क्रोध जैसी तीव्रता नही होती।
49.	**काल**	–	समय (भूत, वर्तमान और भविष्य)।
	समय	–	काल का किसी घटना या वृतान्त से बंधा हुआ ऐतिहासिक रूप।
50.	**खेद**	–	किसी गलती पर दुःखी होना। जैसे – समय पर नही पहुंचने का मुझे खेद है।
	शोक	–	किसी आत्मीय कया प्रिय व्यक्ति की मृत्यु आदि पर दुःखी होना । जैसे पिता जी की मृत्यु से सर्वत्र शोक छा गया।
51.	**गर्व**	–	अपने को बड़ा समझना और दूसरों को हेय दृष्टि से देखना
	गौरव	–	अपनी महानता का यथार्थ बोध।
	दम्भ	–	किसी अयोग्य व्यक्ति का झूठा अभिमान।
52.	**ग्रन्थ**	–	इससे किसी पुस्तक के आकार की गुरुता और गांभीर्य का बोध होता है।
	पुस्तक	–	साधारणतः सभी प्रकार की छपी रचना को पुस्तक कहते है।
53.	**ग्लानि**	–	किए हुए कुकर्म पर आत्मा में दुःख और पछतावा।
	लज्जा	–	अनुचित काम करने पर मुंह छिपाना
	संकोच	–	किसी काम के करने में हिचक।
	व्रीड़ा	–	किसी के सामने काम करने में संकोच होना ।
54.	**चेष्ठा**	–	कोई अच्छा कार्य करने के लिए शारीरिक श्रम करना।
	उद्योग	–	किसी कार्य को पूरा करने में मानसिक दृढ़ता।
55.	**टीका**	–	धार्मिक और साहित्यिक कृतियों के किए गए भाषा अनुवाद और व्याख्या को टीका कहते हैं।
	भाष्य	–	व्याकरण या दर्शन पर लिखी जाने वाली विशद् व्याख्या और तर्क– वितर्क विवेचन को भाष्य कहते हैं।
56.	**तट**	–	नदी या समुद्र का किनारा।
	पुलिन	–	जल से निकली हुई जमीन।
	सैकत	–	किनारे फैली हुई बालू मिट्टी।
57.	**तंद्रा**	–	मन और शरीर की शिथिलता एवं आलस्य के कारण आयी हलकी झपकी।
	निद्रा	–	बाह्य चेतना और ज्ञान से रहित होकर शान्त चित सोना।
	सुषुप्ति	–	आत्मिक गहरी नींद या समाधि की स्थिति।
58.	**त्रास**	–	भय से अधिक तीव्र होने की स्थिति।
	भय	–	संकट के आने की कल्पना पर मन में जो विकलता होती है, उसे भय कहते हैं।
59.	**दक्ष**	–	हाथ से काम करने वाला दस्तकार । जैसे – कपड़ा सीना, चित्र बनाना।
	निपुण	–	जो अपने कार्य व विषय पर पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर उसका कुशल जानकार बन चुका है।

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

	कुशल	–	जो किसी काम में मानसिक तथा शारीरिक शक्तियों का अच्छा प्रयोग करना जानता है।
	कर्मठ	–	जिस काम पर लगाया जाए, उस पर मन लगाकर लगा रहने वाला।
60.	**नायिका**	–	नाटक या उपन्यास की मुख्य नारी–पात्र।
	अभिनेत्री	–	नारी की भूमिका में काम करने वाली स्त्री।
61.	**नहीं**	–	किसी वस्तु या विचार का पूर्ण निषेध ।जैसे मैं नहीं जानता।
	मत	–	निषेधार्थ में मत का प्रयोग होता है। जैसे – बुरी संगति में मत रहो।,
62.	**निबन्ध**	–	ऐसी गद्य रचना जिसमें विषय की अपेक्षा लेखक का व्यक्तित्व और उसकी शैली प्रधान हो।
	लेख	–	ऐसी गद्य रचना जिसमें विषय की प्रधानता हो।
63.	**निधन**	–	किसी महान् और लोकप्रिय व्यक्ति की मृत्यु।
	मृत्यु	–	साधारण मनुष्य के शरीरान्त को मृत्यु को कहते हैं।
64.	**निकट**	–	समीपता का बोध।
	पास	–	अधिकार की समीपता का बोध। जैसे – धनिकों के पास पर्याप्त धन है।
65.	**परामर्श**	–	आपस में समझ–बूझ कर सलाह करने की क्रिया।
	मंत्रणा	–	किसी गूढ़ या रहस्यमय विषय पर गुप्त रूप से की गयी चर्चा।
66.	**परिश्रम**	–	शरीर और मन का किसी भी प्रकार का श्रम।
	आयास	–	केवल मानसिक शक्ति अथवा श्रम का बोध होना।
67.	**प्रेम**	–	यह व्यापक अर्थ में प्रयुक्त होता है। जैसे – ईश्वर से प्रेम।
	स्नेह	–	अपने से छोटों के प्रति स्नेह होता है।जैसे – पुत्र से स्नेह।
	प्रणय	–	सख्यभाव मिश्रित अनुराग । जैसे – राधा – माधव का प्रणय।
68.	**प्रसाद**	–	जान–बूझ कर किसी काम की परवाह नहीं करना।
	भ्रम	–	अज्ञानता के कारण कोई भूल कर बैठना।
69.	**पारंगत**	–	जो किसी विषय का पूर्ण पण्डित है।
	बहुदर्शी	–	जो विषय को सभी दृष्टियों से समझने की योग्यमा रखता है।
70.	**प्रणाम**	–	बड़ों को प्रणाम किया जाता है।
	नमस्कार	–	बराबर वालों को नमस्कार या नमस्ते किया जाता है।
71.	**प्रलाप**	–	महान् कष्ट में मानसिक विकार के कारण प्रलाप होता है।
	विलाप	–	शोक या वियोग में किया गया रूदन।
72.	**पारितोषिक**	–	किसी प्रतियोगिता में विजयी होने पर पारितोषिक दिया जाता है।
	पुरस्कार	–	किसी व्यक्ति के श्रेष्ठ कार्य या सेवा से प्रसन्न होकर पुरस्कार दिया जाता है।
73.	**स्तवन**	–	किसी महान् व्यक्ति की कीर्ति और यश का विस्तारपूर्वक वर्णन करना।
	स्तुति	–	देवी – देवताओं का गुणानुवाद करना।
74.	**परिमल**	–	फूलों से निकलने वाली प्रिय सुगन्ध।
	सौरभ	–	वृक्षों और वनस्पतियों की फूल – पत्तियों से निकलने वाली वह सुगन्ध जो हवा के साथ दूर तक फैलती है।
75.	**प्रतिमान**	–	किसी बनायी जाने वाली वस्तु का वह नमूना जिसकी सहायता से दूसरी वस्तु अपनायी जाती है।
	मापदण्ड	–	किसी वस्तु का मान या माप जानने का दण्ड, पैमाना।
76.	**पर्यटन**	–	यह किसी विशिष्ट कार्य या उद्देश्य से होता है।
	भ्रमण	–	सैर – सपाटा करने या दर्शनीय स्थान देखने के लिए पर्यटन होता है।
77.	**पत्नी**	–	विवाहिता स्त्री पत्नी कहलाती है।
	स्त्री	–	कोई भी औरत।
78.	**प्रतिकूल**	–	अनुकूल का विपर्यय।
	प्रतिलोम	–	अनुलोम का विपर्यय ।
79.	**पुष्प**	–	इसके साथ गन्ध आवश्यक तत्व है।
	कुसुम	–	इसके साथ गन्ध का होना आवश्यक नही।
80.	**पुत्र**	–	अपना बेटा।
	बालक	–	कोई भी लड़का।
81.	**बुद्धि**	–	कर्तव्य का निश्चय करती है।
	ज्ञान	–	इन्द्रियों द्वारा प्राप्त प्रत्येक अनुभव।

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

82.	**बहुमूल्य**	–	बहुत कीमती वस्तु, जिसका मूल्य दिया जा सके।
	अमूल्य	–	जिसका मूल्य न लगाया जा सके।
83.	**भ्रान्ति**	–	अज्ञानता के कारण उलझन में पड़ जाना।
	संशय	–	जहाँ वास्तविक के सम्बन्ध में अनिश्चित भावना हो ।
84.	**महिला**	–	कुलीन घरों की प्रतिष्ठता स्त्री।
	नारी	–	समस्त सामाजिक स्त्री – जाती।
85.	**मित्र**	–	वह पराया व्यक्ति जिसके साथ आत्मीयता हो।
	बंधु	–	आत्मीय मित्र। भाई जैसा।
86.	**मन**	–	मन में संकल्प– विकल्प होता है।
	चित	–	चित में बातों का स्मरण– विस्मरण होता है।
87.	**मूर्ख**	–	बुद्धिहीन। समझाने पर जो जान जाय।
	अज्ञ	–	अनजान। समझाने पर जो जान जाये।
88.	**महाशय**	–	सामान्य लोगों के लिए महाशय का प्रयोग होता है।
	महोदय	–	अपने से बड़ों को महोदय लिखा जाता है।
89.	**मंत्री**	–	राज्य के मंत्रिमण्डल के सदस्यों को मंत्री कहते हैं।
	सचिव	–	विभिन्न सभा– समितियों या सचिवालय में किसी विभाग के प्रधान को सचिव कहते हैं।
90.	**यंत्रणा**	–	असह्य दुःख का अनुभव (मानसिक)
	यातना	–	आघात से उत्पन्न कष्टों की अनुभूति (शारीरिक)
91.	**विश्वास**	–	सामने हुई बात पर भरोसा करना।
	श्रद्धा	–	वह मनोवृति जो भक्ति और विश्वास से पुष्ट होती है।
	भक्ति	–	ईश्वर, देवता अथवा पूज्य व्यक्ति के प्रति अनन्य निष्ठा, श्रद्ध और प्रेम का नाम।
92.	**विलक्षण**	–	जो असामान्य स्थिति में होते हुए हमें चकित कर दे।
	विचित्र	–	जो सामान्य से भिन्न आचरण करे।
93.	**वार्ता**	–	किसी विषय से सम्बन्ध रखने वाला ऐसा कथन जो दूसरों की जानकारी के लिए लिखा या कहा गया हो।
	वार्तालाप	–	किसी विषय पर दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच होने वाली बातचीत।
94.	**विरोध**	–	किसी विषय पर दो व्यक्तियों या दलों में होने वाला मतभेद और खींचतान।
	वैमनस्य	–	मन में रहने वाला वैर अथवा शत्रुता का भाव। अत्याधिक विरोध प्रायः वैमनस्य में बदल जाता है।
95.	**विषाद**	–	अतिशय दुःखी होने के कारण किंकर्तव्य विमूढ़ होना।
	व्यथा	–	किसी आघात के कारण मानसिक अथवा शारीरिक कष्ट या पीड़ा।
96.	**सेवा**	–	गुरुजनों की टहल। देखभाल करना।
	शुश्रूषा	–	दीन – दुखियों और रोगियों की सेवा।
97.	**साधारण**	–	जो वस्तु या व्यक्ति एक ही आधार पर आश्रित हो । जिसमें कोई विशिष्ट गुण या चमत्कार न हो।
	सामान्य	–	जो बात दो व्यक्तियों में समान रूप से पायी जाती हो।
98.	**संतोष**	–	वह मनोवृत्ति जिसमें सहज प्राप्त के प्रति मन निश्चिन्त और प्रसन्न हो।
	परितोष	–	शारीरिक, मानसिक तथा नैतिक आवश्यकतों तथा इच्छाओं की पूर्ति को परितोष कहते हैं।
99.	**स्मृति**	–	बीती हुई बातों का हठात् मानस –पट पर चित्रित हो उठना।
	स्मरण	–	किसी बीती बात या व्यक्ति का चित्र प्रयत्नपूर्वक मानस दृष्टि के सामने खड़ा करना।
100.	**स्वतन्त्रता**	–	स्वतन्त्रता का प्रयोग व्यक्तियों के लिए होता है।
	स्वाधीनता	–	स्वाधीनता देश या राष्ट्र के लि प्रयुक्त होती है।
101.	**समीर**	–	शीतल और मंद–मंद बहने वाली वायु को समीर कहते हैं।
	पवन	–	कभी मंद और कभी तेज चलने वाली कोई भी वायु पवन है।
102.	**सखा**	–	जो आपस में एक प्राण, एक मन और दो शरीर है।
	सुहृद	–	अच्छा हृदय रखने वाला।
103.	**सहानुभूति**	–	दूसरे के दुःख को अपना दुःख समझना।
	स्नेह	–	छोटो से प्रति प्रेम भाव रखना।

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

अनेकार्थी शब्द

अनेकार्थी शब्द 'अनेक + अर्थ + ई' के योग से बना है, जिसका शाब्दिक अर्थ हैं 'अनेक अर्थ वाला' अर्थात् जिन शब्दों के एक से अधिक अर्थ ग्रहण किए जाते हैं, उन्हें अनेकार्थी शब्द कहते हैं।

जैसे– आम– साधारण/सामान्य, एक फल।

कनक– सोना, धतुरा, गेहूँ।

कर – हाथ, टेक्स, सूंड़, किरण, एक क्रिया।

चश्मा – ऐनक, झरना (पानी का स्रेत)।

अंक – संख्या/गिनती, अध्याय, भाग्य, गोद।

अज – बकरा, राजा दशरथ के पिता, ब्रह्मा।

भव – होना (एक क्रिया), संसार, जन्म।

खाना – भोजन, एक क्रिया, अलमारी का खाना।

शब्द		अनेकार्थ
अंक	–	संख्यावाचक, गिनती के अंक, अध्याय, भाग्य, चिह्न, देह, गोद, स्थान।
अर्क	–	आक, सूर्य, काढ़ा, स्वर्ण
अक्ष	–	आत्मा, आँख, सूर्य, सर्प, चौसर के पासे, पहिया,
अक्षर	–	वर्ण, बह्म, गगन, धर्म, सत्य, अविनाशी।
अच्युत	–	विष्णु, कृष्ण, स्थिर, अविनाशी।
अज	–	बकरा, ब्रह्मा, दशरथ के पिता का नाम, जीव।
अनन्त	–	आकाश, विष्णु, शेषनाग।
अन्तर	–	मध्य, छिद्र, आकाश, अवधि, व्यवधान।
अपेक्षा	–	आशा, इच्छा, आवश्यकता, वनिस्पत।
अधर	–	होंठ, शून्य, मध्य।
अंबर	–	आकाश ,वस्त्र।
अमृत	–	पारा, जल, दूध, स्वर्ण, घृत।
अर्थ	–	धन, प्रयोजन, कारण, लिए।
अतिथि	–	मेहमान, साधु, यात्री, कुश का बेटा।
अपवाद	–	नियम विरुद्ध, कलंक।
अरुण	–	लाल, सूर्य, सूर्य का सारथी
आपत्ति	–	विपत्ति, एतराज, विमत
ईश्वर	–	प्रभु, समर्थ, स्वामी, धनिक, नियंता।
उत्तर	–	जवाब, बदला, पश्चाताप, उत्तर दिशा, राजा विराट् का पुत्र।
कनक	–	सोना, धतूरा, गेहूँ, पलाश वृक्ष।
कम्बन्ध	–	धड़, राहू, राक्षस विशेष, पेटी।
कला	–	अंश, कार्य करने का कौशल, गुण, चन्द्रमा का सोलहवाँ भाग।
कषाय	–	गेरूए रंग का,कसैला
कटाक्ष	–	व्यंग्य, आक्षेप, टेढ़ी नजर।
कोट	–	किला या गढ़, परकोटा, रंग चढ़ाने की प्रक्रिया, एक वस्त्र विशेष।
कर्ण	–	कुंती पुत्र, कान, पतवार, समकोण, त्रिभुज में सबसे बड़ी भुजा।
कल	–	आने वाला एवं बीता हुआ दिन, सुंदर, चैन या शांति, पुर्जा, मधुर ध्वनि।
काल	–	सयम, मूहुर्त, अवसर, युग, महाकाल–शिव।
कुशाल	–	चतुर, खैरियत।
कुम्भ	–	घड़ा, हाथी का मस्तक।
कूट	–	शिखर, छल–कपट, कागज, पर्वत।
कोटि	–	करोड़, श्रेणी, धनुष का सिरा।
कृष्णा	–	देवकी –वासुदेव–पुत्र, काला, कौआ, अंधकार
केतु	–	निशान, ध्वजा, एक ग्रह, ज्ञान।
केश	–	बाल, विष्णु, विश्व, किरण।

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

क्रिया – कार्य, व्यापार, उपाय, व्यवहार, श्राद्ध।
क्षमा – पृथ्वी, सहिष्णुता, दया , रात्रि, दुर्गा, शक्ति।
क्षेत्र – खेत, शरीर, स्त्री, गृह।
खग – पक्षी, वायु, बाण, ग्रह, बादल, देवता, सूर्य, चंद्रमा।
खर – गधा, एक राक्षस, तीक्ष्ण, तृण, कौआ, बगुला, दुष्ट।
खल – दुष्ट, धतुरा, दवा काटने के पत्थर की खरल।
गण – समूह, रुद्र के अनुचर, सेना, छन्द शास्त्र के आठ गुण, संस्कृत क्रिया के गण।
गति – चाल, मोक्ष, स्थिति
गुण – डोरी, रस्सी, कौशल, स्वभाव, प्रत्यंचा, विशेषता।
गुरु – शिक्षक, बड़ा, श्रेष्ठ, भारी, दो मात्रावाला स्वर, बृहस्पति।
गो – गाय, आँख, इन्द्रिया, बाण, बाल, स्वर्ग, भूमि, सूर्य, माता, बैल, सरस्वती।
धन – बाल, मोटा, हथौड़ा, कपूर, समान लम्बाई–चौड़ाई मोटाई वाला आकार– घनफुट।
चारा – उपाय, घास – फूस।
छन्द – वेद, जल, रंग, अभिप्राय, एकान्त, काव्य के पदादि।
जगत् – संसार, पनघट, वायु, शंकर, टेक।
जलज – कमल, मोती, मछली, चंद्रमा, सेवार, शंख।
जाल – माया, छल, जाला, जानवरों को पकड़ने हेतु रस्सी का फंदा।
जीवन – प्राण, आजीविका, जल, पुत्र, गंगा।
ठाकुर – हज्जाम, देवता, राजपुत्र
तत्त्व – मूल, सत्य, सार, धर्म, परिणाम, उद्देश्य, सूक्ष्म ज्ञान, यथार्थ, पंचभूत।
तंत्र – सिद्धांत, प्रबंध, शासन, उपाय, औषधि, खजाना।
तम – अंधकार, तमाल वृक्ष, पाप, राहू, अज्ञान, तमोगुण।
तारा – नक्षत्र, आँख की पुतली, बालि की पत्नी, बृहस्पति की पत्नी।
ताल – जलाशय, संगीत की ताल, ताड़वृक्ष, तालाब।
तीर – बाण, किनारा, निकट।
टीका – तिलक, अभिषेक,मस्तक का आभूषण, टिप्पणी, आलोचना।
दक्षिण – अनुकूल, दक्षिण दिशा, उदार, चतुर।
द्रोण – कौआ, डोंगी, एक तौल, द्रोणाचार्य।
द्विज – ब्राह्मण, पक्षी, दाँत, चंन्द्रमा, द्विजन्म।
द्वन्द्व – कलह, एक समास विशेष रहस्य।
धन – दो संख्याओं को जोड़, सम्पत्ति, स्त्री।
धनंजय – अर्जुन, आग, वायु, एक वृक्ष।
धर्म – प्रकृति, शुभ–कर्म, आचार, स्वभाव, कर्तव्य, सम्प्रदाय, व्यवस्था, रीति, न्याय, यज्ञ।
धात्री – उपमाता, पृथ्वी।
धातु – वीर्य, प्रकृति, व्याकरण की धातु, आष्टधातु, स्वर्ग।
ध्रुव – ध्रुवतारा, विष्णु भक्त, नित्य, विष्णु, स्थिर
नग – पहाड़, नगीना, पदार्थ, वृक्ष, जड़।
नाग – साँप, हाथी, वायु का एक भेद।
निर्वाण – मोक्ष, मृत्यु, संगम, विश्राम, शून्य।
निशाचर – चोर, राक्षस, उल्लू, प्रेत।
नीलकंठ – शंकर, नीले कंठवाला पक्षी विशेष (मोर)।
पतंग – सूर्य, गुड्डी, पक्षी, टिड्डी, पतिंगा।
पक्ष – पंख, पंद्रह दिवस का पखवाड़ा, दल, वाद का एक रूप, और बल।
पट – वस्त्र, किवाड़, यवनिका, स्थान, मुख्य।
पत्र – पत्ता, चिट्ठी पंख।
पद्म – कमल, संख्या विशेष, श्रीराम, सर्प विशेष।
पद – शब्द, पाँव, चिह्न,स्थान, विभक्ति युक्त शब्द, किसी छन्द का चतुर्थांश।
पय – दूध, पानी।

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

पान – पत्ता, तंबाकू का पान जो हुक्के चिलम में पीया जाता है, पीना।
पानी – आब, जल, चमक, इज्जत।
पिण्ड – शरीर, पितरों के लिए देय, गोल।
पुष्कर – कमल, पुष्कर नाम का एक तीर्थ, तालाब, हाथी के सूँड़ के आगे का भाग, आकाश, बाण।
पृष्ठ – पीठ, पन्ना, पीछे का भाग।
पोत – बच्चा, जहाज, गुडिया, वस्त्र।
प्रकृति – स्वभाव धर्म, माया, खजाना, राज्य, जन्म, स्वामी, मित्र।
प्रत्यय – विश्वास, ज्ञान, शब्द के बाद में जुड़ने वाला शब्दांश, निश्चय, कारण।
प्रभाव – असर, महिमा, सामर्थ्य, दबाव।
प्राण – प्राण वायु, जीव, ईश्वर, ब्रह्म।
फल – परिणाम, वृक्ष से प्राप्त होने वाला खाद्य, चर्म ढाल, संतान, मेवा।
बंसी – बाँसुरी, मछली फँसाने का काँटा, विष्णु, कृष्णादि के चरण चिह्न।
बलि – राक्षसराज बालि, कर, उपहार, बलिदान।
रस – स्वर्णादि भस्म, आनन्द, प्रेम, स्वाद, अर्क, तत्व, भोजन के छह रस, काव्य के नौ रस, पारा मेल।
महावीर – हनुमान, बहुत पराक्रमी, जैन तीर्थंकर का नाम।
मधु – शहद, शराब, वसंत ऋतु, पराग।
मान – अभिमान,इज्जत, नाप–तौल।
मित्र – दोस्त, सूर्य, प्रिय, सहयोगी।
मूक – गूंगा, चुप, विवश।
लगन – लौ, मुहूर्त, प्रेम, धनु।
लक्ष्य – उद्देश्य, निशाना, ध्येय।
वर – दूल्हा, वरदान, श्रेष्ठ, आशीर्वाद।
वर्ग – जाति, गणित की एक क्रिया समूह।
वर्ण – अक्षर, रंग, बाह्मण आदि चार वर्ण
वर्तमान – विद्यमान, समय, प्रचलित, तात्कालिक।
वर्ष – साल, संवत्, दृष्टि, पृथ्वी का एक खण्ड।
वीचि – लहर (तरंग), अवकाश, चमक, सुख
विग्रह – शरीर, लड़ाई, देव – प्रतिमा।
विहंग – पक्षी (चिड़िया), बाण (तीर), मेघ, सूर्य, चन्द्रमा, ग्रह।
ब्याज – सूद, बहाना, छल।
शिव – शंकर, कल्याण, शुभ।
शेष – बाकी, अन्त, सर्प, बचा हुआ, सीमा।
श्रुति – कान, वेद ,सुनना, वाद, किंवदन्ती।
सर – पराजित, सिर, तालाब।
सारंग – मोर, सर्प, हरिण, बादल, एक राग विशेष, चातक, सिंह, भौरा, कामदेव, स्त्री, हंस, कमल, कोयल, कपूर, सुंदर, पानी, धनुष, शंख वस्त्र आदि।
सेहत – स्वास्थ्य, सुख, रोग मुक्ति, तन्दुरूस्ती।
सैंधव – घोड़ा, नमक, सिन्धु देश का ।
हंस – सूर्य, एक पक्षी विशेष – मराल, योगी, जीवात्मा।
ह्रस्व – छोटा, नाटा, थोड़ा, नीचा, ह्रस्व स्वर अ इ उ।
हरकत – हिलना–डुलना, चेष्टा, गति, नटखटपन।
हरि – सूर्य, विष्णु, सिंह, बंदर, यमराज, पर्वत, घोड़ा चन्द्रमा, सर्प, मेंढक, तोता, हवा, ब्रह्मा, शिव,किरण, कोमल, हंस, **हाथी,** कामदेव आदि।
हस्ती – हाथी, औकात, अस्तित्व
हलधर – श्रीकृष्ण के भाई बलराम, बैल, किसान।
हीन – रहित, निकृष्ट, दीन, छोड़ा हुआ, पथभ्रष्ट, कम, अल्प, ओछा, नीच, शून्य, नम्र।
हेय – बर्फ, सोना, बादामी रंग का घोड़ा, नागकेसर।

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

1. 'सारंग' का अनेकार्थक शब्द समूह है–

(1) चन्द्रमा, भौंरा, रति–क्रीड़ा, चाबुक
(2) चन्द्रमा, हाथी, भौंरा, कोयल
(3) चन्द्रमा, जत्था, असत्य, भौंरा
(4) हाथी, विष, चूना, चन्द्रमा

2. 'घन' का अनेकार्थक शब्द समूह है–

(1) **अधिक बड़ा, हथौड़ा, भारी, बादल**
(2) **बादल, घटा, भारी, हथौड़ा**
(3) **बादल, हाथ, बगीचा, भारी**
(4) **हथौड़ा, अधिक बड़ा, बादल, घटा**

3. 'अंक' का अनेकार्थक शब्द होगा–

(1) संख्या
(2) चौसर के पासे
(3) विष्णु
(4) कामदेव

4. नीचे दिए गए अनेकार्थक शब्दों में से कौनसा अनुपयुक्त है ?

(1) अर्थ – धन, कारण, मतलब
(2) उमा – पार्वती, दुर्गा, शारदा
(3) देव – भाग्य, विधाता, आकाश
(4) चपला – चंचल, बिजली, लक्ष्मी

5. 'अनुमति' शब्द का अनेकार्थी है–

(1) अज्ञा (2) अनुज्ञा (3) प्रज्ञा (4) अवज्ञा

6. 'अंक' का अनेकार्थक शब्द समूह है–

(1) गिनती के अंक, नाटक के अंक, अध्याय, कारण
(2) संख्या, भाग्य, गिनती के अंक, कपड़ा
(3) नाटक के अंक, गिनती के अंक, जीवित, कपड़ा
(4) गिनती के अंक, नाटक के अंक, भाग्य, संख्या

निम्नलिखित में अनेकार्थक शब्द नहीं है।

1. छादन

(1) आच्छादन (2) ढक्कन (3) वस्त्र (4) अपरस

2. तारा

(1) बालिक की स्त्री (2) बृहस्पति की पत्नी (3) नक्षत्र (4) ध्रुव

3. कोष

(1) खजाना (2) म्यान (3) खाली (4) स्थान

4. जर

(1) जरा (2) जल (3) जमीन (4) जड़

5. कंदल

(1) कोयल (2) कलह (3) सोना (4) कमल

6. ऐन

(1) आँख (2) घर (3) फल (4) करूतूरी

7. अरुण

(1) सिंदूर (2) गरुड़ (3) सूर्य का सारथि (4) रात

8. अंतर

(1) व्यवधान (2) फासला (3) भीतर (4) आकाश

9. कक्ष

(1) काँस (2) कोष (3) काँख (4) श्रेणी

10. कनक

(1) खजूर (2) आटा (3) पलास (4) सूर्य

11. अंब

(1) आम (2) वृक्ष (3) दुर्गा (4) आकाश

12. अयोग

(1) कपूर (2) सारस (3) चंद्र (4) कमल

13. अरब

(1) इंद्र (2) घौड़ा (3) यात्री (4) सौ करोड़

14. सुलोचना

(1) सीता (2) चकोर (3) अच्छे नेत्र वाली (4) मृग

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

15. कंठ

(1) गला (2) किनारा (3) कोपल (4) स्वर

16. विहंग

(1) बादल (2) विमान (3) बाण (4) बड़ा

17. हर

(1) शिव (2) विष्णु (3) हरण करना (4) प्रत्येक

18. सारंग

(1) छाता (2) कोयल (3) तालाब (4) चमक

19. अतिथि

(1) संन्यासी (2) आम (3) अग्नि (4) अभ्यागत

20. जया

(1) दुर्गा (2) ध्वजा (3) वस्त्र (4) पार्वती

21. गौतमी

(1) पार्वती (2) अहल्या (3) हल्दी (4) गोरोचन

22. सिता

(1) चाँदी (2) चमेली (3) चमक (4) चाँदनी

23. शरभ

(1) ऊँट (2) टिड्डी (3) विष्णु (4) इंद्र

24. नाक

(1) आकार (2) इज्जत (3) अंतरिक्ष (4) बादल

25. भा

(1) बिजली (2) प्रभा (3) किरण (4) एक राग

26. क्षेत्र

(1) घोड़ा (2) स्त्री (3) खेल (4) तीर्थ

27. सार

(1) तलवार (2) रक्षा (3) अंधा (4) लाभ

28. धारा

(1) संतान (2) प्रकृति (3) नियम (4) सेना

29. तात

(1) समीप (2) भाई (3) मित्र (4) गुरु

30. चाप

(1) धनुष (2) दबाव (3) सोत (4) धनु राशि

31. अपेक्षा

(1) भरोसा (2) इच्छा (3) आवश्यकता (4) साल

32. अजया

(1) बकरी (2) मित्र (3) चमक (4) चाँदनी

33. सैन

(1) इंगित (2) संकेत (3) लक्षण (4) धागा

34. सूर

(1) मदार (2) अर्क (3) पंडित (4) माला

35. अर्क

(1) मदार (2) रविवार (3) आराधना (4) तांबा

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

विलोम शब्द

इसे विपर्यय भी कहा जाता है। दिए गए शब्द का उल्टा अर्थ बताना विलोम कहलाता है।

- विलोम बताते समय ध्यान रखना चाहिए कि तत्सम शब्दों के विलोम सदैव तत्सम में होते हैं।
- तद्भव का विलोम सदैव तद्भव में होता है।
- संज्ञा का विलोम संज्ञा में होता है।
- विशेषण का विलोम विशेषण में तथा शब्द के अंत में जो प्रत्यय आता है उसके विलोम में भी उसी प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण–

लघु	– गुरु
छोटा	– बड़ा
दीर्घ	– ह्रस्व
लाघव	– गौरव
लघिष्ठ	– गरिष्ठ
भूतकाल	– भविष्यकाल
भविष्यकाल	– वर्तमानकाल
वर्तमानकाल	– भूतकाल

नोट–

एक या दो उदाहरण तक 'आदि' का प्रयोग किया जाता है, जबकि दो से अधिक उदाहरणों के लिए 'इत्यादि' शब्द का प्रयोग किया जाता है।

विलोम	– अनुलोम
अनुलोम	– प्रतिलोम
प्रतिलोम	– अनुलोम
नीरुजता (रोग से रहित)	– रूग्णता / सरुजता (रोग से युक्त)
सांत (अंत के साथ)	– अनंत
असूया (जलन)	– अनसूया (जलन / ईष्या से रहित)
ईप्सित (ईच्छा)	– अनीप्सित (ईच्छा से रहित)
ऋजु (सरल)	– वक्र (टेढ़ा)
अभिज्ञ (जानकार)	– अनभिज्ञ (जानकारी से रहित)
अज्ञ (मूर्ख)	– विज्ञ (ज्ञाता / विद्वान)
मसृण (चिकना / स्निग्ध)	– रूक्ष (रूखा)
ऋत (सत्य)	– अनृत (सत्य से रहित / झूठ)
सृष्टि (निर्माण)	– प्रलय (नाश)
औरस	– जारज
स्थावर (स्थायी)	– जंगम (गतिशील)
अन्त	– अनंत
आदि	– अंत

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

शब्द	विलोम शब्द	शब्द	विलोम शब्द
अघ	अनघ	अर्थ	अनर्थ
अग्र	पश्च	अभिज्ञ	अनभिज्ञ
अघोष	सघोष	अतिवृष्टि	अनावृष्टि
अथ	इति	अनाथ	सनाथ
अनाहूत	आहूत	अधिक	अल्प
अनुलोम	प्रतिलोम	अपमान	सम्मान
अनुरक्ति	विरक्ति	अंधकार	प्रकाश
अग्रज	अनुज	अरूचि	रूचि
अर्पण	ग्रहण	अच्छा	बुरा
अमृत	विष	अकाल	सुकाल
अवनति	उन्नति	आहार	अनाहार
अनुकूल	प्रतिकूल	आधुनिक	प्राचीन
अंतरंग	बहिरंग	आयात	निर्यात
अधुनातन	पुरातन	आविर्भाव	तिरोभाव
अगला	पिछला	आकाश	पाताल
अस्त	उदय	आगत	विगत/अनागत
अल्पज्ञ	बहुज्ञ	आगमन	निर्गमन
अवनि	अंबर	आरोहण	अवरोहण
अल्पायु	दीर्घायु	आग्रह	दुराग्रह
अनुराग	विराग	आगे	पीछे
अनिवार्य	ऐच्छिक	आत्मा	परमात्मा/अनात्मा
अनुग्रह	विग्रह	आश्रित	अनाश्रित
अन्तर्द्वन्द्व	बहिद्वन्द्व	आदर	अनादर/निरादर
अन्त	आदि	आदान	प्रदान
अमावस्या	पूर्णिमा	आदि	अन्त, इति, अनादि
अपकार	उपकार	आरम्भ	अन्त
अधित्यका	उपत्यका	आरोह	अवरोह
अर्वाचीन	प्राचीन	आवृत	अनावृत
अपना	पराया	आकर्षण	विकर्षण
अपेक्षा	उपेक्षा	आर्द्र	शुष्क
अमर	मर्त्य	आविर्भाव	विरोभाव
अज्ञ	विज्ञ	आशा	निराशा
अगम	सुगम	आसक्त	अनासक्त, विरक्त
आस्तिक	नास्तिक	उत्थान	पतन
आजादी	गुलामी	उच्च	निम्न
आस्था	अनास्था	उन्मुख	विमुख
आलोक	अंधकार	उधार	नगद
आय	व्यय	उतीर्ण	अनुतीर्ण
आवश्यक	अनावश्यक	उपचय	अपचय
आरोहण	अवरोहण	उद्धत	विनीत
आशावादी	निराशावादी	उपमेय	अनुपमेय, उपमान
इहलोक	परलोक	अधम	उत्तम
इच्छा	अनिच्छा	उभरा	धँसा
ईश्वर	अनीश्वर	उर्वरा	ऊसर/अनुर्वर
इति	आदि	उदयाचाल	अस्ताचाल

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

उपकार	अपकार	उग्र	सौम्य
उपसर्ग	प्रत्यय	उत्तरायण	अस्ताचल
उत्कर्ष	अपकर्ष	ऊँच	नीच
उन्नत	अवनत	ऊर्ध्वगामी	अधोगामी
उदात	अनुदात	एकता	अनेकता
उदार	अनुदार	ऐतिहासिक	अनैतिहासिक
उत्साह	निरुत्साह	एकतंत्र	बहुतंत्र
उत्कृष्ट	निकृष्ट	ऐहिक	पारलौकिक
उचित	अनुचित	उदय	अस्त
उपस्थित	अनुपस्थित	एड़ी	चोटी
उत्तम	अधम	ऐक्य	अनैक्य
उपयोग	दुरुपयोग	ऋत	अनृत
ऋजु	नक्र	ऋणात्मक	धनात्मक
उपयुक्त	अनुपयुक्त	कदाचार	सदाचार
कड़वा	मीठा	कड़ा	मुलायम
कसूरवार	बेकसूर	कुत्सा	प्रशंसा
कीर्ति	अपकीर्ति	कुमार्ग	सुमार्ग
कठोर, कर्कश	कोमल	कुल्टा	पतिव्रता
क्रम	अक्रम	क्रोध	क्षमा
कुरूप	सुरूप	कर्कशा	सुशीला
कृष्ण	श्वेत, शुक्ल	कुसुम	वज्र
कठिन	सरल, कोमल	कर्मण्य	अकर्मण्य
कुलदीप	कुलांगार	करूण	निष्ठुर
कृपण	दानी	कृतज्ञ	कृतहन
कनिष्ठ	ज्येष्ठ / वरिष्ठ	खण्डन	मण्डन
कापुरुष	पुरूषार्थी	खरीद	बिक्री
कायर	निडर	खीझना	रीझना
कर्म	निष्कर्म, अकर्म	खुशबू	बदबू
कटु	मधुर	खेद	प्रसन्नता
कपूत	सपूत	खिलना	मुरझाना
कपट	अकपट	खाद्य	अखाद्य
कीर्ति	अपकीर्ति	गम्भीर	वाचाल
क्रूर	अक्रूर, सरल	गरल	सुधा
क्रिया	प्रतिक्रिया	गहरा	छिछला / उथला
कृश	पुष्ट,पीन	गणतंत्र	राजतंत्र
कोमल	कठोर	गीला	सूखा
कल्याण	अकल्याण	गुरु	लघु
कुटिल	सरल	गेय	अगेय
कंटकित	अकंटकित	गौरव	अगौरव
कृत्रिम	प्रकृत	गुप्त	प्रकट
क्रय	विक्रय	ग्रस्त	मुक्त
गृहस्थ	संन्यासी	जन्म	मृत्यु
गृहीत	व्यक्त	जय	पराजय
गत	आगत	जड़	चेतन
ग्राह्य	त्याज्य	जागरण	निद्रा
गुण	अवगुण / दोष	ज्योति	तम

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

गगन	पृथ्वी	जाग्रत	प्रसुप्त
गरीब	अमीर	ज्योतिर्मय	तमोमय
गमन	आगमन	जागृति	सुषुप्ति
ज्ञान	अज्ञान	जेय	अजेय
घटाना	बढ़ाना	जल	स्थल
घात	प्रतिघात	जवानी	बुढ़ापा
घाटा	मुनाफा	जीवन	मरण
घर	बाहर	जीवित	मृत
ग्राम्य	वन्य, नागर	जोड़	घटाव
चर	अचर	ज्वार	भाटा
चल	अचल	जटिल	सरल
चढ़ाव	उतार	जाड़ा	गर्मी
चिर	अचिर	झूठ	सच
चेष्ट	निश्चेष्ट	झोपड़ी	महल
चोर	साधु/साहुकार	ठिगना/नाटा	लम्बा
चिरंतन	नश्वर	दिन	रात
चेतन	अचेतन, जड़	देव	दानव
छलिया/छली	निश्छल	दाता	कृपण, सूम
छाँह	धूप	दिवा	रात्रि
छूत	अछूत	दुष्ट	सज्जन
जंगली	पालतु/घरेलु	दूषित	स्वच्छ
देय	अदेय	निद्रा	जागरण
दृश्य	अदृश्य	न्याय	अन्याय
दृढ़	अदृढ़/विचलित	निर्दोष	सदोष
दुराचारी	सदाचारी	न्यून	अधिक
दुर्बल, निर्बल	सबल	निर्माण	विनाश, ध्वंस
दुर्दान्त	शान्त	निश्चेष्ट	सचेष्ट
दुःशील	सुशील	नया	पुराना
दीर्घकाय	कृशकाय/लघुकाय	नर	नारी
दक्षिण	वाम, उत्तन	नख	शिख
ताप	शीत	नश्वर	शाश्वत
तिमिर	प्रकाश	नगर	ग्राम
तम	आलोक, ज्योति	निन्दा	स्तुति
तारीफ	शिकायत	नैतिक	अनैतिक
तामसिक	सात्त्विक	निगलना	उगलना
तीव्र	मन्द	निर्दय	सदय
तुकान्त	अतुकान्त	नागरिक	ग्रामिण
तुच्छ	महान्	नास्तिक	आस्तिक
तृष्णा	वितृष्णा	नैसर्गिक	कृत्रिम, अनैसर्गिक
तृषा	तृप्ति	निरर्थक	सार्थक
तरल	ठोस	निडर	डपरोक
तरुण	वृद्ध	नमकहलाल	नमकहराम
तिक्त	मधुर	सघोष	अघोष
थोक	खुदरा	नकली	असली
थोड़ा	बहुत	नवीन	प्राचीन
धरा	गगन	निर्गुण	सगुण

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

धनी	निर्धन	निषिद्ध	विहित
ध्वंस	निर्माण	निष्काम	सकाम
धूप	छाया	निरामिष	सामिष
धृष्ट	विनीत	निर्दोष	सदोष
नूतन	पुरातन	निद्य	वंद्य
निर्लज्ज	सलज्ज	पात्र	अपात्र
निर्मल	मलिन	पाप	पुण्य
नित्य	अनित्य	पवित्र	अपवित्र
निरक्षर	साक्षर	पेय	अपेय
नूतन	पुरातन	पुष्ट	क्षीण, अपुष्ट
नेक	बद	परार्थ	स्वार्थ
पदोन्नत	पदावनत	प्रकाश	अंधकार
पंडित	मूर्ख	पाठ्य	अपाठ्य
परकीय	स्वकीय	परिश्रम	विश्राम
परमार्थ	स्वार्थ	पुरस्कार	दण्ड, तिरस्कार
पक्ष	विपक्ष	परतंत्र	स्वतंत्र
पुरुष	स्त्री, नारी	पालक	पीड़क, घालक
परूष/कठोर	कोमल	पूर्ववर्ती	परवर्ती
पूर्णता	अपूर्णता, अभाव	प्रधान	गौण
प्रसन्न	विषण्ण	प्रसाद	विषाद
प्रसाराण	संकोचन	बढ़िया	घाटिया
प्रवृति	निवृति	बद	नेक
प्रारभिंक	अतिंम	बंधन	मुक्ति, मोक्ष
प्राचीन	नवीन, अर्वाचीन	बहिंरंग	अन्तरंग
पाश्चात्य	पूर्वीय, पौर्वत्य, पौररत्य	बृहत्	क्षुद्र
प्रत्यक्ष	परोक्ष	बाह्य	आंयन्तर
प्राची	प्रतीची	बलवान	बलहीन
प्रफुल्ल	म्लान	बद्ध	मुक्त
बाढ़	सूखा	भूत	भविष्य
प्रभु	भृत्य	बर्बर	सभ्य
प्रेम	घृणा	भक्ष्य	अभक्ष्य
भौतिक	आध्यात्मिक, अभैतिक	माता	पिता
मेहनती	आलसी	रत	विरत
भूगोल	खगोल	योग	वियोग
भूलोक	द्युलोक	योग्य	अयोग्य
भोगी	योगि	योगि	भोगी
भद्र	अभद्र	यौवन	वार्धक्य/बुढ़ापा
भय	साहस	यश	अपयश
भेद	अभेद	यथार्थ	कल्पित
भला	बुरा	रक्षक	भक्षक
भारी	हल्का	भिखारी	अमीर
राजा	प्रजा, रंक	राजतंत्र	जनतंत्र
मानव	दानव	महात्मा	दुरात्मा
मुख्य	गौण	मूक	वाचाल
मिलन	वियोग, विरह	मान	अपमान
मानवीय	अमानवीय	रागी	विरागी

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

मूल्यवान	मूल्यहीन	लाभ	हानि
मोक्ष	बंधन	लम्बा	चौड़ा
मरना	जीना	मृदुल	कठोर
मसृण	रूक्ष	लौकिक	अलौकिक
मंगल	अमंगल	विधवा	सधवा
मृत	जीवित	लुप्त	व्यक्त
मनुज	दनुज	वाद	प्रतिवाद
मर्त्य	अमर	विवाद	निर्विवाद
मालिक	नौकर	विधि	निषेध
वृद्	बालक	विस्तृत	संक्षिप्त
विरह	मिलन	वक्र	सरल, ऋजु
विशिष्ट	साधारण	व्यष्टि	समष्टि
वीर	कायर	वंद्य	निंद्य
विस्तार	संक्षेप	विश्लेषण	संश्लेषण
विश्वास	अविश्वास	विस्मरण	स्मरण
विजय	पराजय	विमुख	सम्मुख, उन्मुख
वृहत्	लघु	विस्तृत	संक्षिप्त
व्यष्टि	समष्टि	शोषक	शोषित
श्लील	अश्लील	विष	अमृत
विशेष	सामान्य	सज्जन	दुर्जन
वसन्त	पतझर	सर्द	गर्म
विपत्ति	सम्पत्ति	सत्	असत्
विनत	उद्धत, अविनत	सगुण	निर्गुण
सजीव	निर्जीव	सरल	कुटिल, वक्र, कठिन
व्यास	समास	सबल	दुर्बल
व्यर्थ	सार्थक	सफल	विफल, असफल, निष्फल
वृद्धि	ह्रास	सनाथ	अनाथ
वादी	प्रतिवादी	सधवा	विधवा
वैमनस्य	सौमनस्य	सच्चरित्र	दुश्चरित्र
ससीम	असमीम	विरागी	रागी
सहयोगी	प्रतियोगी	सवर्ण	असवर्ण
स्वतंत्रता	परतंत्रता	स्वदेश	विदेश, परदेश
स्वजाति	विजाति	सम्मान	अपमान
सार्थक	निरर्थक	संकोच	निस्संकोच
संयोग	वियोग	संक्षिप्त	विस्तृत
सचेष्ट	निश्चेष्ट	साकार	निराकार
सुकर्म	कुकर्म, दुष्कर्म	सुगन्ध	दुर्गन्ध
सुपात्र	कुपात्र	सुलभ	दुर्लभ
सुगम	दुर्गम	सुख	दुख
सुमार्ग	कुमार्ग	सुंदर	कुरूप, असुन्दर
सुपथ	कुपथ	सुशील	दुश्शील
स्तुति	निन्दा	स्थूल	सूक्ष्म

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

स्मरण	विस्मरण	समष्टि	व्यष्टि
सुयश	कुयश, अपयश	स्वाधीन	पराधीन
संपद्	विपद्	सरस	नीरस
संगत	असंगत	संघटन	विघटन
सशंक	निश्शंक	संश्लिष्ट	विश्लिष्ट
स्थावर	जंगम	सत्कार	तिरस्कार
साक्षर	निरक्षर	सुर	असुर
सापेक्ष	निरपेक्ष	सित	असित
संतोष	असंतोष	सामिष	निरामिष
स्वामी	सेवक	सुधा	गरल, विष, हलाहल
संकल्प	विकल्प	सम्पन्न	विपन्न
सादर	निरादर	संधि	विग्रह/विच्छेद
सत्कर्म	दुष्कर्म	साधु	असाधु
सत्य	असत्य	सुमति	कुमति
स्थिर	चंचल, अस्थिर	संकीर्ण	विस्तीर्ण
साँझ	सवेरा	संयोग	वियोग
सूक्ष्म	स्थूल	सदाशय	दुराशय
सम्बद्ध	असम्बद्ध	सपूत	कपूत
स्वधर्म	विधर्म, परधर्म	स्वप्न	जागृति
संकोच	असंकोच	शुभ	अशुभ
सूना	भरा	शुष्क	तरल
शुक्ल	कृष्ण	शान्ति	क्रान्ति, अशान्ति
श्वेत	श्याम	शाम	सुबह
सुसंगति	कुसंगति	शलील	अश्लील
सभय	निर्भय	शुभ्र	कृष्ण
स्वाधीन	पराधीन	शासक	शासित
शोक	हर्ष	हिंसा	अहिंसा
सदाचारी	व्यभिचारी, कदाचारी	शोषक	पोषक
सुबह	शाम	शयन	जागरण
सुपरिणाम	दुष्परिणाम	हर्ष	विषाद, शोक
सच	झूठ	हस्व	दीर्घ
हँसना	रोना	स्वीकृति	अस्वीकृति
सामान्य	विशिष्ट	हास	रूदन
हार	जीत	स्वकीया	परकीया
सृष्टि	प्रलय, संहार	क्षमा	दण्ड, रोष
क्षणिक	शाश्वत	क्षुद्र	विराट्, विशाल, महान्
सविकार	निर्विकार	श्रीगणेश	इतिश्री
साक्षर	निरक्षर	शृंखला	विशृंखला
शकुन	अपशकुन	श्रद्धा	घृणा, अश्रद्धा
शत्रु	मित्र	श्रव्य	दृश्य
श्रान्त	अश्रान्त	ज्ञात	अज्ञात
श्यामा	गौरी	ज्ञेय	अज्ञेय

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

1. अहल्या एक पतिव्रता नारी थी। रेखांकित शब्द का उचित विलोम विकल्प चयन कीजिए–

(1) ऊढ़ा (2) विधवा (3) कुलटा (4) बन्ध्या

2. 'हलाहल' का विलोम शब्द होगा–

(1) सुधा (2) वृषा (3) विष (4) गरल

3. 'कृत्रिम' के लिए उचित विलोम शब्द लिखिए–

(1) नैसर्गिक (2) कठोर (3) बनावटी (4) नकली

4. 'तामसिक' शब्द का सही विलोम होगा–

(1) कुपित (2) सातव्य (3) राजसिक (4) सात्विक

5. निम्न में से कौनसा विलोम–युग्म सही नहीं है ?

(1) उर्वर – ऊसर (2) आधुनिक – नवीन (3) इष्ट – अनिष्ट (4) आशा – निराशा

6. 'कायर' शब्द का विलोम शब्द छांटिए–

(1) वीर (2) वीरता (3) उत्साही (4) धीर

7. निम्नलिखित में से कौनसा विलोम–युग्म सहीं है ?

(1) प्राचीन – पुरातन (2) अंतरंग – बहिरंग (3) राग – अनुराग (4) विज्ञ – सुविज्ञ

8. 'अनिवार्य' शब्द का सही विलोम शब्द होगा–

(1) ऐच्छिक (2) अपरिहार्य (3) अनावश्यक (4) आवश्यक

9. 'नीरस' का विलोम शब्द है–

(1) विरस (2) सरस (3) रसीला (4) कसैला

10. 'अवतल' शब्द का विपरीतार्थक शब्द छांटिए–

(1) उत्ताल (2) पाताल (3) त्रिताल (4) उत्तल

11. 'जंगम' शब्द का सही विलोम बताइये–

(1) डरावना (2) स्थावर (3) स्थूल (4) स्थिर

12. 'वियोग' का विलोम शब्द है–

(1) संयोग (2) विरह (3) बिछुड़ना (4) अलग होना

13. 'अभद्र' शब्द का विलोम है–

(1) बदमाश (2) अशिष्ट (3) पाखंडी (4) भद्र

14. तामसिक का विलोम शब्द है–

(1) अशिष्ट (2) सात्विक (3) आत्मिक (4) स्वादिष्ट

15. निम्नलिखित में से 'पाश्चात्य' का विलोम है–

(1) परवर्ती (2) प्राच्य (3) पौर्वात्य (4) पूर्ववर्त्ती

16. 'ज्योति' का विलोमार्थी शब्द है–

(1) अन्धकार (2) अंधेरा (3) तम (4) कालिमा

17. 'दाता' का विलोम शब्द है–

(1) त्राता (2) उदार (3) सूम (4) प्रज्ञ

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

18. 'चपल' का विलोम होता है–

(1) महान (2) स्थावर (3) गंभीर (4) अचल

19. 'तेजस्वी' का विलोम है–

(1) मेधावी (2) निस्तेज (3) कुशल (4) कुरूप

20. अभिसरण

(1) व्यतिक्रम (2) अपसरण (3) अपवर्तन (4) अधिसरण

21. अवर

(1) विवर (2) सवद (3) प्रवर (4) सवर

22. अनुलोम

(1) विलोम (2) प्रतिलोम (3) संयोग (4) सुलोम

23. आरोहण

(1) आरोही (2) अवरोही (3) आहरण (4) अवरोहण

24. उन्मूलन

(1) अवमूलन (2) उत्मूलन (3) रोपण (4) नष्ट

25. ऐहिक

(1) परलौकिक (2) सांसारिक (3) पारलौकिक (4) दैहिक

26. औरस

(1) वीरस (2) नीरस (3) जारज (4) सगा

27. कठोर

(1) दयालु (2) नाजुक (3) विनम्र (4) कोमल

28. गुप्त

(1) ज्ञात (2) प्रकट (3) जानना (4) स्पष्ट

29. ज्योत्स्ना

(1) निशा (2) कालिमा (3) तमिस्रा (4) रात

30. झंकृत

(1) असंकृत (2) कंपन (3) हलचल (4) निस्तम्ब

31. तर्क

(1) वितर्क (2) कुतर्क (3) सुतर्क (4) दुस्तर्क

32. दीर्घायु

(1) दीर्घजीवी (2) क्षणभंगुर (3) अल्पायु (4) अल्पजीवी

33. दूषित

(1) साफ (2) खराब (3) निर्मल (4) स्वच्छ

34. नीरुजता

(1) स्वस्थता (2) अस्वस्थता (3) रुग्णता (4) रोगी

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

पर्यायवाची शब्द

- एक शब्द का उसी के समान अर्थ देने वाले अन्य शब्दों को पर्यायवाची शब्द कहते हैं।
  इन्हें समानार्थी शब्द भी कहते हैं।
  जैसे– जल + ज (जन्म लेने वाला)
  जल + द (देने वाला)
  जल + धि (धारण करने वाला)
- पानी के पर्यायवाची के पश्चात् यदि 'ज' (जन्म लेने वाला) आए तो पर्यायवाची 'कमल' का होता है और यदि 'द' (देने वाला) आए तो पर्यायवाची 'बादल' का होता है और यदि 'धि' (धारण करने वाल) आए तो पर्यायवाची 'समुद्र' का होता है।

जैसे– जलज, जलद, जलधि

निशीथ	– अद्धरात्रि का समय
अर्कजा	– यमुना
अधित्यका (ऊपर)	– पर्वत के ऊपर की भूमि
उपत्यका (समीप)	– पर्वत के समीप की/ तलहटी की भूमि
जठराग्नि	– पेट में लगी आग
बडवानल	– समुद्र में लगी आग
दावानल	– जंगल में लगी आग
अन्तरिक्ष	–धरती से आकाश के मध्य का स्थान
यामिनी	– तारों भरी चाँदनी रात।
क्षितिज	–जहां धरती और आकाश मिलते हुए नजर आते हैं।
मार्तंड	– दिन में तेज चमकता सूर्य

कुछ महत्त्वपूर्ण पर्यायवाची शब्द–

कमल– पद्म, पंकज, नीरज, सरोज, जलज, कंज, राजीव, शतदल, अंबुज

बादल– मेघ, धन, जलधर, जलद, वारिद, पयोद, पयोधर, अंबुद, धराधर, वारिवाह, वारिधर

समुद्र– सागर, पयोधि, उदधि, पारावार, नदीश, जलधि, वारिधि, नीरनिधि, अर्णव, जलधाम

पानी– वारि, जल, नीर, तोय, अम्बु, उदक, सलिल पय, मेघपुष्प

आग– अग्नि, अनल, पावक, जातवेद, कृशानु, वैश्वानर, हुताशन

हवा– पवन, समीर, वात, मारूत, अनिल, प्रभंजन, प्रवात, समीकरण, बयार

धरती– भू, भूमि, पृथ्वी, धरणी, वसुंधरा, वसुधा, अचला, धरा, रत्नगर्भा

आकाश– नभ, अंबर, अंतरिक्ष, आसमान, व्योम, गगन, द्यौ

सूर्य– दिनकर, प्रभाकर, दिवाकर, भास्कर, मार्तण्ड, अंशुमाली

चन्द्रमा– चन्द्र, शशि, हिमकर, राकेश, रजनीश, हिमांशु, चन्द्र, मयंक, विद्युत

किरण– ज्योति, प्रभा, रश्मि, दीप्ति, मरीचि

चांदनी– कौमुदी, ज्योत्सना, चंद्रिका, जुन्हाई, जोन्ह

अमृत– सुधा, अमिय, पियूष, सोम, अमी, जीनवनोदक

विष– जहर, हलाहल, कालकूट, माहुर

जंगल– अरण्य, गहन, कान्तार, वन, कानन, विपिन

साँप– सर्प, नाग, विषधर, भुजंग, अहि, उरग, काकोदर, फणीश

हाथी– कुंजर, द्विप, नाग, करी, मतंग, राज, वारण, कूम्भा, हस्ती, गज, मदकल

घोड़ा– धोतक, रविपुत्र, हय, तुरंग, सैंधव, दधिका, सर्ता, अश्व, वाजी

शेर– सिंह, वनराज, शार्दुल, केसरी, केहरी, केशी, पशुराज, मृगराज,

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

हरिण– मृग, कुरंग, सारंग, कृष्णसार

ब्रह्मा– अज, विधि, विधाता, प्रजापति, निर्माता, धाता, चतुरानन, प्रजाधिप

विष्णु– नारायण, केशव, गोविंद, जनार्दन, मुकुंद, विशम्भर

पार्वती– उमा, गिरीजा, गौरी, शिवा, अम्बिका, सती

गणेश– गजानन, गौरीनंदन, गणपति, गणनायक, शंकर सुवन

झंडा– ध्वजा, केतु, पताका, निसान

कर्ण– श्रवण, श्रुतिपट, श्वानेन्द्रिय, कान

सरस्वती– भारती, वागेश्वरी, शारदा, विणापाणी, वाग्देवी, महाश्वेत, वागीश्वरी

राम– रघुपति, राघव, रघुनाथ, सियाराम, रघुनायक

दुर्गा– सिंहवाहिनी, कालिका, अजा, भवानी, चण्डिका, कल्याणी

राक्षस– निशाचर, रजनीचर, दनुज, यातुधान, देवारि, असुर, दैत्य

आँख– अक्षि, नैन, नेत्र, लोचन, दृग, चक्षु, ईक्षण, विलोचन

दिन– दिवस, याम, दिवा, वार, प्रमान, वासर

रात– रात्रि, रैन, रजनी, निशा, यामिनी, तमी, तिशि, त्रियामा, शर्वरी, क्षणदा

फूल– सुमन, कुसुम, मंजरी, प्रसून, पुष्प

भ्रमर– भंवरा, भृंग, मिलिंद, मधुप, मधुकर, चंचरीक, अलि, भौंरा, शिलीमुख

नदी– सरिता, तटिनी, वाहिनी, तंरगिणी, निर्झरिणी, शैलजा, नद, प्रवाहिनी

गंगा– देवनदी, मंदाकनी, भगीरथी, विश्नुपगा, देवपगा, धुवनंदा, सुरसरि

यमुना– जमुना, सूर्यसुता, कृष्णा, अर्कजा, रवितनया, कालिंदी

पर्वत– पहाड़, गिरी, अचल, नग, भूधर, महीधर, शैल, शिखर, अद्री

हिमालय– हिमाचल, तुंग, गिरीराज, धरणीधर, पर्वतराज, नगपति, नगेश, हिमाद्री, नगाधिराज

माता– माँ, मातृ, मातरि, मैया, महतारी, जनयित्री, जन्मदात्री

देवता– सुर, आदित्य, अमर, देव, वसु

पुत्री– आत्मजा, तनुजा, सुता, तनया, लड़की, नन्दिनी, दुहिता, कन्या, बेटी

वृक्ष– पादप, विटप, तरू, गाछ, द्रुम, पेड़

सोना– स्वर्ण, कनक, हिरण्य, कंचन, हाटक, हेम, सुवर्ण।

इंद्र– देवराज, सुरपति, मघवा, पुरंदर, देवेश, शक्र, शतक्रतु, देवेंद्र, अमरपति

कामदेव–मदन, काम, पंचशर, मार, रतिपति, स्मर, मीनकेतु, अनंग, कुसुमशर, प्रद्युम्न, कंदर्प, मनोज

लक्ष्मी–रमा, कमला, विष्णुप्रिया, पद्मा, पद्मासना, सिंधुजा, क्षीरोदतनया, चंचला

पर्यायवाची शब्द

अचल	–	पहाड़, पर्वत, शैली, गिरी, नग, भूधर, आर्द्र, अटल।	(UPPSC 89)
अक्षर	–	आदिवर्ण 'अ', अविनाशी, ब्रह्म, ईश्वर।	
अनी	–	सेना, फौज, कटक, चमू, दल।	
अंधकार	–	अंधेरा, तिमिर, तम, तमिस्त्र, अंधियारा।	(RAS 98, MPPSC 98)
अतिथि	–	मेहमान, आगन्तुक, अभ्यागत, पाहुना।	
अध्यापक	–	शिक्षक, आचार्य, गुरु, प्रवक्ता, उपाध्याय, व्याख्याता।	
अर्जुन	–	पार्थ, भारत, कौन्तेय, सव्यसाची, गाण्डीवधारी, धनंजय, पाण्डव।	
अधर्म	–	पाप, अनाचार, अपकर्म, अन्याय, जुल्म ।	(UPPSC 88)
अन्वेषण	–	खोज, अनुसंधान,गवेषण, जाँच, शोध।	
अनादर	–	तिरस्कार, अपमान, अवहेलना, अवज्ञा, निरादर, बेइज्जती।	
अनाज	–	दाना, धान्य, शस्य, अन्न।	
अमृत	–	सुधाा, सोम, पीयूष, अमिय, अमी।	(RAS 87, 91, MPPSC 97, UPPSC 98)
अभिजात	–	विशिष्ठ, संभ्रान्त, कुलीन, योग्य, श्रेष्ठ।	(UPPSC 89)

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

अरण्य – वन, कानन, जंगल, विपिन, कांतार, अटवी (RAS 85,87)

असुर – दैत्य, दानव, दनुज, राक्षस, यातुधान, निशाचन, रजनीचर, सुरारि तमीचर (UPPSC 87)

अश्व – घोटक, घोड़ा, वाजी, हय, सैंधव, तुरंग । (RAS 2000)

आदि – प्रथम, प्रारम्भिक, पहला, आदिम, शुरू का।

आकाश – व्योम, नभ, गगन, अभ्र, अम्बर, अन्तरिक्ष, आसमान, अनन्त, शून्य, दिव (RAS 87,97 RTS 89, MPPSC 97,99) **आम** – रसाल, अमृतफल, प्रियम्बु, सहकार, आम्र, मधुदूत।

आनन्द – हर्ष, प्रमोद, आमोद, सुख, आह्लाद, प्रसन्नता, उल्लास, मोद, खुशी। (RAS 94)

आयुष्मान – चिरायु, दीर्घायु, चिरंजीव, शतायु, दीर्घजीवी।

इच्छा – अभिलाषा, ईप्सा, चाह, कामना, तमन्ना आकांक्षा, मनोरथ, वांछा, ईहा। (RAS 88,89)

इन्द्र – सुरेश, शचीपति, मघवा, शक्र, पाकाशासन, वासव, पुरन्दर, मेघवाहन, पाकरिपु, देवराज, महेन्द्र, सहस्त्राक्ष, सुरपति (PSI 95)

इन्द्रधनुष – सुरचाप, शक्रचाप, सुरधनु, इन्द्रचाप।

इन्द्राणी – शची, इन्द्रा, इन्द्रवधू, पुलोमजा,

ईश्वर – प्रभु, परमात्मा, स्रष्टा, निरंजन, सच्चिदानन्द, जगदीश, अल्लाह, खुदा, विभु, अच्युत।

उपहास – मजाक, हँसी, परिहास, खिल्ली, मखौल। (MPPSC 99)

उपकार – भलाई, कल्याण, नेकी, हित, साधन, परोपकार।

कपड़ा – पट, बसन, वस्त्र, अम्बर, दुकूल, चीर परिधान।

कमल – नीरज, जलज, तोयज, अम्बुज, पयोज, अम्भोज, अब्ज,पंकज, अरविन्द, पद्य, उत्पल, राजीव, शतदल, कोकनद, इन्दीवर, सरसिज, वारिज, नलिन, सरोज (RAS 86, MPPSC 93)

कनक – धतूरा, सोना, स्वर्ण, कंचन, हाटक, हिरण्य, हेम।

कल्याण – मंगल, शुभ, शिव, क्षेम, श्रेय, उपकार, भला, हित।

किनारा – तट, कूल, पुलिन, तीर, सिरा, छोर। (MPPSC 95,98)

कल्पवृक्ष – कल्पद्रुम, सुरतरू, मंदार, कल्पतरू, देवतरू, पारिजात।

कामदेव – मनोज, मदन, मन्मथ, मयन, कन्दर्प, मार, अनंग, पंचधन्वा, पंचशर, मनसिज, पुष्पधन्वा, स्मर, मनोभव, काम, कुसुमबाण, मकरकेतु, मीनकेतु, रतिपति, विश्वकेतु, आत्मभू, शम्बरारि। (RAS 87,MPPSC95,96)

किरण – कर, अंशु, मयूख, रशिम, मरीचि । (RAS 89)

कुत्ता – कूकूर, श्वान, शव, शूनक, मृगारि, सारमेय।

कृष्ण – कन्हैया, कान्हा, कंसारि, गिरिधर, गोपीवल्लभ, गोपीनाथ, देवमीनन्दन, द्वारिकाधीश, नंदनंदन, नंदलाल, माधव, मोहन मुरलीधर, मधूसूदन, यशेदानन्दन, बंशीधर वासुदेव राधावल्लभ, हषीकेश, मुरारी। (MPPSC 97)

केला – कदली, रंभा, मोचा, कुंजरासरा, गजवसा, भानुफल।

केश – कुंतल, अलक, कच, बाल, चिकुर, मेचक, शिरोरुह

कोयल – कोकिल, पिक, श्यामा, पाली, वनप्रिय।

कौवा – काक, काग, काण, वायस, करटक, पिशुन।

खल – नीच, पाम, कुटिल, दुष्ट, धूर्त, शठ। (RAS 94)

गणेश/गजानन– एकदन्त, गजवदन, विनायक, गणपति, महाकाय, पार्वती, नन्दन, मोदकप्रिय, मोददाता, गणाधिप, गौरीपुत्र, लम्बोदर, विघ्ननाशक । (RAS 87, MPPSC 94)

गंगा – सुरसरित, देननदी, भागीरथी, मंदाकिनी, विष्णुपदी, त्रिपथगा, सुरापगा, जाह्नवी, ध्रुवनन्दा, नदीश्वरी, जटाशंकरी।

गदहा – खर, वैशाखनन्दन, रासभ, गर्दभ, धूसर,।

गाय – धेनु, गौ, गाय, सुरभी, पयस्विनी, दोग्धी, गैया।

गृह – निकेत, गेह, घर, सदन, भवन, आगार, मंदिर, आवास, निलय, मकान, आलय, धाम।

घड़ा – घट, कुम्भ, कलश, कुट, मंदिर– शिखर। (RAS 91)

घोड़ा – तुरंग, अश्व, हय, वाजी, घोटक, शालि।

चतुर – प्रवीण, दक्ष, निपुण, पटु, सयाना, नागर, योग्य, कुशल, विज्ञ, होशियार।

चन्द्र/चाँद – शशि, शशांक, चन्द्रमा, औषधीश, हिमाशु, सुधांशु, हिमकर, सुधाकर,विधु, राकापति, राकेश, निशापति,सारंग, सुधाधर, तारापति, निशाकर, द्विजराज, सोम, कलानिधि, मृगांक इन्दु, मयंक क्षमानाथ।

चोर – दस्यु, रजनीचर, कुंभिल, मोषक, खनक, साहसिक, तस्कर।

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

जन	–	मनुष्य, आदमी, नर, व्यक्ति, मनुज, देहधारी।
जल	–	जीवन, सलिल, नीर, तोय, अम्बु, पानी, वारि, उदक, पय, रस पानीय । (RTS 86, PSI 95)
जीभ	–	रसना, जिह्वा, रसज्ञा, रसला, जबान।
जीव	–	प्राण, जीवन, जान, चैतन्य, प्राणी। (RAS 96)
झण्डा	–	ध्वज, पताका, निसान, ध्वजा, केतन।
झरना	–	उत्स, स्रोत, प्रपात, निर्झर, सोता।
तरु	–	पेड़, वृक्ष, पादप, विटप, द्रुम, रूख, आगम। (RAS 85,88)
तलावार	–	खड्ग, असि, कृपाण, चन्द्रहास, करबाल।
तारा	–	उड्गन, सितारा, नक्षत्र, तारक, धूमकेतु।
द्रव्य	–	वित, सम्पदा, दौलत, विभूति, सम्पत्ति, धन । (RAS 94)
दास	–	अनुचर, नौकर, चाकर, भृत्य, सेवक, किंकर, परिचारक।
दानव	–	असुर, दनुज, राक्षस, दैत्य निशाचर।
दिन	–	वार, दिवस, वासर । (RAS 82,83,2000)
दुःख	–	कष्ट, पीड़ा, क्लेश, व्यथा, संकट, शोक, वेदना, यातना, यंत्रणा, विषाद, उत्पीड़न।
दुर्गा	–	अभया, चामुण्डा, चण्डिका, भवानी, कुमारी, कामक्षा, महागौरी, धात्री, मंगला।
दूध	–	क्षीर, गोरस, पय, दुग्ध। (RAS 94, PSI 95)
देवता	–	अमर, अजर, सुर, देव, निर्जर, विबुध, आदित्य, त्रिदर्श, गीर्वाण। (UPPSCE 89)
धरती	–	धरा, इला, भू, पृथ्वी, भूमि, मही, अवनी, मेदनी, वसुंधरा।
धनुष	–	धनु, चाप, शरासन, कोदंड, कमान, विशिखासन।
नदी	–	सरिता, आपगा, तटनी, निर्झरणी, शैलजा, निम्नगा, स्रोतस्वनी, सिंधुगामिनी।
नरक	–	यमपुर, रौरव, यमालय, यमलोक।
नारी	–	वामा, महिला, रमणी, औरत, वनिता, स्त्री, अबला, कामिनी, भामिनी ललना।
नियति	–	भावी, भाग्य, प्रारब्ध, दैव्य, होनी, प्रकृति, कुदरत।
निशा	–	रजीन, रात, रात्रि, निशि, क्षपा, यामिनी, विभावरी, रैन, निशीपथ, शर्वरी।
नौका	–	तरिणी, तरी, नाव, जलपात्र, जलयान, पतंग, डोंगी, बेड़ा।
पत्नी	–	दारा, भार्या, सहधर्मिणी, गृहिणी, वधू, कलत्र, वल्लभा, प्राणप्रिया, तिय, जोरू, वामा, वामांगी, अर्द्धांगिनी, घरनी।
पति	–	स्वामी, भर्ता भरतार, वल्लभ, बालम, आर्यपुत्र, खसम, प्राणेश,।
पवन	–	हवा, वायु, समीर, वात, बयार, मारूत, अनिल, पवमान नभप्राण, गंधवह
पक्षी	–	द्विज, खग पखेरू, विहग, शाकुनि, अंडज, पतंग विहंग,परिन्दा।
पहाड़/पर्वत	–	शैल, गिरि, भूधर, अचल, महीधर, नग, तुंग, अर्दि, पहाड़ भूमिधर।
पंडित	–	सुधी, विद्वान, विचक्षण, प्राज्ञ, मनीषी, बुध, कोविद, धीर, विज्ञ।
पत्थर	–	पाहन, पाषाण, प्रस्तर, शिला, उपला, अश्म।
प्रशंसा	–	स्तुति, श्लाघा, बड़ाई, सराहना, तारीफ, गुणगान।
पार्वती	–	शिवा, भवानी, गौरी, रूद्राणी, उमा, अम्बिका, दुर्गा, शैलजा, अपर्णा, गिरिजा, सती, आर्या।
पुत्री	–	बेटी, सुता, तनया, आत्मजा, दुहिता, नन्दिनी, तनुजा।
पुत्र	–	आत्मज, सुत, बेटा, तनय, पूत, वत्स।
प्रकाश	–	उजाला, प्रभा, दीप्ति, आलोक, चमक,छवि, द्युति, ज्योति।
पुष्प	–	सुमन, फूल, कुसुम, प्रसून, पुहुप, गुल।
बंदर	–	कपि, वानर, शाखामृग, हरि, मर्कट, कीश।
बाण	–	तीर, नाराच, सर, विशिख, आशुग, शिलीमुख, इषु।
बिजली	–	चपला, चंचला, सौदामनी, विद्युत, दामिनी, बीजुरी, तडित् क्षणप्रभा, चंचला, घनवल्ली।
ब्रह्मा	–	स्वयंभू, विरंचि, चतुरानन, पितामह, लोकेश, हिरण्यगर्भ विधाता, विधि, प्रजाति, कर्तार।
ब्राह्मण	–	भूदेव, भूसुर, द्विज, विप्र, महीदेव, अग्रजन्मा।
वृक्ष	–	तरू, द्रुम, पादप, विटप, अगम, पेड़।
मछली	–	मीन, मत्स्य, झख, जलजीवन, शफरी।
महादेव	–	रूद्र, शंभु, ईश, महेश्वर, पशुपति, शिव, शंकर, चंद्रशेखर, भूपेश, गिरीश, हर, पिनाकी, गंगाधर, गिरिजापति, लीलकंठ, भूतनाथ, कैलाशपति, वामदेव, त्रिलोचन, मदनारि, शितिकंठ।

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

मित्र	–	सहचर, मीत, सखा, दोस्त, यार, साथी, संगी।
मदिरा	–	सुरा, शराब, वारूणी, मद्य, हाला, दारू, कादम्बरी।
मोर	–	मयूर, शिखी सारंग,केकी, नीलकंठ, कलापी।
माता	–	अम्बा, माँ, मातृ, जननी, जन्मदात्री, प्रसूता।
मुर्गा	–	तमचुर, कुक्कुट, अरूणशिखा, उपाकर, ताम्रचूड, ताम्रशिख।
मेघ	–	बादल, धराधर, बलाहक, घन, जलधर, वारिद, जलद, प्रयोद, नीरद, वारिद,अम्बुद, जगजीवन, अभ्र, जीमूत।
मोक्ष	–	कैवल्य, मुक्ति, निर्वाण, परमधाम, अपवर्ग, परमपद।
यम	–	जीवनपति, सूर्यपुत्र, शमन, धर्मराज, अन्तक, दण्डधर, कृतान्त, जीवितेश, श्राद्धदेव।
रमा	–	पद्या, कमला, लक्ष्मी, हरिप्रिया, चंचला, इन्दिरा, समुद्रजा, भार्गवी, सिंधुजा, श्री।
राजा	–	महीप, नृप, भूप, महीपति, भूमिपति, नरेश,नरपति, भूपाल, नरेन्द्र, सम्राट्।
रावण	–	दशानन, दशकंधर, दशकंठ, लंकेश, लंकापति, दशशीश, लंकनाथ।
रात्रि	–	निशा, रात, शर्वरी, रैन, रजनी, यामिनी, विभावरी, क्षणदा, क्षपा, तमी, तमस्विनी।
वन	–	कानन, अटवी, कांतार, अरण्य, जंगल।
विष्णु	–	अच्युत, गरूड़ध्वज, चक्रपाणि, मुकुन्द, विश्वम्भर, दामोदर, हषीकेश, हरि, केशव, माधव, गोविन्द, रमापति, विश्वरूप, चतुर्भुज, पीताम्बर, उपेन्द्र, वनमाली, मधुसूदन।
लहर	–	उर्मि, तरंग, वीचि।
समुन्द्र	–	पारावार, जलधि, सागर, नीरनिधि, सिन्धु, नदीश, पयोधि, रत्नाकर, महाश्वेता, वागीश्वरी, विधात्री, वाचा।
साँप	–	सर्प, अहि, भुंजग, नाग, विषधर, फणी, उरग, पन्नग, सरिसृप।
सोना	–	कंचन, सुवर्ण, हाटक, कनक, हिरण्य, जातरूप, हेम, चामीकर, स्वर्ण।
सूर्य	–	भानु, रवि, मार्तण्ड, दिनकर, छायानाथ, भास्कर, मरीची, प्रभाकार, सविता, पतंग, दिवाकर, अर्क, तरणि, आदित्य, अंशुमाली, दिनमणि, पूषा।
हंस	–	मराल, कलहंस, चक्रांग, सूर्य, मानसौक।
संसार	–	जगत्, लोक, दुनिया, जग, संसृति, विश्व।
हरिण	–	मृग, कुरंग, सारंग, कृष्णसार, चमरी।
हाथ	–	भुजा, प्राणि, कर, हस्त, बाहू
हाथी	–	हस्ती, द्विप, करी, गज, कुंजर, नाग, दंती, मतंग, द्विरद, गयंद, कुंभी।

1. निम्नलिखित में से 'रात' शब्द का पर्यायवाची शब्द है–

(1) भारती (2) दिनेश (3) प्रभाकर (4) निशा

2. निम्नलिखित में से 'किरण' शब्द का पर्यायवाची नहीं है–

(1) रश्मि (2) मरीचि (3) अंशु (4) गीर्वाण

3. 'विरंचि' शब्द किस का पर्यायवाची है ?

(1) **ब्रह्मा** (2) **शिवजी** (3) **नारद** (4) **विष्णु**

4. निम्नलिखित में से 'अब्ज' का अर्थ नहीं है–

(1) शंख (2) बादल (3) कपूर (4) कमल

5. 'सर्प' का पर्यायवाची है–

(1) पन्नग (2) जातरूप (3) केशी (4) शार्दूल

6. इनमें से 'पवन' का पर्यायवाची शब्द नहीं है–

(1) समीर (2) अनल (3) अनिल (4) वात

7. बिजली का पर्यायवाची है–

(1) **इषु** (2) **राव** (3) **केशी** (4) **सौदामिनी**

8. कौनसा शब्द अर्थ की दृष्टि से 'खग' से संबंधित नहीं है ?

(1) तारक (2) विहग (3) **पक्षी** (4) **द्विज**

9. 'कल, केश, गुरु' अनेकार्थक शब्दों के उचित विकल्प को छांटिए–

(1) बाल, मशीन, निशान (2) बीता हुआ दिन, बाल, बड़ा

(3) सुन्दर, विश्व, सेना (4) **कार्य, किरण, बृहस्पति**

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

10. किस समूह के सभी शब्द सही पर्यायवाची हैं ?

(1) सिंधु सुता, वृषभानुजा, वीचि (2) माधव, केशव, पीताम्बर

(3) सहोदर, भ्राता, रण (4) कीनाश, अन्तक, मध्वरि

11. 'इला' शब्द के अनेकार्थक शब्द का उचित विकल्प होगा–

(1) पृथ्वी, वाणी, वहराह (2) चन्द्रमा, पृथ्वी, गाय

(3) पृथ्वी, गाय, सरस्वती (4) सरस्वती, वाणी, अंश

12. 'चन्द्रमा' का सही पर्यायवाची है–

(1) सुरपति (2) विधु (3)पद्माकर (4) मधवा

13. 'पर्वत' का पर्यायवाची शब्द है–

(1) उरग (2) नग (3) खग (4) जग

14. निम्नलिखित में से 'अमृत' का समानार्थक शब्द है–

(1) पयोधर (2) नीर (3)सुधा (4) क्षीर

15. निम्नलिखित में से 'समुद्र' का पर्यायवाची शब्द नहीं है–

(1) अर्णव (2) नदीश (3) जलद (4) उदधि

16. निम्नलिखित शब्दों में 'चपला' का अर्थ नहीं है –

(1) लक्ष्मी *(2) तरंग (3) चंचल स्त्री (4) विद्युत

17. निम्नलिखित शब्दों में से एक शब्द 'शंकर' का पर्यायवाची नहीं है–

(1) वामदेव (2) त्रिलोचन (3) शशधर (4) भूतेश

18. 'पतंग' शब्द किस अर्थ में प्रयुक्त नहीं होता है ?

(1) कनकौआ (2) वादक (3) सूर्य (4) पक्षी

19. निम्नलिखित में से कौनसा शब्द 'बादल' का पर्यायवाची है ?

(1) नीरज (2) नीरव (3) जलद (4) जलज

20. निम्नलिखित में से 'सोना' शब्द का पर्यायवाची शब्द नहीं है–

(1) हाटक (2) हेम (3) हिरण्य (4) तड़ित

21. वामा, कामिनी, रमणी, ललना – ये सब किस शब्द के पर्यायवाची है ?

(1) गंगा (2) भूमि (3) सरिता (4) नारी

22. इनमें एक शब्द ईश्वर का समानार्थी है–

(1) कछार (2) अंश (3) वाण (4) भगवान

23. सुगंध, गौ, बसंत ऋतु शब्द निम्नलिखित में से किसके अर्थ हैं ?

(1) हंस (2) नायिका (3)सुरभि (4) सुवर्ण

24. कलधौत, रूपक, रजत शब्द निम्नलिखित में किसके पर्यायवाची हैं ?

(1) चन्द्रमा (2) चांदी (3)सूर्य (4) स्वर्ण

25. 'गदहा' का पर्यायवाची नहीं है–

(1) धूसर (2) बैशाखनन्दन (3) चक्रीवान (4) जाह्नवी

26. इनमें 'पूजा' शब्द का समानार्थी शब्द नहीं है–

(1) अर्चना (2) आराधना (3) विकास (4) वंदना

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

निर्देशः निम्नलिखित प्रत्येक प्रश्न में पर्यायवाची स्वरूप के चार शब्द दिए गए हैं। इनमें से एक शब्द पर्याय नहीं है। उसको चिह्नित करें।

27. हवा

(1) सलिल (2) वायु (3) अनिल (4) समीर

28. दाँत

(1) दाड़िम (2) दन्त (3) दशन (4) रदन

29. अमृत

(1) अमिय (2) सुधा (3) पीयूष (4) रसाल

30. कमल

(1) वारिद (2) पंकज (3) सरसिज (4) अम्बुज

31. सेना

(1) अनि (2) कटक (3) चमू (4) हाटक

32. कलाधर

(1) सुधांशु (2) कलाकार (3) चन्द्रमा (4) निशापति

33. आँख

(1) चक्षु (2) लोचन (3) अक्षि (4) दृष्टि

34. घोड़ा

(1) अश्व (2) घोटक (3) हय (4) कटक

35. हाथी

(1) द्विप (2) द्विरद (3) तरणि (4) सिंधुर

36. तीर

(1) तार (2) बाण (3) शर (4) नाराच

37. दिन

(1) दिवस (2) दीन (3) वार (4) बासर

27. अभिज्ञ किसका पर्यायवाची है

(1) जानकार (2) भिक्षुक (3) अभिनेता (4) नावाकिफ

28. कार्मुक किसका पर्यायवाची है

(1) बाण (2) धनुष (3) पक्षी (4) निन्दा

29. जातरूप किसका पर्यायवाची है

(1) किरण (2) चाँदी (3) सुवर्ण (4) ललित

30. हाटक किसका पर्यायवाची है

(1) पुत्र (2) मृत्यु (3) सोना (4) घोड़ा

31. मृगांक किसका पर्यायवाची है

(1) लोचन (2) मृग (3) सुधाकर (4) कलोल

32. शिलीमुख किसका पर्यायवाची है

(1) विशिख (2) साधु (3) गंगोत्री (4) त्रिलोचन

33. तुरंग किसका पर्यायवाची है

(1) लहर (2) घोटक (3) आमोद (4) नीर

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

वाक्यांश के लिए एक शब्द

अनेक शब्द / वाक्य खण्ड / वाक्यांश		एक शब्द
जिसका खण्डन न किया जा सके	–	अखण्डनीय
जिसके आने की तिथि (तारीख) मालूम नहीं हो	–	अतिथि
जिसके पास देखा न जा सके	–	अपारदर्शक
जिसका कोई नाथ न हो	–	अनाथ
जिसने पहले जन्म लिया हो (बड़ा भाई)	–	अग्रज
जिसे इन्द्रियों द्वारा न जाना जा सके	–	अगोचर
जिसका चिन्तन नही किया जा सके	–	अचिन्त्य
जिसका कोई शत्रु नही जन्मा हो	–	अजातशत्रु
धरती और आकाश (स्वर्ग) के बीच का स्थान	–	अंतरक्षि
जो सबके आगे रहता हो	–	अग्रणी
जिसका जन्म पीछे हुआ हो	–	अनुज
जिसके हाथ में वीणा है	–	वीणापाणि (सरस्वती)
जिसके हाथ में शूल है	–	शूलपणि (शिव)
जिसके चार भुजाएँ है।	–	चतुर्भुज
जिसके दस आनन है।	–	दशानन (रावण)
जिसके हाथ में चक्र हो	–	चक्रपाणि (विष्णु)
जिसके शेखर पर चन्द्र है।	–	चन्द्रशेखर (शिव)
जिसके समान (बराबर) दूसरा नहीं है।	–	अद्वितीय
जिसके पार देखा जा सके	–	पारदर्शक
जिसके हाथ में व्रज हो	–	वज्रपाणि
जिसके ह्रदय में ममता नहीं है जो ममत्व से रहित हो	–	निर्मम
जानने की इच्छा	–	जिज्ञासा
जिसकी ग्रीवा सुन्दर हो	–	सुग्रीव
जो भू को धारण करता है	–	भूधर
जिसके दो पैर हैं	–	द्विपद
जिसके चार पैर हैं	–	चतुष्पद
सर्वशक्ति वाला	–	सर्वशक्तिमान
बीता हुआ	–	अतीत
जिसको भय नहीं है।	–	निर्भीक, निर्भय
जिसको ईश्वर में विश्वास नहीं है।	–	नास्तिक
जिसको ईश्वर में विश्वास है	–	आस्तिक
सिर पर धारण करने योग्य	–	शिरोधार्य
दो बार जन्म लेने वाला	–	द्विज
जिसका जन्म अंत्य (ओछी) जाति में हुआ	–	अंत्यज
जो अपने स्थान से अलग न किया जा सके	–	अच्युत
जिसका पति जीवित है	–	सधवा
जिसका पति (धव) मर गया है	–	विधवा
जो अपनी बात से टले नहीं	–	अटल
जो धन को व्यर्थ ही खर्च करता है	–	अपव्ययी
जिसका अनुभव किया गया हो	–	अनुभूत
जिसका लांघना कठिन है	–	दुर्लंध्य
जिसका निवारण नहीं किया जा सके	–	अनिवार्य
साहित्य रचना से सम्बद्ध	–	साहित्यिक
जिसकी उपमा न हो	–	अनुपम

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

विशेष रूप से ख्यात	–	विख्यात
अनुचित बात के लिए आग्रह	–	दुराग्रह
जो कहा न जा सके	–	अकथनीय
जिसकी चिन्ता नहीं हो सकती	–	अचिन्तनीय
यश वाला	–	यशस्वी
जिसने बहुत कुछ सुना और देखा है	–	बहुदर्शी
विश्व का पर्यटन करने वाला	–	विश्वपर्यटन
जो असत्य न बोले	–	अमिथ्यावादी
जिसमें पाप नहीं हो	–	निष्पाप
जो सब कुछ जानता है।	–	सर्वज्ञ
जो कम जानता है	–	अल्पज्ञ
जो बहुत जानता है	–	बहुज्ञ
जो कुछ नहीं जानता है	–	अज्ञ
जो आगे की बात सोचता है	–	अग्रसोची
भूतों का ईश	–	भूतेश
जो नया आया हुआ है	–	नवागन्तुक
जो पृथ्वी के भीतर(गर्भ) का हाल जानता हो	–	भूगर्भवेता
स्वेद से उत्पन्न होने वाला	–	स्वेदज
जो किए गए उपकारों को मानता है, याद रखता हो	–	कृतज्ञ
नहीं मरने वाला	–	अमर
विष्णु का उपासक	–	वैष्णव
जो इन्द्रियों के ज्ञान के बाहर है	–	इन्द्रियातीत
शक्ति का उपासक	–	शाक्त
शिव का उपासक	–	शैव
जो अच्छे कुल में उत्पन्न हुआ है	–	कुलीन
जो सब में व्याप्त है	–	सर्वव्यापी
जो किसी पर अभियोग लगाए	–	अभियोगी
जो शोक करने योग्य नहीं है	–	अशोक्य
सब कुछ खाने वाला	–	सर्वभक्षी
जो किसी की ओर से है	–	प्रतिनिधि
जो तीनों कालों को देखता है/भूत, भविष्य, वर्तमान को देखने वाला है।	–	त्रिकालदर्शी
गिरा हुआ	–	पतित
जो बहुत और व्यर्थ बोलता है।	–	वाचाल
इन्द्रियों को जीतने वाला	–	जितेन्द्रिय
जो तीनों कालों को जानता है	–	त्रिकालज्ञ
जिसे बुलाया ना गया हो	–	अनाहूत
जो स्त्री के वशीभूत हो	–	स्त्रैण
जो युद्ध में स्थिर रहता हो	–	युधिष्ठिर
जो कर्तव्य से च्युत हो गया	–	कर्तव्यच्युत
जो क्षमा पाने लायक है	–	क्षम्य
जो सबके मन की बात जानता हो	–	अन्तर्यामी
जो मृत्यु के समीप हो	–	आसन्नमृत्यु
जो (बात) वर्णन के बाहर है।	–	वर्णनातीत
जो स्त्री सूर्य भी न देख सके	–	असूर्यपश्यमा
जो अत्यन्त कष्ट से निवारण किया जा सके	–	दुर्निवार
जो विदेश में प्रवास करने वाला हो	–	प्रवासी

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

जो देखा नहीं जा सके	–	अदृश्य
जो दिन में एक बार भोजन करता है	–	एकाहारी
जो मृत्यु के समीप हो	–	मुमूर्षु
जो पहले न हुआ हो	–	अभूतपूर्व
जो वचन से परे हो	–	वचनातीत
जो कहा गया	–	कथित
आगे होने वाला	–	भावी
जो सरों में जनमता है	–	सरसिज
जो पीछे–पीछे चलने वाला है	–	अनुगामी
जो पूर्व में था पर अभी नही है	–	भूतपूर्व
किसी बात को बढ़ा–चढ़ा कर कहना	–	अतिशयोक्ति, अत्युक्ति
जो नहीं हो सकता	–	असम्भव
जो मांस (आमिष) नहीं खाता हो	–	निरामिष
जो देने योग्य है	–	देय
जो पढ़ना– लिखना (अक्षर) जानता है	–	साक्षर
जो स्वयं उत्पन्न हुआ है	–	स्वयंभू
जो पहरा देता हो	–	प्रहरी
जो विश्व का हित चाहता हो	–	विश्वहितैषी
जो अनुग्रह(कृपा) से युक्त हो	–	अनुगृहीत
बुरा आग्रह/अनुचित बात के लिए आग्रह करना	–	दुराग्रह
जो आग्रह सत्य हो	–	सत्याग्रह
जो हमेशा रहने वाला हो	–	शाश्वत
जो अपनी ही भलाई चाहता हो	–	स्वार्थी
जो बात बार–बार की जाए	–	पुररुक्ति
जो बिल्कुल बहरा (वधिर) है	–	वज्रवधिर
जो कम बोलने वाला है	–	अल्पभाषी/मितभाषी
जो मुकदमा दायर करता है	–	वादी, मुद्दई
जो सैनिक घोड़े (अश्वर) पर सवार है	–	अश्वारोही
पथ प्रदर्शन करने वाला	–	पथ प्रदर्शक
आशा से अधिक	–	आशातीत
जो संगीत जानता है	–	संगीतज्ञ
जो कला जानता है	–	कलाविद्, कलाकार
जो देखने में प्रिय लगता है	–	प्रियदर्शी
जिसने मृत्यु को जीत लिया है	–	मृत्य¥ञय
लौट कर आया हुआ	–	प्रत्यागत
जो खुले हाथ देता है	–	मुक्तहस्त
जो बराबर तलवार हाथ में लिए होता हैं	–	खड्गहस्त
जो जन्म से अंधा हो	–	जन्मांध
पर्वत के नीचे की तलहटी की भूमि	–	उपत्यका
किसानों में भूमिकर लेने वाला सरकारी विभाग	–	राजस्व विभाग
कंटक से भरा हुआ (आर्कीण)	–	कंटकाकीर्ण
पुष्प का कीट	–	पुष्पकीट
जो पोत (जहाज) युद्ध का है।	–	युद्धपोत
जो चक्र धारण करता है	–	चक्रधर
जो रथ पर सवार हो	–	रथी
जो नष्ट होने वाला हो	–	नश्वर
जो बहुत कठिनाई से मिलता है	–	दुर्लभ, दुष्प्राप्य

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

जो चिरकाल तक ठहरे	–	चिरस्थायी
जिसने अपना ऋण पूरा चुका दिया हो	–	उऋण
परलोक का	–	पारलौकिक
आँखो के सामने	–	प्रत्यक्ष
आँखों से परे	–	परोक्ष
अपने परिवार के साथ	–	सपरिवार
जो स्वयं भोजन बनाकर खाता हो	–	स्वयंपाकी
जो स्त्री कविता रचती है	–	कवयित्री
जो पुरुष कविता रचता हो	–	कवि
जो कष्ट सहन कर सके	–	कष्टसहिष्णु
जो शत्रु की हत्या करता हो	–	शत्रुघ्न
जो मांस का आहार करता है	–	मांसाहारी
जो शाक का आहार करता हो	–	शाकाहारी
जो फल आहार करता हो	–	फलाहारी
जो पिता की हत्या कर चुका	–	पितृहंता
जो माता की हत्या कर चुका	–	मातृहंता
जो अपनी हत्या करता हो	–	आत्मघाती
निशा में विचरण करने वाला	–	निशाचर
जो उद्धार करता है	–	उद्धारक
जो नभ में चलता है	–	नभचर, खेचर
जो विज्ञान जानता है	–	वैज्ञानिक
हत्या करने वाला	–	हत्यारा
जो द्वार की रक्षा (पालन)करता है	–	द्वारपाल
जो प्रिय वचन बोलता है	–	प्रियवादी
जो कोई वस्तु वहन करता है	–	वाहक
बिना वेतन के	–	अवैतनिक
बिना अंकुश का	–	निरंकुश
जो व्याकरण जानता है	–	वैयाकरण
बेचने वाला	–	विक्रेता
हृदय को फाड़ने (विदारण करने) वाला(दृश्य)	–	हृदय विदारक
झूठ बोलने वाला	–	झूठा
जो समान वय (उम्र) वाले (लोग) हो	–	समवयस्क
पहले–पहल मत को चलाने (प्रवर्तन करने) वाला	–	आदि प्रवर्तक
बहुत सी भाषाओं को बोलने वाला	–	बहुभाषाभाषी
प्राण देने वाली दवा	–	प्राणदा
धन देने वाला (व्यक्ति)	–	धनद, कुबेर
आकाश को चूमने वाला	–	आकाशचुम्बी / गगनचुम्बी
अपनी इच्छा से दूसरों की सेवा करने वाला	–	स्वयंसेवक
जानने की इच्छा रखने वाला	–	जिज्ञासु
जानने की इच्छा	–	जिज्ञासा
रोंगटे खड़े करने वाला	–	लोमहर्षक
वे बाते जो पुस्तक के आंरम्भ में लिखी कही जाए	–	भूमिका , प्राक्क्थन
(वह पुरुष)जिसकी पत्नी साथ नहीं है	–	विपत्नीक
(वह पुरुष)जिसकी पत्नी साथ है	–	सपत्नीक
(वह स्त्री) जिसको पति छोड़ दे	–	परित्यक्ता
जिसे खरीद लिया गया हो	–	क्रीत
कम खर्च करने वाला	–	मितव्ययी

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

जो लोक में सम्भव न हो	–	अलौकिक
वह जो पृथ्वी को धारण करता हो	–	भूधर
(वह दृश्य) जो मन को हर ले	–	मनोहर
सिर से पैर तक	–	आपाद मस्तक
शक्ति के अनुसार	–	यथाशक्ति
मन, वचन और कर्म से	–	मनसा–वाचा–कर्मणा
न बहुत ठंडा (शीत) न बहुत गर्म (उष्ण)	–	समशीतोष्ण
पीछे–पीछे चलने (गनम करने) वाला	–	अनुगामी
जिसने प्रतिष्ठा प्राप्त की हो	–	लब्धप्रतिष्ठ
सबसे प्रिय	–	प्रियतम
पिता से प्राप्त की हुई सम्पत्ति	–	पैतृक सम्पत्ति
क्षण भर में नष्ट (भग्न) होने वाला	–	क्षणभंगुर
दशरथ का पुत्र	–	दशरथि
कुन्ती का पुत्र	–	कौन्तेय
गंगा का पुत्र	–	गांगेय
जिस पर विश्वास किया गया है	–	विश्वस्त
महल के भीतर का भाग	–	अन्तःपुर
पंडितों मे भी पंडित	–	पंडितराज
वचन द्वारा जो कहा नहीं जा सके	–	अनिर्वचनीय
जिस समय बड़ी मुश्किल से भिक्षा मिलती है	–	दुर्भिक्ष
ग्राम का निवासी	–	ग्रामीण
नगर का निवासी	–	नागरिक
जो छाती (उर)के बल चलता है	–	उरग
जो याचना करने वाला है	–	याचक
जानुओं तक जिसकी बाहुएँ है	–	आजानुबाहु
जो देखने योग्य है	–	दर्शनीय, द्रष्टव्य
जो पूछने योग्य है	–	प्रष्टव्य
जो करने योग्य है	–	करणीय, कर्तव्य
जो पूजने योग्य है	–	पूजनीय, पूज्य
जो सुनने योग्य है	–	श्रवणीय, श्रव्य
बहुत ही कठोर और बड़ा आघात	–	वज्राघ्रात
विधि (कानून) द्वारा प्रदत्त (प्राप्त)	–	विधिप्रदत्त
जो केवल दूसरों के दोषों को ही खोजता है	–	छिद्रान्वेषी
संध्या और रात्रि के बीच का समय	–	प्रदोष
जिसे नहीं जीता जा सके	–	अजेय
खाने योग्य	–	खाद्य
नहीं खाने योग्य	–	अखाद्य
विश्वास के योग्य	–	विश्वसनीय
जो अनुकरण करने योग्य हो	–	अनुकरणीय
जिस पर चिह्न लगाया गया हो	–	चिह्नित
आदि से अन्त तक	–	आद्योपान्त
जंगल में लगी आग	–	दावानल
जठर (पेट) की आग	–	जठरानल
समुद्र की आग	–	बड़वानल
बिना आयास (परिश्रम) के	–	अनायास
जिस पर मुकदमा दायर किया जाता है।	–	प्रतिवादी
तुरंत का जन्मा हुआ	–	नवजात

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

रात और संध्या की बीच की वेला	–	गोधूलि
जो सबसे आगे गिनाने योग्य है	–	अग्रगण्य
जहाँ तक हो सके	–	यथासाध्य
वृष्टि का अभाव	–	अनावृष्टि
अत्याधिक वृष्टि	–	अतिवृष्टि
उपकार के प्रति किया गया उपकार	–	प्रत्युपकार
पुत्र की वधू	–	पुत्रवधू
पुत्र का पुत्र	–	पौत्र
पुत्र का पौत्र	–	प्रपौत्र
दिन पर दिन	–	दिनानुदिन
एक–एक अक्षर	–	अक्षरशः
वह मार्ग जो चलने में कठिनाई पैदा करे	–	दुर्गम
जो कठिनाइयों से जाना जा सके	–	दुर्ज्ञेय
सौ वस्तुओं का संग्रह या समूह	–	शतक/सैकड़ा
जहाँ खाना सदा मुफ्त में बंटता है	–	सदाव्रत
जो पुस्तकों की आलोचना या समीक्षा करता है	–	आलोचक, समीक्षक
जो व्याख्या करता है	–	व्याख्याता
बिजली की तरह तीव्र वेग	–	विद्युद्वेग
अनिश्चित वृत्ति (जीविका)	–	आकाशवृत्ति
मन की वृत्ति (अवस्था)	–	मनोवृत्ति
जिसका मन किसी अन्य (दूसरी) ओर हो	–	अन्यमनस्क
क्षुधा से आतुर	–	क्षुधातुर
जिसका हृदय भग्न हो	–	भग्नहृदय
जो पांचाल देश की है	–	पांचाली
द्रुपद की पुत्री	–	द्रौपदी
किसी के पास रखी हुई दूसरे की वस्तु	–	धरोहर, थाती, अमानत
जो यान (सवारी) जल में चलता है	–	जलयान
जो पुरुष लोहे की तरह बलिष्ठ है	–	लौहपुरुष
युग का निर्माण करने वाला	–	युगनिर्माता
यात्रा करने वाला	–	यात्री
संकटों से घिरा हुआ	–	संकटापन्न
जहाँ लोगों को मिलन हो	–	सम्मेलन
जहाँ नदियों का मिलन हो	–	संगम
ध्यान करने योग्य	–	ध्येय
जो पर्दे में रहे	–	पर्दानशी
जो किसी विषय या दिशा का निर्देशन करता है	–	निर्देशक, दिग्दर्शक
पुरुषों में सबसे उत्तम	–	पुरुषोत्तम, नरश्रेष्ठ
सुख देने वाला	–	सुखद
शयन का आगार (कमरा)	–	शयनागार
जिसका उदर लम्बा हो	–	लम्बोदर
जिन्दा रहने की इच्छा	–	जिजीविषा
द्रुत गमन करने वाला	–	द्रुतगामी
प्रकृति सम्बन्धी	–	प्राकृतिक
जिसका मूल नहीं है	–	निर्मूल
जो स्मरण रखने योग्य है	–	स्मरणीय
सुन्दर हृदय वाला	–	सुहृद
जो मोक्ष चाहता है/मोक्ष की इच्छा रखने वाला	–	मुमुक्षु

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

जिसकी मति प्रत्युत्पन्न (झट सोचने वाली) है	–	प्रत्युत्पन्नमति
वह जिसकी दृष्टि दूर तक जाय/आगे की बात सोच लने वाला	–	दूरदर्शी, दूरंदेश, अग्रशोची
जो सबको समान भाव से देखे	–	समदर्शी
वह मनुष्य जिसकी स्त्री मर गयी है	–	विधुर
एक ही समय में वर्तमान	–	समसामयिक
वह जिसकी प्रतिज्ञा दृढ़ हो	–	दृढ़प्रतिज्ञ
जिसने चित किसी विषय में दिया (लगाया) है	–	दत्तचित
जो कम बोलने वाला है	–	मितभाषी
जिसकी बाहुएँ दीर्घ हैं	–	दीर्घबाहु
जिसका दमन कठिन है	–	दुर्दम्य, दुर्दान्त, दुर्धर्ष
जिसका तेज निकल गया है	–	निस्तेज
जिसकी प्रभा विद्युत की तरह हो	–	विद्युत्प्रभ
जो भेदा या तोड़ा न जा सके	–	अभेद्य
जो कठिनाई से तोड़ा जा सके	–	दुर्भेद्य
जिसकी आशा न की गई हो	–	अप्रत्याशित
जिसकी प्रयोजन सिद्ध हो चुका है	–	कृतकार्य, कृतकृत्य, कृतार्थ
जो घास खोद कर जीवन निर्वाह करता हो	–	घसियारा
जो नापा न जा सके	–	अपरिमेय, अपरिमित
जो प्रमेय (प्रमाण से सिद्ध) न हो	–	अप्रमेय
जो सत्व, रज और तम – तीनों गुणों से परे हो	–	त्रिगुणातीत
जो इच्छा के अधीन हो	–	इच्छाधीन, ऐच्छिक
जो दूसरे के स्थान पर अस्थायी रूप से काम करे	–	स्थानापन्न
जो पीने योग्य हो	–	पेय
जो बात पूर्व काल से लोगो में कह–सुन कर प्रचलित हो	–	जनश्रुति/किंवदन्ती
एक स्थान से दूसरे स्थान को हटाया हुआ	–	स्थानान्तरित
जीतने की इच्छा	–	जिगीषा
तैरने की इच्छा	–	तितीर्षा
देखने की इच्छा	–	दिदृक्षा
खाने की इच्छा	–	बुभुक्षा
आत्मा से सम्बन्ध रखने वाला	–	अध्यात्म
मृत्यु तक	–	आमरण
जीवन भर या पर्यन्त	–	आजीवन
जन्म भर	–	आजन्म
जिसके सिर पर चन्द्रकला हो	–	चन्द्रचूड़/चन्द्रशेखर
कष्ट से होने वाला	–	कष्टसाध्य
बिना पलक गिराए	–	निर्निमेष, अपलक, एकटक
किसी काम में दूसरे से बढ़ने की इच्छा या उद्योग	–	स्पर्द्धा
अन्य से सम्बन्ध न रखने वाला	–	अनन्य
जो सब में एक सा पाया जाए	–	सर्वसाधारण, सर्वसामान्य
क्रम के अनुसार	–	यथाक्रम
जो बायें हाथ से तीर चलाता हो	–	सव्यसाची
मेघ की तरह गरजने वाला	–	मेघनाद
जिस स्त्री की कोई संतान न हो	–	बंध्या
जिसका ज्ञान इन्द्रियों के द्वारा न हो	–	अगोचर, अतीन्द्रिय
गुरु के समीप रहने वाला विद्यार्थी	–	अंतेवासी
एक उदर से जन्म लेने वाला	–	सहोदर
जो विधि (कानून) के विरूद्ध हो	–	अवैध/ गैरकानूनी

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

1. 'किसी के पास रखी हुई दूसरे की वस्तु' वाक्यांश के लिए शब्द होगा–

(1) ध्रुव (2) धरोहर (3) धरणी (4) धीवर

2. 'किसी टूटी–फूटी इमारत या बस्ती का बचा हुआ अंश' वाक्यांश के लिए सार्थक शब्द है–

(1) भग्न (2) खंडित (3) खंडिताकार (4) भग्नावशेष

3. 'मिताहारी' शब्द के लिए वाक्यांश छांटिएँ–

(1) कम खर्च करने वाला (2) कंजूसी बरतने वाला

(3) उपवास करने वाला (4) कम भोजन करने वाला

4. 'जो कुछ न जानता हो' के लिए एक शब्द है–

(1) अज्ञेय (2) अविज्ञानी (3) अल्पज्ञ (4) अज्ञ

5. 'किसी बात के मर्म को जानने वाला' वाक्यांश के लिए सही शब्द है–

(1) मर्मस्पर्शी (2) मर्मज्ञानी (3) मार्मिक (4) मर्मज्ञ

6. 'युद्ध की इच्छा रखने वाला' वाक्यांश के लिए एक शब्द है–

(1) जिज्ञासु (2) उत्सुक (3) **पिपासु** (4) **युयुत्सु**

7. 'प्रागैतिहासिक' शब्द निम्न में से किस वाक्यांश के लिए प्रयुक्त हुआ है ?

(1) जिस इतिहास के प्रमाण हो (2) अति प्राचीन इतिहास

(3) लिपिबद्ध इतिहास (4) ज्ञात इतिहास से पूर्व का समय

8. 'जिसके बराबर दूसरा न हो' वाक्यांश के लिए एक शब्द का चयन कीजिए–

(1) अतीन्द्रिय (2) अद्वितीय (3) अनिर्वचनीय (4) अजेय

9. रेखांकित वाक्यांश के लिए उचित शब्द चुनिए–

<u>आंखों के सामने</u> घटित घटना पर विश्वास तो करना पड़ेगा।

(1) **प्रत्येक** (2) **परोक्ष** (3) **प्रत्यक्ष** (4) **प्रारूपतः**

10. 'जो शत्रुओं को मार डालता है' वाक्यांश के लिए एक शब्द बताइये–

(1) निर्दयी (2) शत्रुघ्न (3) नश्वर (4) जन्मांध

11. 'जिन्दा रहने की इच्छा' वाक्यांश के लिए एक शब्द है–

(1) जिजीविषा (2) जिघत्सा (3) जिगीषा (4) जिज्ञासा

12. 'तटस्थ' शब्द से संबंधित वाक्यांश है–

(1) जो किनारे से सटे हुए हो। (2) विवाद या गुटबाजी से अलग रहने वाला।

(3) तट पर रहने वाला। (4) तट की रक्षा करने वाला।

13. 'कम या नपा–तुला खर्च करने वाला' वाक्यांश के लिए सार्थक शब्द है–

(1) मिति (2) मितव्ययी (3) अल्पखर्ची (4) न्यूनी

14. 'आवश्यकता से अधिक धनसम्पत्ति एकत्र न करना' वाक्यांश के लिए सार्थक शब्द है–

(1) अस्तेय (2) अपरिग्रह (3) कृपणता (4) सदाचार

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

तत्सम्–तद्भव (स्रोत की दृष्टि से)

तत्सम्– तत्सम शब्द 'तत् + सम' के योग से बना है, जिसका शाब्दिक अर्थ है 'उसके समान' अर्थात् जो शब्द संस्कृत भाषा से ज्यों के त्यों हिंदी भाषा में ग्रहण किए गए, उन्हें तत्सम शब्द कहते हैं।

हिंदी भाषा का विकास क्रम– संस्कृत – पालि – प्राकृत – अपभ्रंश – हिंदी

तत्सम– तत्सम शब्दों में निम्नलिखित वर्णों की प्रधानता होती है– ऋ, क्ष, त्र, ज्ञ, श्र, ष (ष्) ण, य (केवल शब्द के शुरू में), र (केवल मात्रा के रूप में)

तत्सम	**तद्भव**
गोधूम	गेहूँ
गोमय	गोबर
पिपीलिका	चिंटी
श्मश्रु	मूंछ
श्वश्रू	सास
घृत	घी
गृह	घर
अक्षर	अच्छर/आखर
क्षेत्र	खेत
शाप	श्राप
काष्ठ	काठ
उष्ट्र	ऊँट
यव	जव/जौ
यूथ	जूथ/जत्था
कार्य	काज/कारज
प्रस्तर	पत्थर

(ड) अनुकरण वाचक – वे शब्द जो किसी पदार्थ या वस्तु की यथार्थ या कल्पित ध्वनी के आधार पर बने हैं, उन्हें अनुकरणवाचक शब्द कहते है। जैसे– खटखटाना, दुरदुराना, ठसक, फडफड़ाना, फुसफुसाना, लड़खड़ाना, हड़बड़ाना आदि क्रियाएँ तथा पटाका, सिटकनी आदि संज्ञाएँ अनुकरणवाचक ही है। कुछ शब्दा किसी चलते – फिरते शब्द के अनुकरण पर भी बनते है। जैसे– धूम–धड़ाका, खट–पट, भीड़–भाड़ आदि। कई बार निरर्थक शब्दों का प्रयोग भी होता है। जैसे – रोटी–ओटी, पैसा–वैस आदि यहाँ 'ओटी' और 'वैसा' निरर्थक शब्द है।

(क) तत्सकम – तद्भव शब्द

वे शब्द जो संस्कृत के शब्द की तरह प्रयुक्त होते है, उन्हें 'तत्सम' तथा जो उससे (संस्कृत) उत्पन्न या विकसित हैं, उन्हें **'तद्भव'** कहते है–

तत्सम	**तद्भव**	**तत्सम**	**तद्भव**
अंधकार	अंधेरा	आश्चर्य	अचरज
अर्क	आक	आमलक	आँवला
अग्नि	आग (RAS 85)	आम्रचूर्ण	अमचूर
अक्षि	आँख	आम्र	आम
अकार्य	अकाज	आश्रम	आसरा
अंगरक्षक	अँगरख	आश्विन	आसोज
अक्षर	अच्छर, आखर	आखेट	अहेर
अद्य	आज	आदित्यावर	इतवार
अक्षत	अच्छत (RAS 94)	आभीर	अहीर
अज्ञान	अजान	इक्षु	ईख
अज्ञानी	अनजान	इष्टिका	ईंट
अट्टालिका	अटारी	उलूक	उल्लू
अन्यत्र	अनत	उज्जवल	उजला
अनार्य	अनाड़ी	उत्सव	उछाह
		उलूखल	ऊखल, ओखल
अमूल्य	अमोल	उद्ववर्तन	उबटन

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

अक्षय (तृतीया)	आखा(तीज)	उष्ट्र	ऊँट
अमृत	अमिय	एला	इलायची
अमावस्या	अमावस	ऋक्ष	रीछ
अग्रवर्ती	अगाड़ी	ओष्ठ	ओठ
अंगुष्ट	अंगूठा	कंटक	काँटा
अशीति	अस्सी	कच्छप	कछुआ, कछुवा
अष्टादश	अठारह (RAS 94)	कटुक	कड़वा
अश्रु	आंसू	कर्तन	कतरन
अम्लिका	इमली	कंदुक	गेंद
अष्ट	आठ	कर्पूर	कपूर
अर्द्ध	आधा	कपर्दिका	कौड़ी
कर्तव्य	करतब	गायक	गवैया (RAS 98)
कज्जल	काजल	ग्राम	गाँव, गाम
कर्ण	कान (RAS 84)	गुहा	गुफा
कर्म	काम	गृह	घर
कदली	केला	गृहणी	घरनी
कर्तरी	कैंची	गृद्ध	गिद्ध, गीध
कास	खाँसी	गो	गाय
काक	कौआ	गोमय	गोबर
काष्ठ	काठ (RAS 84,91)	गोपालक	गोपाल, ग्वाला
कार्य	काज, कारज, (RAS 87)	गोधूम	गेहूँ
काण	काना	गोस्वामी	गुसाई
कार्तिक	कातिक, कातिग	घट	घड़ा
कुमार	कुँवर, कुंआर	घटिका	घड़ी
किंचित्	कुछ	घृत	घी (RAS 89)
कुक्कुर	कूकरा, कुत्ता	घृणा	घिन
कुंभकार	कुम्हार	चंद्र	चाँद
कूप	कूआ	चंद्रिका	चाँदनी (RAS 89)
कुष्ठ	कोढ़	चक्र	चाक
कुपुत्र	कपूत (RAS 88)	चतुर्थ	चौथा (RAS 89)
कुक्षि	कोख	चतुष्कोण	चौकोर
कृष्ण	कान्ह, किसन (RAS 85)	चक्रवाक	चकवा
कोकिला	कोयल	चतुर्दश	चौदह
कोष्ठ	कोठा	चतुर्दशी	चौदस
कोष्ठिका	कोठी	चतुष्पद	चौपाया (RAS 89)
खट्वा	खाट	चतुर्विंश	चौबीस
गम्भीर	गहरा	चतुर्वेदी	चौबे
ग्रंथी	गाँठ	चर्म	चाम
गर्भिणी	गाभिन	चर्मकार	चमार, चिमार
गर्त	गड्ढा	चवर्ण	चबाना
गर्दभ	गदहा	चित्रकार	चितेरा
चिक्कण	चिकना		
चित्रक	चीता	दूर्वा	दूब
छत्र	छाता	दुग्ध	दूध (RAS 84)
छिद्र	छेद (RAS 88)	द्विपट	दुपट्टा (RAS 89)
ज्येष्ठ	जेठ	दुर्बल	दुबला

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

जामाता	जमाई, जवाँई (RAS 89)	द्विवेदी	दूबे
जिह्वा	जीभ	द्वितीय	दूजा
जीर्ण	झीना	द्विगुण	दुगना
तपस्वी	तपसी (RAS 89)	द्विप्रहरी	दुपहरी
त्वरित	तुरन्त	दृष्टि	दीठि
ताम्र	ताँबा	देव	दई
तिलम	टीका	धतूर	धतूरा
तीक्षण	तीखा	धनश्रेष्ठी	धन्नासेठ
तृण	तिनका	धरित्री	धरती
त्रयोदशी	तेरह, तेरस	धान्य	धान
		धातृ	धाय, दाई
त्रीणी	तीन	धूम	धूआँ
दंड़	डंड़, डंडा	नग्न	नंगा
दंश	डंक	नक्षत्र	नगख, नच्छत्तर
दंष्ट्रा	दाढ़, डाढ़		
दंत	दाँत	नकुल	नेवला
दंतधावन	दातुन	नापित	नाई
दद्रु	दाद	नृत्य	नाच
दाह	डाह	नारिकेल	नारियल
दधि	दही (RAS88)	निद्रा	नींद
दक्षिण	दाहिना, दाँया	पंचम्	पाँचवां
द्वादश	बारह	पंचदश	पंद्रह
द्विरागमन	गोना	पंक्ति	पंगत, पाँत
दीपशलाका	दियासलाई	पत्र	पत्ता
दीपावली	दीवाली, दिवाली	परशु	फरसा
पर्यंक	पलंग	भिक्षा	भीख
पश्चात्ताप	पछतावा	भिक्षुक	भिक्खु, भिखारी
परश्वः	परसो	भ्रू	भौह (RAS 89)
पक्षी	पंछी	मकर	मगर
पक्व	पक्का	मयूर	मोर
पर्पट	पापड़	मणिकार	मणिहार
प्रस्तर	पत्थर		
प्रहरी	पहरूआ	मस्तक	माथा
पावर्व अस्थि	पड़ोसी	मशक	मच्छर
प्रहर	पहर (RAS 84)	महिषि	भैंस
पाषाण	पत्थर, पाहन	मक्षिका	मक्खी
पितृ	पितर	मर्कटी	मकड़ी
पीत	पीला	मातुल	मामा
पुत्र	पूत	मित्र	मीत
पुष्कर	पोखर	मिष्टान्न	मिठाई
पृष्ठ	पीठ	मुख	मुँह
फाल्गुन	फागुन	मुष्टिका	मुट्ठी
फुल्ल	फुलका	मृतघट्ट	मरघट
		मेघ	मेह
बर्कर	बकरा	यम	जम
बलीवर्द	बैल (RAS 91)	यमुना	जमुना

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

बालूका	बालू	यव	जौ
बुभूक्षित	भूखा	यजमान	जजमान
भक्त	भगत (RAS 87)	यज्ञोपवीत	जनेऊ
भ्रमर	भौंरा	युक्ति	जुगति (RAS 87)
भल्लूक	भालू	युवा	जवान
भागिनेय	भानजा	यूथ	जत्था (RAS 89)
भ्राता	भाई	रज्जू	रस्सी
भाद्रपद	भादवा (RAS 89)	रक्षा	राखी
भ्रातृजाया	भौजाई, भाभी	राजपुत्र	राजपुत, रजपूत
रात्रि	रात	सपत्नी	सौत
रात्रि जागरण	रतजगा	सरोवर	सरवर
राज्ञी	रानी	स्वप्न	सपना (RAS 91)
रिक्त	रीता	सर्सप	सरसों
रूदन	रोना	सप्तशती	सतसई
लवंग	लौंग	श्वश्रू	सास
लक्षण	लच्छण	श्मश्रु	मूँछ
लक्ष्मण	लखन	श्यालक	साला
लक्ष	लाख	साक्षी	साखी (RAS 89)
लोमशा	लोमड़ी	श्याली	साली
लौहकार	लुहार	श्रावण	सावन
बंध्या	बाँझ	श्वांस	साँस
वंशी	बाँसुरी	शिक्षा	सीख
बक	बगुला	सूत्र	सूत
बर्कर	बकरा	स्वर्णकार	सुनार
वत्स	बच्चा, बछड़ा (RAS 85.87)	श्वसुर	ससुर (RAS 89)
वणिक	बनिया	स्वजन	सजन
वज्रांग	बजरंग	शमशान	मसान
वधू	बहू (RAS91)	श्यामल	साँवला (RAS 94)
वरयात्रा	बरात	शाक	साग
वधिर	बहरा	शुष्क	सूखा
वार्ता	बात	शूकर	सूअर
वानर	बंदर	शुण्ड	सूंड
वाष्प	भाप	शैया	सेज
वार्ताक	बैंगन	सौभाग्य	सुहाग (RAS 91)
व्याघ्र	बाघ	सकट	छकड़ा
विकार	बिगाड़	स्नेह	नेह
		स्तम्भ	खम्बा, थाम
वृद्ध	बुड्ढा	स्कन्ध	कंधा
वृश्चिक	बिच्छु	स्तन	धन
		स्थल	थल
शर्करा	शक्कर	हट्ट	हाट
श्रृंगार	सिंगार	हृदय	हिय
श्रृंग	सींग	हस्ती	हाथी
शुक	सूआ	हस्तिनी	हथनी
सूर्य	सूरज	हरिद्रा	हल्दी (RAS 94)
श्रेष्ठी	सेठ (RAS 88)	होलिका	होली
हर्ष	हरख	क्षेत्र	खेत (RAS 94)
हरित	हरा		

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

तद्भव शब्द

तद्भव शब्द 'तत् + भव' के योग से बना है, जिसका शाब्दिक अर्थ है, 'उससे जन्म' अर्थात् जो शब्द संस्कृत भाषा से हजारों वर्षों की यात्रा के बाद परिवर्तित रूप में हिंदी में ग्रहण किए गए हैं, उन्हें तद्भव शब्द कहते हैं।

देशज शब्द– जिन शब्दों को हिंदी भाषा ने अपनी क्षेत्रीय भाषाओं से ग्रहण किया है, उन्हें देशज शब्द कहते हैं।

इन शब्दों के लिखित स्रोत नहीं मिलते हैं। जैसे– रेवड़, जूता, खिड़की, पाग, रींगडा, मयूर, महिला, मीन, मुकुट, मुक्ता, नीर, ठेस, कोटर (पक्षी का घोंसला), पल्ली, काफी, कोडी (पैसे), भंगड़ा, हड़ताल, गरबा, पावती (रसीद), अनुकरणात्मक शब्द, निरर्थक शब्द, पारिवारिक शब्दावली (मामा, दादा.....), डूंगर, गुदड़ी, गारा, पगड़ी, दरी, धाम, फगुआ (फाग खेलना), पेट, पापड़, धब्बा, लोटा, गोद, खादी, तेंदुआ, पुआल (छप्पर), परवल, भिंडी, सरसों, बाजरा, कुट्टी, लूंगी, पिल्ला, कलाई, खिचड़ी, गाड़ी, चिड़िया, छोरी, छोरा, टोली, डाब, डिबिया, डोंगा, डोर, ढाँचा, ढेर, पैसा, फुनगी, बियाना, बेटा, रोटी, लथपथ इत्यादि। इत्यादि।

(घ) विदेशज (विदेश शब्द)

वे शब्द जो विदेशी भाषाओं से हिंदी भाषा में लिए गए हैं, उन्हें **'विदेशज'** शब्द कहा जाता है। इस दृष्टि से अरबी, फारसी, तुर्की, अंग्रेजी, पुर्तगाली, फ्रांसीसी आदि भाषा – भाषियों के आगमन से हमारे देश के निवासियों पर जो प्रभाव पड़ा, उसके परिणामस्वरूप ये शब्द हिंदी में आ गए है।

(क) अरबी शब्द

अकल	आखिर	इस्तीफा	कर्ज
अर्क	आदमी	ईमान	कन्द
अजब	आफत	उम्र	मतलब
अजीब	आसामी	उम्दा	कसर
अजायब	इजारा	एहसान	कसूर
अदावत	इजालास	एवज	कसम
अमीर	इज्जत	औरत	कसरत
असर	इनाम	औलाद	कमाल
अहमक	इमारत	औसत	कायदा
अल्ला	इलाज	कदम	क्रातिल
किस्म	तकदीर	नकल	तख्त
किस्मत	तारीख	नहर	हवालात
किस्सा	तकिया	फकीर	मुसाफिर
किला	तमाशा	फिक्र	यतीम
किताब	तरफ	फायदा	लिहाफ
कुर्सी	तूती	फैसला	लफ्ज
खबर	तोता	बाज	लहजा
खत्म	तैरनी	बहस	लिफाफा
खत	नुस्खा	बाकी	लगाम
खिदमत	तहसील	बग्गी	लेकिन
खराब	तादाद	मुहावरा	लियाकत
ख्याल	तरक्की	मेहनत	लायक
गरीब	तजुर्बा	मदद	वारिस
गैर	दाखिल	मशहूर	वहम
गैरत	दस्तुर	मरजी	वकील

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

जाहिल	दावा	माल	हिम्मत
जर्राह	दावत	मिसाल	हैजा
जूलूस	दफ्तर	मजबूर	हिसाब
जिस्म	दगा	हवालदार	हरामी
जलसा	दुआ	मालूम	हद
जनाब	दफा	मामूली	हज्जाम
जवाहर	दल्लाल	मुकदमा	हक
जवाब	दुकान	मुल्क	हुक्म
जहाज	दिक	तखता	हाजिर
जालिम	दुनिया	मवाद	हाल
जिक्र	दिवान	तकाजा	हौसला
नकद	दौलत	मजमून	हाकिम
ताज	दफन	मौलवी	हमला
तमाम	दीन	मरहम	हया
तिजारत	नतीजा		

(ख) फारसी शब्द

अफसोस	जान	पाजी	जुरमाना
पासंग	आबरू	जिगर	गोला
जोश	पाक	आतिशबाजी	गवाह
तरकश	पर्दा	अदा	गिरफ्दार
तमाचा	परहेज	आराम	गिरवी
तालाब	पुर्जा	आमदनी	गरम
आवारा	गिरह	तीर	परवाह
आवाज	गुल	पलंग	आईना
गुलाब	तबाह	पैदावार	आइंदा
गुलूबन्द	तनखाह	पेशवा	उम्मेद
गोश्त	ताजा	पलक	कमरबन्द
पायजामा	दीवार	पुल	कद्दू
जुराब	चादर	पारा	कबूतर
चाबुक	दरबार	पेशा	चालाक
दंगल	पैमाना	कुश्ती	चिराग
दिलेर	बेवा	चश्मा	दिलासा
बहार	चूंकि	दिमाग	बेहूदा
किनारा	चौकीदार	दुम	बीमार
कूचा	चाशनी	दिल	बिरादरी
खाक	जंग	दवा	मादा
जहर	दोस्त	माशा	खामोश
नामर्द	भात	खरगोश	जोर
नशा	मलाई	खुश	जबर

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

नाव	मुर्दा	खुराक	जिंदगी
नाप	मजा	खूब	जच्चा
नाजुक	गर्द	जादू	नापाक
मुफ्त	जागीर	पाक	मोर्चा
मीना	लश्कर	सुर्ख	आसमान
मुर्गा	वर्ना	सरदार	कारीगर
याद	वापिस	सरकार	जलेबी
यार	शराब	सूद	जुकाम
राय	शादी	सौदागर	दर्जी
शोर	दीवार	रंग	सितारा
हफ्ता	रोगन	सितार	हजार
राह	सरासर	अमरूद	

(ग) तुर्की शब्द

कुर्की, आका, खान, तमगा, मशालची, चिक, तोप, लफंगा, काबू, तलाश, सौगात, दरोगा, सुराग, बुलबुल, चोगा,बहादुर

(घ) अंग्रेजी शब्द –

अपील, कमीशन, जेल, पेपर ,आर्डर, चेयरमेन, पेंसिल, अस्पताल, फीस, इंच , इंजन, क्वार्टर, टैक्स, इंटर, क्रिकेट,डायरी, मील, इयरिंग, कोर्ट डॉक्टर, बोतल, अप्रेल, डिप्टी , कन्ट्रोल, एजेन्सी, गार्ड, टिकट, कम्पनी ,गजट, ड्राइवर, वोट, प्लेट, फ्रेम, नर्स, पार्सल, मीटिंग,फाउन्टेन, पेन थर्मामीटर, पेट्रोल, होल्डर, नम्बर, दिसम्बर, पाउडर, कालर, नोटिस, पार्टी, प्रेस

(ङ) पुर्तगाली शब्द –बाल्टी, आया, कब्रिस्तान, परात, गमला, पपीता, मस्तूल, इस्पात, गोदाम, गोभी, साया, चाबी, फालतू, काजू, तम्बाकू,फीता

फ्रांसीसी शब्द– काजू, कारतूस, अंग्रेज, कूपन।

जापानी– रिक्शा, सायोनारा।

चीनी– चाय, लीची।

(ङ) अनुकरणवाचक शब्द

किसी पदार्थ या वस्तु की कल्पित या यथार्थ ध्वनी के द्वारा निर्मित शब्दों को अनुकरणवाचक शब्द कहते है। **जैसे –**

खटखटाना, दुरदुराना, फड़फड़ाना, फुसफुसाना, फुफकार, लपकना, ललकारना, सरसराना, हड़बड़ाना आदि क्रियाऐं और पटाका, सिटकनी आदि संज्ञा शब्द अनुकरणवाचक हैं। कुछ ऐसे भी अनुकरणवाचक शब्द होते है जो किसी चलते –फिरते शब्द के अनुकरण पर बन जाते हैं, जैसे– भीड़–भाड़, धूम–धड़क्का, खट–पट आदि। भाड़ धड़क्का और पट शब्द भीड़, धूम और खट के अनुकरण पर निर्मित हुए हैं।

कभी–कभी किसी देश के नाम पर भी शब्द बना दिया जाते हैं, जैसे – चीन से चीनी, जापान से जापानी, हिन्द से हिन्दी, मिस्त्र से मिस्त्री आदि। इसी प्रकार कभी–कभी बोलचाल में व्यर्थ के शब्द भी मुंह से निकल जाते हैं, जिनका कोई अर्थ नहीं होता, जैसे– पैसा–वैसा, यहाँ–वैसा शब्द नितान्त निरर्थक है।

अनुकरणवाची शब्दों के साथ एक बात 'संकर शब्दों' के संदर्भ में भी कहनी है। हिन्दी में ऐसे बहुत से संकर शब्द प्रचलित हो गये हैं जो दो भिन्न स्त्रोतों के मिश्रण से बने है, जैसे –

वर्षगाँठ, मांगपत्र, जांचकर्ता, पूंजीपति, कपड़ा–उद्योग आदि हिन्दी और संस्कृत शब्दों के मिक्षण से बने है।

थानेदार, किताबघर, बैठकबाज, घड़ीसाज आदि हिन्दी और अरबी –फारसी शब्दों के मिश्रण से बने है।

रेडियों तरंग, रेलगाड़ी, ऑपरेशन कक्ष, योजना–मशीशन, रेलयात्री, अग्निबोट आदि शब्द हिन्दी संस्कृत और अंग्रेजी के मिश्रण से बने है।

पार्टीबाजी, बीमा पॉलिसी, गुजबाजी, अफसरशाही, टिकटघर आदि अरबी–फारसी और अंगेजी के मिश्रण से बने है।

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

निम्नलिखित में से तत्सम शब्द बताइए ?

1. (1) कंचन (2) अहीर (3) दूध (4) मौक्तिक

2. (1) जौ (2) अक्षत (3) घी (4) दुबर्ला

3. (1) कुल्हाड़ा (2) कोढ़ (3) धैर्य (4) धुआँ

4. (1) गाभिन (2) सियार (3) ससुर (4) बधिर

5. (1) केतक (2) करेला (3) सपना (4) काम

6. (1) पोता (2) तैल (3) मोर (4) पूआ

7. (1) अपूप (2) जेठ (3) हँसी (4) जीभ

8. (1) लोग (2) शिक्षा (3) साँकल (4) चौदह

9. (1) बंदर (2) दस (3) दश (4) पत्थर

10. (1) घोड़ा (2) घोटक (3) गेहूँ (4) ऊँट

निम्नलिखित में से तद्भव शब्द बताइए ?

11. (1) कर्पूर (2) अंध (3) शैय्या (4) सूई

12. (1) बट (2) चंचु (3) सरसों (4) सर्षप

13. (1) मिट्टी (2) शृंखला (3) श्वास (4) श्रेष्ठी

14. (1) गोधूम (2) कुक्षि (3) अट्टालिका (4) अच्छत

15. (1) अंजलि (2) सलाई (3) श्लाका (4) पक्ष

16. (1) उद्वर्तन (2) फरसा (3) वचन (4) शाक

17. (1) सपत्नी (2) भित्ति (3) सौत (4) शर्करा

18. (1) चित्रक (2) कांचन (3) श्याली (4) साली

19. (1) चना (2) आशिष (3) काया (4) गिद्ध

20. (1) सुभाग (2) सुहाग (3) लोक (4) कारवेल

21. **(1) भात** **(2) सौभाग्य** **(3) उपहास** **(4) पर्वत**

22. **(1) पिता** **(2) खेल** **(3) मोर** **(4) उन्मूलन**

23. **(1) रोशनी** **(2) ज्योति** **(3) सम्राट** **(4) राजा**

24. **(1) मान्य** **(2) उदार** **(3) सुई** **(4) उद्गार**

25. **(1) पराजय** **(2) घोड़ा** **(3) प्रभु** **(4) गिरि**

26. **(1) रचना** **(2) अनुराग** **(3) वंश** **(4) बर्फ**

27. **(1) वचन** **(2) हँसी** **(3) विधवा** **(4) शौर्य**

28. **(1) शत्** **(2) अंग** **(3) षष्ठ** **(4) बीस**

29. **(1) रक्षा** **(2) तमंचा** **(3) विरोध** **(4) शशि**

30. **(1) बालिका** **(2) बेंत** **(3) आज्ञा** **(4) सिद्धि**

31. **(1) धैर्य** **(2) काहिल** **(3) आशा** **(4) शत्रु**

निम्नलिखित में से देशज शब्द बताइए ?

32. (1) डाभ (2) मोजा (3) मीटर (4) नोटिस

33. (1) रात (2) खिचड़ी (3) खीर (4) पेन

34. (1) बटन (2) इंच (3) मास्टर (4) पिल्ला

35. (1) रेल (2) ग्लास (3) पाग (4) कमीशन

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

संज्ञा

संज्ञा शब्द, 'सम् + ज्ञा' के योग से बना है, जिसका शाब्दिक अर्थ है 'सम्यक या संपूर्ण ज्ञान कराने वाला' जबकि 'संज्ञा' शब्द

या शाब्दिक अर्थ है 'नाम'। अर्थात् जो शब्द किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, भाव तथा प्राणि के नाम का बोध कराते हैं, उन्हें संज्ञा कहते हैं।

संज्ञा के भेद– अर्थ के आधार पर 5 भेद होते हैं।

प्रयोग के आधार पर मुख्यतः 3 भेद होते हैं–

(i) व्यक्ति वाचक संज्ञा

(ii) जाति वाचक संज्ञा

(iii) भाव वाचक / गुण वाचक संज्ञा

(iv) द्रव वाचक / पदार्थ वाचक

(v) समूह वाचक संज्ञा

(i) **व्यक्ति वाचक संज्ञा–** जो शब्द किसी विशेष व्यक्ति, वस्तु, स्थान तथा प्राणी के नाम का बोध कराते हैं, उन्हें व्यक्ति वाचक संज्ञा कहते हैं।
जैसे– मोहन, राजेश, दिनेश, कमल, जयपुर, ताजमहल, रामायण, चेतक, गंगा, हिमालय इत्यादि।

(ii) जाति वाचक संज्ञा– जो शब्द किसी जाति का (व्यक्तियों, वस्तुओं, स्थानों तथा प्राणियों) बोध कराते हैं, उन्हें जाति वाचक संज्ञा कहते हैं।
जैसे– लड़का, स्त्री, फूल, पर्वत, नदी, ईमारत, पुस्तक, गाय, घोड़ा, भैंस, कुत्ता, नगर, शहर, कस्बा, जलेबी, कोयल, चिड़िया, आम, केला इत्यादि।

(क) द्रव्य वाचक / पदार्थ वाचक– जो शब्द द्रव्य या पद ार्थ का बोध कराते हैं, उन्हें द्रव्य या पदार्थ वाचक संज्ञा कहते हैं। इसमें नाप तथा तौल वाली वस्तुएँ आती हैं

जैसे– ऊन, लकड़ी, सोना, चांदी, पीतल, तांबा, पेट्रोल, दूध, फल, मिठाई इत्यादि।

(ख) समूह वाचक संज्ञा– जो शब्द समूह का बोध कराते हैं, उन्हें समूह वाचक संज्ञा कहते हैं।
जैसे– कक्षा, सेना, समाज, परिवार, गिरोह, भीड़, कुंज (छोटे–छोटे पेड़ों का झुंड), पशु, पक्षी, टोली इत्यादि।

(iii) भाव वाचक / गुण वाचक संज्ञा– जो शब्द किसी भाव, गुण, दोष, अवस्था, कार्य इत्यादि का बोध कराते हैं, उन्हें भाव वाचक संज्ञा कहते हैं।
जैसे–बुढ़ापा, ईमानदारी, भूख, प्यास, चोरी, पाप, चढ़ाई, ऊँचाई, प्रार्थना इत्यादि।

नियम–

1. भाव वाचक संज्ञा के स्थान पर जातिवाचक संज्ञा का प्रयोग

   नोट– भाव वाचक संज्ञा का प्रयोग सदैव एक वचन में किया जाता है जैसे ही भाव बहुवचन में परिवर्तित होता है, वह जाति वाचक संज्ञा में परिवर्तित हो जाता है।

   जैसे– (i) ऊँचाइयां देखनी है तो हिमालय की देखो

   (ii) सभी की प्रार्थनाएँ व्यर्थ नहीं जाती है।

2. व्यक्ति वाचक संज्ञा के स्थान पर जाति वाचक संज्ञा का प्रयोग जैसे–

   (i) देश में अनेक विभीषण पैदा हो गए हैं।

   (ii) देश में अनेक जयचंद हैं।

3. जाति वाचक संज्ञा के स्थान पर व्यक्ति वाचक संज्ञा का प्रयोग

   जैसे– (i) महात्मा जी ने देश को स्वतंत्र कराया

   (ii) नेता जी अब नहीं रहे

4. **भाव वाचक संज्ञा का निर्माण–** शब्दों के अंत में प्रत्यय लगाकर भाव वाचक संज्ञा का निर्माण किया जाता है।

   भाव वाचक संज्ञा का निर्माण 5 प्रकार से किया जाता है–

   (i) जाति वाचक संज्ञा– बचपन (बच्चा + पन), माहात्म्य (महात्मा + य), लडकपन (लड़का + पन), बपौती, स्त्रीत्व, नारीत्व

   (ii) सर्वनाम – अपना + पन / त्व (अपनापन, अपनत्व), मम + ता (ममता), अहम् + कार (अहंकार), निज + तत्व (निजत्व)

   (iii) विशेषण– मीठा + आस (मिठास), काला + इमा (कालिमा), सुंदर + य (सौन्दर्य), ईमानदारी, लालिमा

   (iv) क्रिया– लिख + आवट (लिखावट), सज + आवट (सजावट), चढ + आई (चढ़ाई), मनौती, चुनौती

   (v) अव्यय– दूर + ई (दूरी), धिक् + कार (धिक्कार), समीप + य (सामीप्य), बाहरी, भीतरी

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

संज्ञा से विशेषण

1. वे क्रियाएं जो संज्ञा या विशेषण से बनती हैं, कहलाती हैं –

(1) संयुक्त क्रिया (2) सकर्मक क्रिया (3) सर्तमानकालिक क्रिया (4) नामधातु क्रिया

2. संज्ञा शब्द से बना विशेषण है–

(1) हंसोड़ (2) भुलक्कड़ (3) लखनवी (4) चालू

3. निम्नलिखित शब्दों में से संज्ञा शब्द से बना विशेषण छांटिए–

(1) सुगंधित (2) सुअक्कड़ (3) कमाऊ (4) ऊपरी

4. संज्ञा शब्द इतिहास, उपेक्षा, मूल संज्ञा शब्दों के सही विशेषण विकल्प को छांटिए–

(1) एतिहासिक, अपेक्षित (2) ऐतिहासिक, अपेक्षीत (3) इतिहासिक, उपेक्षा (4) ऐतिहासिक, उपेक्षित

5. निम्नलिखित में से कौनसा विशेषण संज्ञा शब्द से नहीं बना है ?

(1) कंटीला (2) रौबीला (3) नीला (4) जहरीला

6. संज्ञा शब्द 'नमक' से बना विशेषण है–

(1) नमकिय (2) नामक (3) नामिक (4) नमकीन

6. कौनसा शब्द संज्ञा है ?

(1) अपेक्षा (2) आर्थिक (3) अपमानित (4) आदरणीय

7. संज्ञा शब्द से बना विशेषण नहीं है –

(1) चालबाज (2) मार्मिक (3) शारीरिक (4) नमकीन

8. सदैव एकवचन में कौनसी संज्ञा होती है ?

(1) भाव वाचक (2) जाति वाचक (3) व्यक्ति वाचक (4) ये सभी

रेखांकित पदों में संज्ञा का नाम बताइए–

9. देश में अनेक <u>विभीषण</u> पैदा हो गए हैं?

(1) भाव वाचक (2) व्यक्ति वाचक (3) जाति वाचक (4) 2 व 3 दोनों

10. सोहन किसी की <u>बुराई</u> नहीं करता।

(1) व्यक्ति वाचक (2) भाव वाचक (3) जाति वाचक (4) समूह वाचक

11. पांडव दुर्योधन की <u>चालों</u> को समझ गए।

(1) व्यक्ति वाचक (2) भाव वाचक (3) जाति वाचक (4) 2 व 3 दोनों

12. आल्प्स पर्वत यूरोप का <u>हिमालय</u> है।

(1) जाति वाचक (2) व्यक्ति वाचक (3) भावना वाचक (4) ये सभी

13. <u>नेता जी</u> अब नहीं रहे।

(1) व्यक्ति वाचक (2) जाति वाचक (3) भाव वाचक (4) ये सभी

निम्नलिखित संज्ञा शब्दों का निर्माण किससे हुआ है ?

14. एकता

(1) जाति वाचक (2) व्यक्ति वाचक संज्ञा (3) क्रिया (4) विशेषण

15. बाहुल्य

(1) विशेषण (2) सर्वनाम (3) अव्यय (4) क्रिया

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

16. 'कोयल' शब्द में कौनसी संज्ञा है बताइए–

(1) व्यक्ति वाचक (2) समूह वाचक (3) भाव वाचक (4) जाति वाचक

17. बचपन,शैशव, मित्रता, अपनत्व, लड़कपन शब्द में कौन सी संज्ञा है ?

(1) भाव वाचक संज्ञा (2) व्यक्ति वाचक संज्ञा (3) समूह वाचक संज्ञा (4) जाति वाचक संज्ञा

18. व्यक्तिवाचक, भाववाचक, जातिवाचक संज्ञाओं का सही क्रम क्या होगा ?

(1) दैनिक जागरण, धुलाई, तूफान (2) तूफान, दैनिक जागरण, धुलाई

(3) धुलाई, दैनिक जागरण, तूफान (4) इनमें से कोई नहीं

19. 'लाली' और 'अहंकार' संज्ञाएँ क्रमशः किससे बनी है ?

(1) सर्वनाम, विशेषण (2) विशेषण, सर्वनाम (3) क्रिया, विशेषण (4) क्रिया, सर्वनाम

20. 'माहात्म्य' भाववाचक संज्ञा किससे बनती है–

(1) सर्वनाम (2) विशेषण (3) भाववाचक संज्ञा (4) जातिवाचक संज्ञा

21. 'मिठास' भाववाचक संज्ञा किससे बनती है–

(1) सर्वनाम (2) भाववाचक संज्ञा (3) व्यक्तिवाचक संज्ञा (4) विशेषण

निम्नलिखित प्रश्नों में भाववाचक संज्ञा बताइए–

22. (1) स्व (2) परायापन (3) वक्ता (4) चुनना

23. (1) निज (2) किशोर (3) स्वस्थ (4) स्वास्थ्य

निम्नलिखित प्रश्नों में बताइए कौनसा शब्द भाव वाचक संज्ञा का नहीं है –

24. (1) डाका (2) सफेदी (3) फैलना (4) विषमता

25. (1) ऊँचा (2) बंधुत्व (3) विद्वता (4) गिरावट

निम्नलिखित शब्दों का निर्माण किससे हुआ है–

26. 'चिड़िया' शब्द में कौनसी संज्ञा है बताइए–

(1) व्यक्तिवाचक (2) समूहवाचक (3) भाववाचक (4) जातिवाचक

27. 'लकड़ी' शब्द में संज्ञा बताइए–

(1) समूहवाचक (2) जातिवाचक (3) द्रव्यवाचक (4) इनमें से कोई नहीं

28. निम्नलिखित में कौन–सा शब्द व्यक्तिवाचक संज्ञा नहीं है–

(1) महाभारत (2) पटना (3) औरत (4) यमुना

29. निम्नलिखित में कौनसी द्रव्यवाचक संज्ञा नहीं है–

(1) लोहा (2) घड़ी (3) तेल (4) दूध

30. निम्नलिखित में से कौन–सा शब्द 'भाववाचक संज्ञा' के अंतर्गत रखा जाएगा–

(1) सोहन (2) नदी (3) भलाई (4) गाय

31. बुढ़ापा भी एक प्रकार का <u>अभिशाप</u> है– रेखांकित पद में कौन सी संज्ञा है–

(1) व्यक्तिवाचक संज्ञा (2) भाववाचक संज्ञा (3) जातिवाचक संज्ञा (4) द्रव्यवाचक

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

सर्वनाम

- सर्वनाम शब्द 'सर्व + नाम' के योग से बना है, जिसका शाब्दिक अर्थ है 'सबका नाम' अर्थात् जो शब्द संज्ञा शब्दों के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं, उन्हें सर्वनाम कहते हैं।

भाषा में संज्ञा शब्दों के आवृत्ति दोष से बचने के लिए सर्वनाम शब्दों का प्रयोग किया जाता है।

सर्वनाम शब्द कुल 11 होते हैं, जबकि सर्वनाम के 6 भेद हैं।

(1) पुरुष वाचक सर्वनाम
(2) निश्चय वाचक सर्वनाम
(3) अनिश्चय वाचक सर्वनाम
(4) प्रश्न वाचक सर्वनाम
(5) संबंध वाचक सर्वनाम
(6) निज वाचक सर्वनाम

(i) पुरुष वाचक सर्वनाम– जो सर्वनाम शब्द पुरुष का बोध कराते हैं उन्हें पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं। पुरुष तीन होते हैं–

(अ) उत्तम पुरुष– बात करने वाला या वक्ता या जो बोल रहा है वह उत्तम पुरुष में आता है। जैसे– मैं, हम, मैंने, हमने, मेरा, मेरे, मेरी, हमारा, हमारे, हमारी, मुझे, हमें।

(ब) मध्यम पुरुष– सामने वाला या श्रोता या जो सुन रहा है। जैसे– तू, तुम, आप, तेरा, तेरी, तेरे, तुझे, तुम्हारा, तुम्हारे, तुम्हारी, आपका, आपकी (सामने वाले के लिए), तुमने, आपने

(स) अन्य पुरुष– जिसके बारे में बात की जाए अर्थात् दो बात करने वाले जब किसी अन्य तीसरे के बारे में बात करें। जैसे– यह, वह, ये, वे, इसे, उसे, उसने, इसका, उसका

(1) मैं जयपुर जाऊँगी।
(2) तुम पत्र लिख रहे हो।
(3) वह कल आएगा

(ii) निश्चय वाचक सर्वनाम– जो सर्वनाम शब्द किसी निश्चित वस्तु, स्थान तथा प्राणी (पुरुष को छोड़कर) का बोध कराते हैं। जैसे– यह, वह, ये, वे, इस, उस

(1) यह मेरा घर है।
(2) वह मेरी पुस्तक है।

(iii) अनिश्चय वाचक सर्वनाम– जो सर्वनाम शब्द किसी निश्चित व्यक्ति, वस्तु, स्थान का बोध नहीं कराते उन्हें अनिश्चय वाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे– कोई (सजीव), कुछ (निर्जीव)

(1) कोई आ रहा है।
(2) मोहन कुछ लिख रहा है।

(iv) प्रश्न वाचक सर्वनाम– जो शब्द प्रश्न पूछने के काम आते हैं, उन्हें प्रश्न वाचक सर्वनाम कहते हैं।

जैसे– क्या (निर्जीव), कौन (सजीव)

(1) क्या लिख रहे हो ?
(2) कौन आया था ?

(v) संबंध वाचक सर्वनाम– जो सर्वनाम शब्द किसी एक बात या उप वाक्य का संबंध किसी अन्य बात या उपवाक्य से बताते हैं, संबंध वाचक सर्वनाम कहते हैं।

जैसे– जो, सो, जैसा, वैसा

(i) जो जागेगा सो पाएगा
(ii) जैसा करोगे वैसा भरोगे

(vi) निज वाचक सर्वनाम– जो सर्वनाम शब्द निज या स्वयं के लिए प्रयुक्त होते हैं, उन्हें निज वाचक सर्वनाम कहते हैं।

जैसे– आप, अपने आप, स्वयं, खुद।

नोट–

(1) जब 'आप' शब्द का प्रयोग सामने वाले के लिए किया जाता है तो वहां मध्यम पुरुष सर्वनाम होता है तथा जहां 'आप' शब्द का प्रयोग स्वयं के लिए किया जाता है तो वहां निज वाचक सर्वनाम होता है।

जैसे– (i) आप पुस्तक पढ़े। (मध्यम पुरुष सर्वनाम)
(ii) सारा काम मैं अपने आप कर लूंगी। (निज वाचक सर्वनाम)

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

(2) जब 'आप' शब्द का प्रयोग किसी को किसी के बारे में बताने के लिए किया जाता है अथवा भाषण में 'आप' शब्द का प्रयोग किया जाता है तो 'आप' शब्द में 'अन्य' पुरुष सर्वनाम होता है।

जैसे– जवाहर लाल नेहरू देश के प्रथम प्रधानमंत्री थे आपने जेल में रहते हुए 'डिस्कवरी ऑफ इण्डिया' पुस्तक की रचना की (अन्य पुरुष सर्वनाम)

(3) **सर्वनाम शब्द** कुल 11 होते हैं– मैं, तू (तुम) यह, वह, कोई, कुछ, क्या, कौन, जो, सो, आप।

(4) सर्वनाम शब्दों के साथ 'को' कारक विभक्ति का प्रयोग व्याकरणिक रूप से अशुद्ध होता है।

जैसे– मुझको, इसको, उसको, हमको (अशुद्ध है) मुझे, इसे, उसे, हमे (शुद्ध है)

प्रश्न– वह आप ही चला जाएगा।

उत्तर– निजवाचक

प्रश्न– आप भला तो जग भला।

उत्तर– निजवाचक

1. सर्वनाम शब्दों का प्रयोग भाषा में क्यों किया जाता है ?

(1) वाक्य को सुंदर बनाने में (2) वाक्य को छोटा करने में

(3) अर्थ ग्रहण करने में (4) पुनरुक्ति दोष दूर करने में

2. सर्वनाम शब्दों का प्रयोग होता है ?

(1) एकवचन (2) बहुवचन (3) दोनों में (4) दोनों में ही नहीं

3. निम्नलिखित वाक्यों में से किस वाक्य में सर्वनाम का अशुद्ध प्रयोग हुआ ?

(1) वह स्वयं यहाँ नहीं आना चाहती। (2) आपके आग्रह पर मैं दिल्ली जा सकता हूँ।

(3) मैं तेरे को एक घड़ी दूँगा। (4) मुझे इस बैठक की सूचना नहीं थी।

निर्देश–निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित पदों में सर्वनाम बताइए ?

4. आपको यह काम करना है।

(1) निश्चयवाचक (2) अन्यपुरुष (3) संबंधवाचक (4) निजवाचक

5. आप कहाँ तक पढ़े–लिखे हैं ?

(1) उत्तम पुरुष (2) मध्यमपुरुष (3) निजवाचक (4) अन्यपुरुष

6. जो आया है सो जाएगा।

(1) संकेतवाचक (2) संबंधवाचक (3) निश्चयवाचक (4) निजवाचक

7. वह इधर ही गया होगा–

(1) संकेतवाचक (2) संबंधवाचक (3) निश्चयवाचक (4) निजवाचक

8. कोई रो रहा है ?

(1) संकेतवाचक (2) संबंधवाचक (3) अनिश्चयवाचक (4) निजवाचक

9. तुम पत्र लिख रहे हो–

(1) संकेतवाचक (2) पुरुषवाचक (3) निश्चयवाचक (4) निजवाचक

10. जो जैसा करेगा वह वैसा ही भरेगा–

(1) संबंधवाचक (2) मध्यमपुरुष (3) अन्यपुरुषवाचक (4) पुरुषवाचक

11. मैं कल बाजार जाऊँगी।

(1) संबंधवाचक (2) मध्यमपुरुष (3) उत्तम पुरुषवाचक (4) पुरुषवाचक

12. उन्हें कुछ देकर विदा कर दो।

(1) पुरुषवाचक (2) निश्चयवाचक (3) अनिश्चयवाचक (4) प्रश्नवाचक

13. वहाँ कौन खड़ा था ?

(1) प्रश्नवाचक (2) निश्चयवाचक (3) अनिश्चयवाचक (4) पुरुषवाचक

14. यह मेरा घर है।

(1) निश्चयवाचक (2) निजवाचक (3) पुरुषवाचक (4) प्रश्नवाचक

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

15. दरवाजे पर <u>कोई</u> है, उसे अंदर बुलाओ।

(1) प्रश्नवाचक (2) निजवाचक (3) पुरुषवाचक (4) अनिश्चयवाचक

16. तुम्हारी तस्वीर तो <u>वह</u> है और मेरी यह।

(1) निश्चयवाचक (2) निजवाचक (3) पुरुषवाचक (4) संबंधवाचक

17. यह दीवार मैं <u>आप</u> ही गिरा दूँगा।

(1) निश्चयवाचक (2) निजवाचक (3) पुरुषवाचक (4) संबंधवाचक

18. <u>मैं</u> प्रतिदिन ठंडे जल से स्नान करता हूँ।

(1) उत्तम पुरुष (2) मध्यमपुरुष (3) निजवाचक (4) अन्यपुरुष

19. संबंध वाचक सर्वनाम का प्रयोग किस वाक्य में हुआ है?

(1) ऐसा लगता है मैं उनसे मिल चुका हूँ। (2) राम की माँ आ रही हैं।

(3) जो जायेगा सो पाएगा (4) मेरा पेपर कल है।

20. जो–सो में कौन–सा सर्वनाम है ?

(1) प्रश्नवाचक (2) निश्चयवाचक (3) संबंधवाचक (4) इनमें से कोई नहीं

निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित पदों में सर्वनाम बताइए–

21. <u>वह</u> ही आम का पौधा है–

(1) अन्यपुरुष (2) निश्चयवाचक (3) पुरुषवाचक (4) संबंधवाचक

22. अब इस घर की देखभाल <u>कौन</u> करेगा–

(1) प्रश्नवाचक (2) निजवाचक (3) पुरुषवाचक (4) निश्चयवाचक

23. मोहन <u>जो</u> कल यहाँ आया था, पकड़ा गया।

(1) निश्चयवाचक (2) निजवाचक (3) पुरुषवाचक (4) संबंधवाचक

24. निजवाचक सर्वनाम है–

(1) हम (2) मैं (3) कौन (4) स्वयं

25. निजवाचक सर्वनाम का प्रयोग किस वाक्य में हुआ है–

(1) आप यहाँ बैठिए (2) वह आप ही चला जाएगा

(3) आप मेरी बात नहीं मानते (4) वह आ जाएगा

26. संबंधवाचक सर्वनाम बताइएँ–

(1) अपना (2) मेरा (3) जो (4) वह

27. 'यह काम मैं आप कर लूँगा'' पंक्तियों में 'आप' है–

(1) संबंधवाचक सर्वनाम (2) निजवाचक सर्वनाम

(3) निश्चयवाचक सर्वनाम (4) पुरुषवाचक सर्वनाम

28. किस क्रम में सर्वनाम का भेद नहीं है?

(1) पुरुषवाचक सर्वनाम (2) निजवाचक सर्वनाम

(3) सम्बन्ध वाचक सर्वनाम (4) अस्तित्ववाचक सर्वनाम

29. 'तेते पाँव पसारिए, जेती लंबी सौर' में कौनसा सर्वनाम है ?

(1) सम्बन्ध कारक सर्वनाम (2) पुरुषवाचक सर्वनाम

(3) प्रश्नवाचक सर्वनाम (4) निजवाचक सर्वनाम

30. किस क्रम में निजवाचक सर्वनाम नहीं है ?

(1) वह अपने आप ही विद्यालय गया। (2) मैं अपना काम स्वयं करता हूँ।

(3) किन–किन का नाम सूची में नहीं आया। (4) यह स्वतः समझ जायेगा।

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

विशेषण

परिभाषा– जो शब्द संज्ञा व सर्वनाम शब्दों की विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेषण कहते हैं।

विशेषण के मुख्यत: 4 (चार) भेद–

(1) गुण वाचक विशेषण

(2) संख्या वाचक विशेषण

(3) परिमाण वाचक विशेषण

(4) संकेत वाचक/सार्वनामिक विशेषण

(1) गुण वाचक विशेषण– जो शब्द संज्ञा व सर्वनाम शब्दों के गुण, दोष, रंग, स्वाद, आकार, स्पर्श, स्थान, समय, दिशा, दशा तथा अवस्था का बोध कराते हैं, उन्हें गुण वाचक विशेषण कहते हैं।

जैसे– (i) गुण– ईमानदार, दयालु, भला, उदार।

(ii) दोष– दुष्ट, बेईमान, चोर, पापी।

(iii) रंग– काला, पीला, लाल, हरा, नीला।

(iv) स्वाद– खट्टा, मीठा, नमकीन, कड़वा।

(v) आकार– चौकोर, आयताकार, लंबा, चौड़ा, टेढ़ा।

(vi) स्पर्श– मुलायम, चिकना, कोमल, खुरदरा।

(vii) स्थान– जोधपुरी, बीकानेरी, जयपुरी, जापानी।

(viii) समय– वार्षिक, अर्द्धवार्षिक, मासिक, दैनिक।

(ix) दिशा– उत्तरी, दक्षिणी, पूर्वी, पश्चिमी।

(x) दशा/अवस्था– अमीर, गरीब, सूखा, गीला, बूढ़ा, जवान, बीमार।

(2) संख्या वाचक विशेषण– जो शब्द संज्ञा व सर्वनाम शब्दों की संख्या का बोध कराते हैं, उन्हें संख्या वाचक विशेषण कहते हैं। इसमें वस्तुओं की गणना या गिनती होती है।

इसके दो भेद हैं–

(i) निश्चित संख्या वाचक–जैसे– 2 दर्जन केले, 5 निम्बू, चौगुना वेतन, 4 कुर्सियां, एक तिहाई पंखे, 100 रूपये, हर एक/ प्रत्येक छात्र, सतसई।

(ii) अनिश्चित संख्या वाचक– कुछ खिलौने, 3-4 पंखे, दसेक पुस्तकें, सारे/सभी चूहें, ढेरों कुर्सियां

(3) परिमाण वाचक विशेषण–जो शब्द संज्ञा शब्दों की मात्रा का बोध कराते हैं, उन्हें परिमाण वाचक विशेषण कहते हैं। इसमें नाप तथा तौल वाली वस्तुएं आती है। इसके दो भेद है–

(i) निश्चित संख्या वाचक– जैसे– 5°C तापमान, सवा लीटर दूध, 1½ किलो बादाम, 2 मीटर कपड़ा, 3 किलोमीटर सड़क।

(ii) अनिश्चित संख्या वाचक– 2 थैली दूध, 2 चम्मच चीनी, 3 चम्मच दूध, 1 मुट्ठी गेहूँ, ढेरों आम, थोड़े केले, दसेक किलो आलू, 3-4 किलो सेब।

(4) संकेत वाचक/सार्वनामिक विशेषण– जो सर्वनाम शब्द संज्ञा शब्दों की ओर संकेत करते हैं, उन्हें संकेत वाचक विशेषण कहते हैं। ये शब्द सर्वनाम के होते हैं तथा विशेषण की तरह प्रयुक्त होते हैं इसलिए इन्हें सार्वनामिक विशेषण कहते हैं।

इसमें सर्वनाम शब्दों के तुरंत बाद संज्ञा शब्द आता है परंतु यह नियम उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष, तथा निज वाचक सर्वनाम शब्दों पर लागू नहीं होता है।

जैसे– यह मेरा घर है। (सर्वनाम)

यह घर मेरा है। (सार्वनामिक विशेषण)

जैसा देश वैसा भेष।

यह पुस्तक मेरी है।

- तुलना' या अवस्था' के आधार पर विशेषण के भेद– (गुण वाचक की होती है) तीन भेद होते हैं–

(i) **मूलावस्था–** जहां किसी की किसी से तुलना नहीं की जाती, वहां मूलावस्था विशेषण होता है अर्थात् शब्द तथा वाक्य अपने मूल रूप में रहते हैं। जैसे–उच्च, निम्न, लघु, गुरु, कटु इत्यादि।

(अ) राम लंबा है।

(ब) आम मीठा है।

(ii) उत्तरावस्था विशेषण– जहां शब्द तथा वाक्य में दो में तुलना की जाती है, वहां उत्तरावस्था विशेषण होता है। शब्द के अंत में 'तर' प्रत्यय जुड़ जाता है।

जैसे– (अ) मोहन, सोहन की अपेक्षा कमजोर है।

(ब) सीता गीता से लंबी है।

उच्चतर, निम्नतर, लघुतर, गुरुतर, कटुतर।

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

(iii) उत्तमावस्था– जहां एक की तुलना अन्य सबसे की जाती है, वहां उत्तमावस्था विशेषण होता है। शब्द के अंत में तम' प्रत्यय जुड़ जाता है।

जैसे– (अ) मोहन ने कक्षा में अधिकतम अंक प्राप्त किए।

(ब) गीता परिवार में सबसे मेहनती है।

जैसे– उच्चतम, निम्नतम, लघुतम, गुरुतम, कटुतम।

नोट– (i) 'इष्ठ' प्रत्यय के साथ 'तम' प्रत्यय का प्रयोग वैयाकरणिक रूप से अशुद्ध होता है। जैसे– श्रेष्ठतम (अशुद्ध है।)

(ii) वाक्य में 'सबसे' के साथ 'तम' प्रत्यय का एक साथ प्रयोग वैयाकरणिक रूप से अशुद्ध होता है। जैसे– मोहन ने कक्षा मे सबसे अधिकतम अंक प्राप्त किए। (अशुद्ध है)

प्रविशेषण

जो शब्द विशेषण की भी विशेषता बताते हैं, उन्हें प्रविशेषण कहते हैं। जैसे– बहुत, अत्यन्त, अति, काफी

(अ) आम बहुत मीठा है।

(ब) सोहन अत्यन्त कमजोर है।

- वाक्य में विशेषण के प्रयोग के आधार पर विशेषण के भेद 2 होते हैं–

(i) **विशेष्य विशेषण–** जहां वाक्य में विशेषण शब्द विशेष्य (जिसकी विशेषता बताई जाती है) के पहले आता है, वहां विशेष्य विशेषण होता है। जैसे–

(अ) राम ने राजस्थानी (विशेषण) पगड़ी (विशेष्य) खरीदी।

(ब) आलसी (विशेषण) लड़का (विशेष्य) सो रहा है।

(ii) **विधेय विशेषण–** जहां वाक्य में विशेषण शब्द विशेष्य के बाद में आता है, वहां विधेय विशेषण होता है।

जैसे– लड़का (विशेष्य) आलसी (विशेषण) है।

1. संज्ञा से निर्मित विशेषण नहीं है–

(1) शारीरिक (2) भागना (3) नागरिक (4) नैतिक

2. निम्नलिखित में से संज्ञा शब्दों से निर्मित विशेषण चिन्हित कीजिए–

(1) भला (2) कायिक (3) वैसा (4) स्वकीय

3. 'शक्ति' शब्द से बनने वाला विशेषण है–

(1) शक्तिशाली (2) साक्त (3)सक्त (4) शक्तिम

4. निम्नलिखित में से कौनसा शब्द विशेषण नहीं है?

(1) मनुष्य (2) ग्रामीण (3) दैनिक (4) भारतीय

5. संज्ञा से निर्मित विशेषण नहीं है–

(1) धनी (2) हंसोड़ (3) धार्मिक (4) लालची

6. निम्नलिखित में से संज्ञा शब्द से बना विशेषण छांटिए–

(1) दुखी (2) बिकाऊ (3) भुलक्कड़ (4) हमारा

7. इनमें से किस विकल्प के सभी शब्द संज्ञा से बने विशेषण हैं ?

(1) पौराणिक, मानवीय, लखनवी (2) आलसी, पैतृक, लिखित

(3) वैवाहिक, भीतरी, पढ़ाकू (4) श्रमिक, विदेशी, बनावटी

8. कौनसा शब्द संज्ञा से बना हुआ विशेषण है ?

(1) सुखी (2) प्रसन्न (3) कटु (4) सुन्दर

9. 'बुद्धि और संसार' संज्ञा शब्दों में इक प्रत्यय जोड़ने से विशेषण शब्द बनेंगे–

(1) बुद्धिक, संसारीक (2) बोद्धिक, सांसारिक (3) बौद्धिक, सांसारिक (4) बुद्धि, संसार

10. विशेषण किसकी विशेषता बताते हैं ?

(1) संज्ञा (2) सर्वनाम (3) क्रिया (4) 1 व 2 दोनों

11. 'चौकोर' शब्द में कौनसा विशेषण है ?

(1) गुणवाचक विशेषण (2) परिमाणवाचक विशेषण (3) संख्यावाचक विशेषण (4) सार्वनामिक विशेषण

12. 'चौगुना' शब्द में कौनसा विशेषण है ?

(1) गुणवाचक विशेषण (2) परिमाणवाचक विशेषण (3) संख्यावाचक विशेषण (4) सार्वनामिक विशेषण

13. "सारे लड़के शोर मचा रहे हैं।" कौन–सा विशेषण हैं ?

(1) निश्चित संख्यावाचक विशेषण (2) अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण

(3) निश्चित परिमाण विशेषण (4) अनिश्चित परिमाण विशेषण

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

14. "थोड़ी मलाई देना।" वाक्य में कौनसा विशेषण है ?
(1) निश्चित संख्यावाचक विशेषण (2) अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण
(3) निश्चित परिमाणवाचक विशेषण (4) अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण

15. "कुछ आदमी पेड़ पर चढ़ गए।" वाक्य में कौनसा विशेषण है ?
(1) निश्चित संख्यावाचक विशेषण (2) अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण
(3) निश्चित परिमाणवाचक विशेषण (4) अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण

16. "तापमान 6^0 सेल्शियस बढ़ गया। " वाक्य में कौनसा विशेषण है ?
(1) निश्चित संख्यावाचक विशेषण (2) अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण
(3) निश्चित परिमाण वाचक विशेषण (4) अनिश्चित परिमाण विशेषण

17. "आज माँ ने बड़ा लजीज भोजन बनाया है?" वाक्य में कौनसा विशेषण है ?
(1) गुण वाचक विशेषण (2) संख्या वाचक विशेषण (3) परिमाण वाचक विशेषण (4) संकेतवाचक विशेषण

18. "गीता सबसे कुरूप है।" इस वाक्य में विशेषण की कौन–सी अवस्था है ?
(1) मूलावस्था (2) उत्तरावस्था (3) उत्तमावस्था (4) प्रथमावस्था

19. 'राधा बहुत सुंदर है', इस वाक्य में प्रविशेषण है ?
(1) सुंदर (2) राधा (3) बहुत (4) इनमें से काई नहीं

20. 'प्रधानमंत्री आवास पाँचवी मंजिल पर है', इस वाक्य में कौन–सा विशेषण है ?
(1) गुणवाचक (2) निश्चित संख्यावाचक (3) परिमाणवाचक (4) स्थानवाचक

21. निम्नांकित में विशेषण है–
(1) सुलेख (2) आकर्षक (3) खर्च (4) पौरुष

22. निम्नलिखित शब्दों में कौन–सा शब्द विशेषण है?
(1) सच्चा (2) मिठास (3) नम्रता (4) शीतलता

23. विशेषण के कितने भेद है–
(1) 5 (2) 4 (3) 6 (4) 7

24. जो विशेषण विशेष्य से पहले आते हैं, उन्हें क्या कहते हैं–
(1) विधेय विशेषण (2) विशेष्य विशेषण (3) दोनों (1 व 2) (4) विशेषण

25. 'आकार' का बोध कौनसा विशेषण कराता है–
(1) गुणवाचक विशेषण (2) परिमाणवाचक विशेषण (3) संख्यावाचक विशेषण (4) सार्वनामिक विशेषण

26. सार्वनामिक विशेषण का अन्य नाम कौनसा है–
(1) संदेहवाचक विशेषण (2) निर्देशक विशेषण (3) स्वदेशी विशेषण (4) सर्वदेशीय विशेषण

27. परिमाणवाचक विशेषण के कितने भेद है–
(1) 3 (2) 4 (3) 2 (4) 5

28. निश्चित संख्यावाचक विशेषण के मुख्यतः कितने भेद है–
(1) 4 (2) 6 (3) 5 (4) 8

29. मुझे तीन–चारसौ रुपये चाहिए।" वाक्य में कौनसा विशेषण है–
(1) निश्चित संख्या वाचक (2) अनिश्चित संख्या वाचक (3) निश्चित परिमाण वाचक (4) अनिश्चित परिमाण वाचक

30. 'जापानी लोग बहुत श्रमशील होते है' वाक्य में विशेषण है–
(1) परिमाण बोधक विशेषण (2) सार्वनामिक विशेषण (3) गुणवाचक विशेषण (4) इनमें से कोईनहीं

31. 'गर्म दूध पीना लाभदायक होता है' में कौनसा विशेषण है?
(1) संख्यावाचक विशेषण (2) गुणवाचक विशेषण (3) परिमाणवाचक विशेषण (4) सार्वनामिक विशेषण

32. किस क्रम में निश्चित परिमाणवाचक विशेषण है?
(1) एक एकड़ जमीन में धान की फसल खड़ी है। (2) कुछ आटा और मिलाओ।
(3) कोई व्यक्ति आया हुआ है। (4) उस पंखें को साफ करो

33. 'चाय में थोड़ा दूध मिलाओ' में किस शब्द में विशेषण है ?
(1) चाय (2) दूध (3) थोड़ा (4) मिलाओ

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

क्रिया

जो शब्द किसी कार्य के करने या होने का बोध कराते हैं उन्हें क्रिया कहते हैं।

क्रिया के भेद 2 हैं–

(i) **अकर्मक क्रिया–** जहां वाक्य में अर्थ स्पष्ट करने के लिए क्रिया को कर्म की आवश्यकता नहीं होती, वहां अकर्मक क्रिया होती है। अर्थात् जहां वाक्य में कर्म नहीं होता वहां अकर्मक क्रिया होती है।

जैसे– (अ) छोटे–छोटे बच्चे बात–बात पर रोते हैं।

(ब) राम विद्यालय जाता है।

(स) पक्षी उड़ते हैं।

(ii) **सकर्मक क्रिया–** जहां वाक्य में क्रिया को कर्म की आवश्यकता होती है अर्थात् जहां वाक्य में कर्म होता है वहां सकर्मक क्रिया होती है।

जैसे– (अ) मोहन पौधा लगाता है।

(ब) रोहन पतंग उड़ाता है।

(स) गणेश क्रिकेट खेलता है।

नोट– वाक्य में क्रिया से पहले 'क्या' शब्द लगाकर प्रश्न करने पर यदि वाक्य में से ही उत्तर की प्राप्ति हो जाती है तो क्रिया सकर्मक होती है और यदि उत्तर की प्राप्ति नहीं होती तो क्रिया अकर्मक होती है।

शब्द शुद्धि– कर्ता = कृ + ता

कर्त्तव्य = कृ + तव्य

तत्त्व = तत् + त्व

महत्त्व = महत् + त्व

शुरुआत, दम्पती, गुरु, रुद्र।

(iii) **द्विकर्मक क्रिया**

जहां वाक्य में दो कर्म होते हैं, वहां द्विकर्मक क्रिया होती है। यह सकर्मक क्रिया का उपभेद है। वाक्य में क्रिया से पहले 'क्या' शब्द लगाकर प्रश्न करने पर प्रत्यक्ष/मुख्य कर्म की प्राप्ति होती है, जो लगभग निर्जीव होता है तथा क्रिया से पहले किसे/किसको लगाकर प्रश्न करने पर अप्रत्यक्ष/गौण कर्म की प्राप्ति होती है। जो सजीव होता है।

क्या – क्रिया – ? – कर्म – प्रत्यक्ष (मुख्य) – निर्जीव

किसे/किसको – क्रिया – ? – कर्म – अप्रत्यय (गौण) – सजीव

इस क्रिया में संप्रदान कारक का प्रयोग (लगभग) होता है।

जैसे–

(i) पापा ने भैया को गेंद दिलवाई

(ii) लता ने मुझे चित्र दिखाया।

Q.1 अकर्मक क्रिया बताइएँ।

(1) वह रात भर सोती रही। (2) वह दिनभर खाता रहा। (3) वह ही सदा दुहता है। (4) उसी ने बोला था।

Q.2 सकर्मक क्रिया बताइए।

(1) छोटे–छोटे बच्चे बात–बात पर रोते हैं। (2) जंगली लोमड़ी भाग गई।

(3) आलसी बच्चे देर तक सोते हैं। (4) पापा ने मम्मी को फोन किया।

Q.3 सकर्मक क्रिया बताइए।

(1) तैरना (2) उठना (3) दौड़ना (4) पीना

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

नोट–

(i) वाक्य में क्रिया से पहले 'क्या' शब्द लगाकर प्रश्न करने पर यदि कल्पना शक्ति के आधार पर उस प्रश्न का कुछ न कुछ उत्तर निकल आता है तो क्रिया जन्म से सकर्मक होती है और यदि कुछ न कुछ उत्तर की प्राप्ति नहीं होती तो क्रिया जन्म से अकर्मक होती है।
यदि उत्तर में कर्ता की प्राप्ति होती है तो भी क्रिया अकर्मक होती है।

(ii) अकर्मक क्रिया के अंत में प्रत्यय लगाकर (आना, वाना) अकर्मक क्रिया को सकर्मक क्रिया में परिवर्तित किया जा सकता है।
जैसे– हँसाना, तैरवाना, मारना, दौड़ाना इत्यादि।

(iii) स्वतः होने वाली क्रियाएँ या प्रकृति द्वारा होने वाली क्रियाएँ सदैव अकर्मक होती है।
जैसे–
(अ) बूंद–बूंद से घड़ा भरता है। (ब) हवा चलती है (स) मेरा सिर खुजलता है (द) ठूंठ खड़ा है।

1. निम्नलिखित में से सकर्मक क्रिया किस वाक्य में है?
(1) रामू सदा रोता रहता है। (2) हरीश छत पर है। (3) माधव सोता है। (4) चंदन ने सब्जी खरीदी।

2. निम्नलिखित में से गलत विकल्प है–
(1) मोर नाचता है – अकर्मक क्रिया
(2) वह चतुर निकला – सकर्मक क्रिया
(3) वह कॉलेज से आकर सो गया – पूर्वकालिक क्रिया
(4) उसने आम खाया – सकर्मक क्रिया

3. निम्न में से सकर्मक क्रिया का उदाहरण चुनिए–
(1) **रमेश देर तक सोता है।** (2) **गीता हंस रही है।** (3) **पक्षी उड़ रहे हैं।** (4) **गगन आम खाता है।**

4. 'घोड़ा दौड़ रहा है' वाक्य में क्रिया है–
(1) **संयुक्त क्रिया** (2) **अकर्मक क्रिया** (3) **सकर्मक** (4) **पूर्वकालिक**

5. 'वह खाना खाकर सो गया' वाक्य में रेखांकित क्रिया है–
(1) सकर्मक (2) पूर्वकालिक (3) द्विकर्मक (4) अकर्मक

6. निम्नांकित किस वाक्य में पूर्वकालिक क्रिया का प्रयोग है ?
(1) मेघा भोजन कर रही है।
(2) **चिड़िया दाना चुग रही है।**
(3) **अंकिता खेलकर पढ़ने बैठेगी।**
(4) **मोहन पत्र लिखता रहा है।**

7. निम्नलिखित में से किस वाक्य में क्रिया सकर्मक रूप में है ?
(1) मछली तैरती है। (2) वे डूब गए। (3) वह नहाकर आया। (4) उसने आम खाया।

8. जिस क्रिया का फल कर्म पर न पड़कर कर्ता पर पड़ता है उसे कहते हैं–
(1) द्विकर्मक (2) प्रेरणार्थक (3) सकर्मक (4) अकर्मक

9. 'मोहन ने अविनाश को पढ़ाया' वाक्य में कौनसी क्रिया है ?
(1) **अकर्मक** (2) **सकर्मक** (3) **प्रेरणार्थक** (4) **संयुक्त क्रिया**

10. निम्नलिखित वाक्यों में से अकर्मक क्रिया का वाक्य है–
(1) लड़की गा रही है।
(2) राम गिलास से दूध पीता है।
(3) लड़का मैदान में फुटबाल खेल रहा है।
(4) लड़कियां चुपचाप पुस्तकें पढ़ रही हैं।

11. निम्नलिखित में किस वाक्य में सकर्मक क्रिया का प्रयोग हुआ है ?
(1) मैं तुम्हें युक्ति बतलाता हूं। (2) अनु ने फल खरीदे। (3) लड़का सोता है। (4) मोहन रोता है।

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

12. निम्नलिखित में से सकर्मक क्रिया वाले वाक्य का चयन कीजिए–

(1) **अब मैं क्या करूं ?** (2) **राधा अभी जयपुर होकर आई है।**

(3) **बन्दर केला खाता है।** (4) **सांप रेंगता है।**

13. 'राम पुस्तक पढ़ता है' में क्रिया है–

(1) सकर्मक (2) अकर्मक (3) संयुक्त (4) **पूर्वकालिक**

14. 'डाकिया चिट्ठी लाया' वाक्य में क्रिया का कौनसा भेद प्रयुक्त हुआ है ?

(1) **सकर्मक** (2) **अकर्मक** (3) **पूर्वकालिक** (4) **प्रेरणार्थक**

अकर्मक क्रियाएँ बताइए–

15. (1) मोहन खाता है (2) मछलियाँ तैर रही हैं (3) सोहन पढ़ता है (4) ये सभी

16. (1) तितलियाँ बागों में उड़ती हैं (2) सोहन फसल काटता है (3) मोहन पानी पीता है (4) ये सभी

17. (1) सोहन देखता है (2) राधा उठ गई (3) वह ही सदा दुहता है (4) ये सभी

18. (1) आशा प्रतिदिन दौड़ती है (2) राधा टी.वी. देखती है (3) रोहन दीवार रंगता है (4) ये सभी

19. (1) रोहन आता है (2) सीता स्वेटर बुनती है (3) वह दिनभर खाता रहा (4) ये सभी

20. 'माता ने बालक को वस्त्र पहनाए' वाक्य में कौनसी क्रिया है ?

(1) अकर्मक क्रिया (2) सकर्मक क्रिया (3) द्विकर्मक क्रिया (4) प्रेरणार्थक क्रिया

21. "मैं अनुराग को पत्र अवश्य लिखूँगी" वाक्य में कौनसी क्रिया है ?

(1) अकर्मक क्रिया (2) सकर्मक क्रिया (3) द्विकर्मक क्रिया (4) प्रेरणार्थक क्रिया

22. 'इयाना' प्रत्यय के योग से कौनसी क्रिया का निर्माण किया जा सकता है?

(1) प्रेरणार्थक क्रिया (2) द्विकर्मक क्रिया (3) नामधातु क्रिया (4) यौगिक क्रिया

23. रिद्म ने खेलकर दूध पी लिया, इस वाक्य में 'खेलकर' कौन–सी क्रिया है?

(1) सहायक (2) नाम बोधक (3) सकर्मक (4) पूर्वकालिक

24. वह खाना खाकर सो गया, इस वाक्य में कौन–सी क्रिया है ?

(1) सहायक (2) पूर्वकालिक (3) नामबोधक (4) इनमें से कोई नहीं

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

लिंग

लिंग का शाब्दिक अर्थ है 'चिह्न' अर्थात् जो शब्द स्त्री और पुरुष जाति का बोध कराते है, उन्हें लिंग कहते हैं।

लिंग के 2 भेद है–

(i) पुल्लिंग

(ii) स्त्रीलिंग

लिंग परिवर्तन के नियम–

(i) अकारान्त पुल्लिंग शब्दों के अंत में 'आ, ई, नी, आनी, इका' में से कोई एक प्रत्यय लगाकर शब्दों के लिंग में परिवर्तन किया जा सकता है।

- इका प्रत्यय का प्रयोग केवल अक' प्रत्यय के स्थान पर किया जाता है

अध्यापक – अध्यापिका

धावक – धाविका

छात्र – छात्रा

शिष्य – शिष्या

दास – दासी

मोर – मोरनी

हंस – हंसनी / हंसिनी

देवर – देवरानी

सेठ – सेठानी

नर – नारी

(ii) आकरान्त पुल्लिंग शब्दों में ई, इया, त्री, में से कोई एक प्रत्यय, लगाकर, शब्दों के लिंग में परिवर्तन किया जा सकता है।

- 'त्री' प्रत्यय का प्रयोग केवल 'ता' प्रत्यय के स्थान पर किया जाता है

नेता – नेत्री

दाता – दात्री

लड़का – लड़की

बूढ़ा – बुढ़िया

चूहा – चुहिया

दादा – दादी

(iii) 'वान (वान्)' प्रत्यय के स्थान पर 'वती' प्रत्यय लगाकर तथा 'मान (मान्)' प्रत्यय के स्थान पर 'मती' प्रत्यय लगाकर शब्दों के लिंग में परिवर्तन किया जा सकता है।

श्रीमान् – श्रीमती

भगवान – भगवती

आयुष्मान् – आयुष्मती

बुद्धिमान – बुद्धिमती

बलवान – बलवती

धनवान – धनवती

(iv) जाति बोधक शब्दो के अंत में 'इन' तथा आइन' प्रत्यय लगाकर शब्दों के लिंग में परिवर्तन किया जा सकता है।

माली – मालिन

पुजारी – पुजारिन

बाघ – बाघिन

नाग – नागिन

बाबू + आइन – बबुआइन

गुरु + आइन – गुरुआइन

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

लाला + आइन – ललाइन

हलवाई + आइन – हलवाइन

कुछ महत्त्वपूर्ण शब्दों के लिंग परिवर्तन–

a. सम्राट् – सम्राज्ञी

b. वीर – वीरांगना

c. महान् – महती

d. साधु – साध्वी

e. कवि – कवयित्री

f. साहब – साहिबा

g. विधुर – विधवा

h. विद्वान – विदुषी

i. साला – सलहज / सहलज

Note- (i) पद दोनों के लिए समान होते हैं

(ii) पशु–पक्षियों के लिंग में परिवर्तन नर तथा मादा द्वारा किया जाता है। जैसे– मादा मगरमच्छ

(iii) उभयलिंगी– जो शब्द स्त्री तथा पुरुष दोनों के लिए समान होता है, उन्हें उभयलिंगी शब्द कहते हैं।

1. स्त्रीलिंग शब्द है–

(1) रियासत (2) दिन (3) राष्ट्र (4) राज्य

2. निम्नलिखित में से कौन–सा शब्द पुल्लिंग है–

(1) कपट (2) सुंदरता (3) मूर्खता (4) निद्रा

3. निम्नलिखित शब्दों में स्त्रीलिंग शब्द कौनसा है–

(1) दरवाजा (2) घर (3) गैंडा (4) मकड़ी

4. हिंदी में शब्दों का लिंग निर्धारण किसके आधार पर होता है–

(1) संज्ञा (2) कारक (3) विशेषण (4) प्रत्यय

5. कौन–सा शब्द पुंल्लिंग है–

(1) मंजिल (2) दीवार (3) मर्यादा (4) दरवाजा

6. 'ठाकुर' का स्त्रीलिंग होगा–

(1) ठकुरानी (2) ठकुराइन (3) ठाकुरिन (4) इनमें से कोई नहीं

7. लाला का स्त्रीलिंग होगा–

(1) लाली (2) लालाइन (3) ललाइन (4) लल्ली

8. 'दही' शब्द है–

(1) पुंल्लिंग (2) नपुसकलिंग (3) स्त्रीलिंग (4) कोई नहीं

9. कौनसा शब्द स्त्रीलिंग है–

(1) सहारा (2) सूचीपत्र (3) सियार (4) परिषद्

10. इनमें से पुल्लिंग शब्द कौनसा है–

(1) देह (2) आचरण (3) अक्ल (4) अदालत

11. निम्नलिखित शब्दों में से स्त्रीलिंग शब्द का चयन कीजिए–

(1) स्थापना (2) स्वदेश (3) अध्याय (4) अपराध

12. कौनसा शब्द पुल्लिंग है–

(1) मंजिल (2) भरमार (3) मर्यादा (4) पुलिन्दा

13. निम्न में से स्त्रीलिंग है–

(1) बैल (2) पेड़ (3) नगर (4) पुरी

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

14. निम्न में से स्त्रीलिंग है–

(1) संतान (2) सवारी (3) आँख (4) उपरोक्त सभी

15. निम्न में से असत्य है–

(1) समूह–पुल्लिंग (2) भीड़–स्त्रीलिंग (3) सभा–पुल्लिंग (4) टोली–स्त्रीलिंग

16. निम्न में से पुल्लिंग शब्द है–

(1) शराब (2) दुकान (3) अध्याय (4) उपरोक्त सभी

17. लिंग रूपान्तरण के संबंध में निम्न में से असत्य है–

(1) नाती–नातिन (2) अहीर–अहीरिन (3) रीछ–रीछनी (4) कमेटी–सभा

18. निम्न में से उभयलिंग शब्द है–

(1) शेर (2) अध्यापक (3) राष्ट्रपति (4) राजा

19. 'खान' का स्त्रीलिंग है–

(1) खान (2) खानी (3) खानम (4) खानिया

20. 'रुद्राणी' स्त्रीलिंग शब्द है–

(1) रुद्राक्ष का (2) रुद्र का (3) रौद्र का (4) रुद्रम का

21. शूद्र का स्त्रीलिंग होगा–

(1) शूद्रक (2) शूद्रिका (3) शूद्रा (4) शूद्री

22. 'सुता' का पुल्लिंग शब्द है–

(1) सूत्र (2) सुत (3) सूत (4) सुतम

23. निम्न में से सत्य है–

(1) डाकू–डाकिन (2) भेड़–भेड़िया (3) साँड–साँडनी (4) युवक–युवती

24. सही पुल्लिंग – स्त्रीलिंग शब्द है–

(1) प्रौढ़–प्रौढ़ा (2) भावज–भौजाई (3) कौवा–कौवी (4) राक्षस–राक्षसी

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

वचन

जो शब्द एक या अनेक होने का बोध कराते हैं उन्हें वचन कहते हैं। वचन के भेद 2 हैं– (i) एक वचन (ii) बहुवचन

(i) हमेशा एकवचन में ही प्रयुक्त होने वाले शब्द– जनता, आग, पानी, हवा, आकाश, धरती, प्रकाश, ईश्वर, आत्मा, वर्षा (लगभग व्यक्तिवाचक संज्ञा के शब्द जैसे– रामायण, आगरा, ताजमहल) तथा भाववाचक संज्ञा के शब्द।

(ii) हमेशा बहुवचन में प्रयुक्त होने वाले शब्द–दर्शन, आँसू, हस्ताक्षर, प्राण, अनेक, लोग, बाल।

(अ) आदर तथा सम्मान वाले शब्दों में सदैव बहुवचन का प्रयोग किया जाता है।

जैसे– पिता जी आ रहे हैं।
गुरु जी पढ़ा रहे हैं।
माता जी भोजन पका रही हैं।

है – एकवचन

हैं – बहुवचन

(ब) अधिकार तथा अभिमान में सदैव बहुवचन का प्रयोग किया जाता है अर्थात् 'मैं' के स्थान पर 'हम' का प्रयोग

जैसे– नेताजी ने कहा, ''हम आपकी समस्या पर विचार करेंगे।''

(स) 'तू' के स्थान पर 'तुम' का प्रयोग

'तू' का प्रयोग निम्नलिखित परिस्थितियों में किया जाता है।

अ. अपने से छोटों के लिए

ब. घनिष्ठ मित्रों के लिए

स. भगवान के लिए

द. क्रोध में या लड़ाई में या अपमान में तिरस्कार

- इन परिस्थितियों के अलावा अन्य सभी के लिए 'तुम' का प्रयोग किया जाता है।

वचन परिवर्तन के नियम

पुल्लिंग शब्दों के वचन परिवर्तन के नियम

नियम–1

आकारांत पुल्लिंग शब्दों के अंत में 'ए' लगाकर शब्दों के वचन में परिवर्तन किया जा सकता है। परंतु यह नियम पद सूचक तथा संबंध सूचक शब्दों पर लागू नहीं होता है। (आदर तथा सम्मान वाले शब्द)

जैसे– दरोगा, मामा, काका, चाचा, दादा इत्यादि।

लड़का – लड़के

बच्चा – बच्चे

दरवाजा – दरवाजे

बेटा – बेटे

पोता – पोते

तोता – तोते

नियम–2

अकारांत, इकारांत, ईकारांत तथा उकारांत, ऊकारांत पुल्लिंग शब्दों के दोनों वचन समान होते हैं। परन्तु गण, वृंद, जन केवल सजीव शब्दों के साथ जुड़कर बहुवचन बना सकते हैं।

जैसे–

कवि	कवि	कविगण
बालक	बालक	बालकगण
गुरु	गुरु	गुरुजन
घर	घर	
बर्तन	बर्तन	
पक्षी	पक्षी	पक्षिवृंद
पाठक	पाठक	पाठकगण
पेड़	पेड़	
अधिकारी	अधिकारी	अधिकारीगण
प्रश्न	प्रश्न	

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

- **स्त्रीलिंग शब्दों के वचन परिवर्तन के नियम**

1. अकारानत स्त्रीलिंग शब्दों के अंत में 'एँ' लगाकर शब्दों के वचन में परिवर्तन किया जा सकता है।
   दीवार – दीवारें
   भेड़ – भेड़ें
   गेंद – गेंदें
   आँख – आँखें
   पुस्तक – पुस्तकें
2. इकारान्त, ईकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के अंत में याँ जोड़कर शब्दों के वचन में परिवर्तन किया जा सकता है।
   तिथि – तिथियाँ
   नदी – नदियाँ
   थाली – थालियाँ
   प्रति – प्रतियाँ
   जाति – जातियाँ
   इकाई – इकाइयाँ
   ऊंचाई – ऊंचाइयाँ
   बुराई – बुराइयाँ
3. इया स्त्रीलिंग शब्दों के अंत में ँ (चंद्र बिंदु) लगाकर शब्दों के वचन में परिवर्तन किया जा सकता है (इया–ँ)
   चिड़िया – चिड़ियाँ
   बुढ़िया – बुढ़ियाँ
   डिबिया – डिबियाँ
4. आ, उ, ऊ – एँ
   आकारान्त तथा उकारान्त, ऊकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के अंत में 'एँ' जोड़कर शब्दों के वचन में परिवर्तन किया जा सकता है।
   उदाहरण– परीक्षा – परीक्षाएँ
   शाला – शालाएँ
   महिला – महिलाएँ
   वधू – वधुएँ
   वस्तु – वस्तुएँ
   ऋतु – ऋतुएँ

   नोट– शब्दों के वचन बदलते समय उनके अंत में 'ओं' तथा 'यों' प्रत्यय का प्रयोग नहीं करना चाहिए। क्योंकि इनके द्वारा केवल कारक विभक्ति युक्त शब्दों के वचन में परिवर्तन किए जाते हैं।
5. कारक विभक्ति युक्त शब्दों के वचन परिवर्तन के नियम–
   1. अ, आ, उ, ऊ = ओं
   2. इ, ई = यों

   कारक विभक्ति रहित वाक्य
   (i) बालक खाना खाते हैं।
   (ii) कवि कविता लिखते हैं।
   (iii) प्रश्न पूछें।
   (iv) फूल खिल गए।

   कारक विभक्ति से युक्त वाक्य
   (i) बालकों ने खाना खाया।
   (ii) कवियों से कहना।
   (iii) प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
   (iv) फूलों की वादियाँ।

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

1. 'धोबी' शब्द का बहुवचन है–

(1) धोबियाँ (2) धोबिएँ (3) धोबी (4) उक्त कोई नहीं

2. निम्न में से एकवचन है–

(1) चाँदी (2) सोना (3) क्रोध (4) उक्त सभी

3. निम्न में सही नहीं है–

एकवचन		**बहुवचन**
(1) चुहिया	–	चुहियाँ
(2) घर	–	घर
(3) घंटा	–	घंटाएँ
(4) देवता	–	देवताओं

4. निम्न में से असुमेलित है–

एकवचन		**बहुवचन**
(1) समाचार	–	समाचार
(2) जाति	–	जातियाँ
(3) परीक्षा	–	परीक्षाएँ
(4) इच्छा	–	इच्छा

5. गण का बहुवचन है–

(1) गणों (2) गणी (3) गणियां (4) गण

6. निम्न में से गलत कथन छाँटिए–

(1) कलमी आमों में मिठास। (2) सोना बहुत महंगा है।

(3) बालक सो गएँ। (4) जनता मंहगाई सहन कर रही है।

7. निम्न में से सही नहीं है–

(1) जाति–जातीयाँ (2) लिपि–लिपियाँ (3) नीति–नीतियाँ (4) बहु–बहुएँ

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

अविकारी शब्द (अव्यय)

1. **क्रिया–विशेषण–** जो शब्द क्रिया शब्दों की विशेषता बताते हैं, उन्हें क्रिया विशेषण कहते हैं। जैसे–
   (i) राम धीरे बोलता है। (ii) सोहन यहां आओ। (iii) रोहन सुबह आएगा। (iv) वह चुपके से चला गया।
   क्रिया विशेषण के 4 भेद हैं–

(i) स्थान वाचन क्रिया विशेषण– जो शब्द क्रिया के स्थान का बोध कराते हैं, उन्हें स्थान वाचक क्रिया विशेषण कहते हैं।

- वाक्य में क्रिया से पहले 'कहां' शब्द लगाकर प्रश्न करने पर स्थान की प्राप्ति होती है।
  जैसे– यहां, वहां, दाएं, बाएं, इधर, उधर, सामने, ऊपर, नीचे, बाहर, भीतर, पास, दूर इत्यादि।

(ii) काल वाचक क्रिया विशेषण– जो शब्द क्रिया के समय का बोध कराते हैं, उन्हें काल वाचक क्रिया विशेषण कहते हैं।

- वाक्य में क्रिया से पहले 'कब' शब्द लगाकर प्रश्न करने पर काल की प्राप्ति होती है।
  जैसे– आज, कल, सुबह, शाम, दुपहर, अभी, तभी, जभी, लगातार इत्यादि।

(iii) रीति वाचक क्रिया विशेषण– जो शब्द क्रिया की स्थिति का बोध कराते हैं, उन्हें रीति वाचक क्रिया विशेषण कहते हैं।

- वाक्य में क्रिया से पहले 'कैसे' शब्द लगाकर प्रश्न करने पर रीति की प्राप्ति होती है।
  जैसे– धीरे, तेज, चुपचाप, अच्छी तरह, शायद, जरूर, ऐसे, न, नहीं, मत, हाँ, सचमुच, इसलिए इत्यादि।

(iv) परिमाण वाचक क्रिया विशेषण– जो शब्द क्रिया की मात्रा का बोध कराते हैं, उन्हें परिमाण वाचक क्रिया विशेषण कहते हैं।

- वाक्य में क्रिया से पहले 'कितना' शब्द लगाकर प्रश्न करने पर परिमाण की प्राप्ति होती है।
  जैसे– थोड़ा, बहुत, इतना, कम, ज्यादा इत्यादि।

समुच्चय बोधक अव्यय

परिभाषा– जो अव्यय शब्द दो पदों या उपवाक्यों को जोड़ने का कार्य करते हैं, उन्हें समुच्चय बोधक अव्यय कहते हैं।
इसके मुख्यतः 5 भेद हैं–

1. **संयोजक–** संयोजन का कार्य करने वाले अव्यय शब्द।
   जैसे– और, एवं, तथा।
2. **विभाजक–** विभाजन का कार्य करने वाले अव्यय शब्द।
   जैसे– या, अथवा।
3. **प्रतिषेधक–**दो पदों या उपवाक्यों के मध्य विरोध व्यक्त करने वाले अव्यय शब्दों को प्रतिषेधक अव्यय कहते हैं।
   जैसे– पर, परंतु, किन्तु, मगर, बल्कि, लेकिन।
4. **निर्देशक–** निर्देशन का कार्य करने वाले अव्यय शब्द।
   जैसे– अर्थात्, यानि।
5. **हेतुक–** हेतु का शाब्दिक अर्थ है– 'कारण' अर्थात् कारण बताने वाले अव्यय शब्द।
   जैसे– फलतः फलस्वरूप, इसलिए, अतः।

संबंध बोधक अव्यय

- संज्ञा व सर्वनाम शब्दों का संबंध वाक्य के अन्य शब्दों विशेषकर क्रिया से बताने वाले अव्यय शब्दों को संबंध बोधक अव्यय कहते हैं।
  जैसे– का, के, की, के लिए, के द्वारा, में, पर इत्यादि।

विस्मयादि बोधक अव्यय

जो अव्यय शब्द, हर्ष, शोक, घृणा, आश्चर्य, क्रोध इत्यादि।
मनोभावों को अभिव्यक्त करते हैं, उन्हें विस्मयादि बोधक अव्यय कहते हैं।
जैसे– अरे! आह! उफ! ओह! वाह! शाबाश! छिः! हैं! ऐ! धिक!

- **निपात–** जो अव्यय शब्द वाक्य में किसी शब्द के साथ जुड़कर या लगकर उस पर बल डालते हैं तथा उसके पूरे अर्थ में परिवर्तन कर देते हैं, या उसे एक सीमा में बांध देते हैं, उन्हें 'निपात' कहते हैं।
  जैसे– ही, भी, तो, तक, मात्र, भर, केवल।

- (i) तुम सुबह तक आ जाना। (ii) मुझे मात्र 100 रु. चाहिए।
  (iii) राम ही चावल खाता है। (iv) राम भी चावल खाता है।
  अभी – अब + ही
  तभी – तब + ही
  जभी – जब + ही
  कभी – कब + ही

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

वर्ण विचार

परिभाषा– ध्वनि के लिखित रूप को अथवा लिपि चिह्नों को वर्ण कहते हैं। वर्ण के 2 भेद है–

(i) **स्वर–** जिस ध्वनि के उच्चारण में वायु मुख–विवर (जीभ, होठ, तालु) तथा स्वर यंत्र (कंठ) से निर्बाधित बाहर निकल जाती है, उसे स्वर कहते हैं। अथवा स्वतंत्र रूप से उच्चरित ध्वनि स्वर कहलाती है।

- स्वर कुल 11 होते हैं।
- अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ

(1) ह्रस्व (लघु।)– अ, इ, उ, ऋ

(2) दीर्घ (गुरु S) आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, और।

गृहीत – ग्रह + ईत

संग्रह – सम् + ग्रह

अनुग्रह – अनु + ग्रह

ग्रहण –

विसर्ग (:) – यह मूलतः संस्कृत की ध्वनि है। इसका प्रयोग केवल संस्कृत के शब्दों में किया जाता है।

जैसे– अन्तःकरण, प्रातःकाल, दुः ख।

अनुस्वार– जिस ध्वनि, के उच्चारण में वायु नाक के द्वारा बाहर निकल जाती है, उसे अनुस्वार कहते हैं।

जैसे– संयोग, संयम, संहार, अंग इत्यादि।

अनुनासिक– जिस ध्वनि के उच्चारण में वायु नाक तथा मुँह दोनों से बाहर निकल जाती है, उसे अनुनासिक कहते हैं। इसे (ँ) चंद्रबिंदु भी कहते हैं।

- शिरोरेखा पर मात्रा में यह केवल (•) बिंदु के रूप में लिखा जाता है।

जैसे– नहीं, मैं, ऊँघना, आँचल, रातें, दीवारें, आँगन

(ii) **व्यंजन–** जिस ध्वनि के उच्चारण के वायु मुख–विवर तथा स्वर यंत्र से बाधित होती हुई बाहर निकलती है, उसे व्यंजन कहते हैं।

- व्यंजन स्वरों के अधीन होते हैं तथा स्वर व्यंजन में मात्रा के रूप में जुड़ते हैं।
- व्यंजन कुल 33 होते हैं–

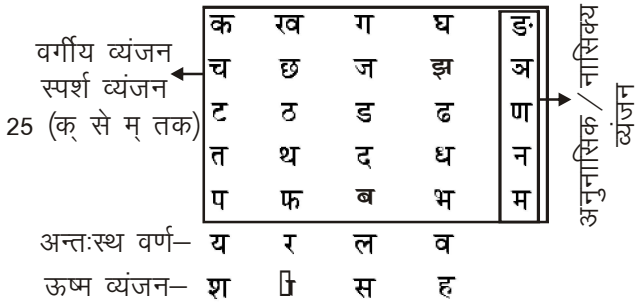

ड़ ढ़ – द्विगुण / उत्क्षिप्त व्यंजन

नोट– (i) वर्गीय व्यंजन (ड, ढ) का प्रयोग शब्द के शुरू में किया जाता है, जबकि द्विगुण (ड़ ढ़) व्यंजनों का प्रयोग शब्द के बीच में या अंत में किया जाता है। परंतु कुछ परिस्थितियों में वर्गीय ड ढ का प्रयोग शब्द के बीच में या अंत में भी किया जाता है।

जो निम्नलिखित है–

(i) द्वित्व वर्णों में– जैसे– अड्डा, खड्डा, गुड्डा, कबड्डी, टिड्डा

(ii) अंग्रेजी शब्दों में– रेडियम, रेडिओ, राडार, रोड।

(iii) यदि इन वर्णों के तुरंत पहले उपसर्ग आए जैसे– निडर, सुडौल।

(iv) यदि इन वर्णों के तुरंत पहले इनके ही वर्ग का 5वां वर्ण आए जैसे– अंडा, टिंडा, झंडा, भिंडी, भटिंडा

- **स्वर तंत्रियों में कंपन्न के आधार पर व्यंजनों का वर्गीकरण–** 2 प्रकार से किया जाता है–

(i) घोष / सघोष– जिनके उच्चारण में कंपन्न पैदा होता है, उन्हें घोष / सघोष व्यंजन कहते हैं। घोष का शाब्दिक अर्थ है नाद'।

– प्रत्येक वर्ग का 3, 4, 5वाँ वर्ण य, र, ल, व, ह, तथा सभी स्वर इसमें आते हैं।

(ii) अघोष– जिनमें कंपन्न पैदा नहीं होता है, उन्हें अघोष व्यंजन कहते हैं।

जैसे– प्रत्येक वर्ग का 1, 2 वर्ण, श, ष, स इसमें आते हैं।

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

• **संयुक्त व्यंजन–** दो व्यंजनों के मेल से बने व्यंजनों को संयुक्त व्यंजन कहते हैं। ये कुल 4 होते हैं–

क्ष – क् + ष
त्र – त् + र
ज्ञ – ज् + ञ
श्र – श् + र

नोट– 'र' 4 प्रकार से लिखे जाते हैं, जिनमें से एक 'र' आधा (र्क) रेफ तथा 3 'र' पूरे होते हैं–

1	2	3	4
र	क्र	र्क	ट्र
	क् + र	र् + क	ट् + र
क्रम		कर्म	ट्रक

1. निम्नलिखित में से अयोगवाह ध्वनि किसे कहा जाता है ?
(1) अनुस्वार (2) अल्पप्राण (3) घोष (4) महाप्राण

2. व, फ किस प्रकार के वर्ण हैं –
(1) दन्तोष्ठ्य (2) अनुनासिक (3) तालव्य (4) कंठोष्ठ

3. ध्वनि किसकी लघूत्तम इकाई है ?
(1) शब्द (2) भाषा (3) वर्ण (4) अक्षर

4. इनमें से कौन सा स्पर्श व्यंजन है ?
(1) क वर्ग (2) प वर्ग (3) त वर्ग (4) ये सभी

5. 'क' कौन–सा व्यंजन है ?
(1) तालव्य (2) दंत्य (3) मूर्धन्य (4) कंठ्य

6. उच्चारण स्थान की दृष्टि से 'क–वर्ग' के सभी वर्ण क्या कहलाते हैं ?
(1) तालव्य (2) कंठ्य (3) मूर्धन्य (4) दंत्य

7. निम्नलिखित ध्वनियों में से कौन–सा वर्ण ओष्ठ्य नहीं है ?
(1) म (2) प (3) फ (4) ञ

8. निम्नलिखित ध्वनियों में से कौन–सा वर्ण ओष्ठ्य है ?
(1) ट (2) ब (3) त (4) ञ

9. निम्नलिखित वर्णों में कौन–सा मूर्धन्य है ?
(1) च (2) ज (3) ट (4) झ

10. निम्नलिखित वर्णों में कौन–सा मूर्धन्य है ?
(1) श (2) ज (3) ष (4) द

11. निम्नलिखित में कौन–सा वर्ण महाप्राण है ?
(1) क (2) ख (3) ग (4) ड़

12. निम्नलिखित में कौन–सा वर्ण महाप्राण है ?
(1) य (2) थ (3) च (4) न

13. निम्नलिखित में संयुक्त व्यंजन कौन–से हैं ?
(1) य,र,ल,व (2) श,स,ष,ह (3) क्ष,त्र,ज्ञ,श्र (4) क्ष,त्र,ज्ञ,द्य

14. निम्नलिखित में से कौन–सा वर्ण नासिक्य है ?
(1) ञ (2) क्ष (3) छ (4) ष

15. निम्नलिखित में से कौन–सा वर्ण नासिक्य है ?
(1) म (2) झ (3) छ (4) श

16. 'च, छ, ज, झ, ञ' ध्वनियाँ क्या कहलाती हैं ?
(1) कंठ्य (2) मूर्धन्य (3) तालव्य (4) दन्तोष्ठ

17. 'ट,ठ,ड,ढ,ण' ध्वनियाँ क्या कहलाती हैं?
(1) कंठ्य (2) मूर्धन्य (3) तालव्य (4) दन्तोष्ठ

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

18. 'च, छ, ज,झ' ध्वनियाँ क्या कहलाती हैं ?

(1) स्पर्श व्यंजन (2) स्पर्श संघर्षी (3) संघर्षी व्यंजन (4) ये सभी

19. निम्न में से 'अल्पप्राण' वर्ण कौन–से हैं ?

(1) क, ग (2) ट, ठ (3) ब, भ (4) थ, छ

20. निम्न में से 'अल्पप्राण' वर्ण कौन–से हैं ?

(1) च, झ (2) ट, ढ (3) प, भ (4) त, द

21. निम्न में से 'तालव्य' ध्वनियाँ कौन–सी हैं ?

(1) प, फ, ब, भ (2) क, ख, ग, घ (3) च, छ, ज, झ (4) त, थ, द, ध

22. व्यंजन कुल कितने हैं ?

(1) 11 (2) 45 (3) 33 (4) 50

23. निम्न में से घोष वर्ण कौन–सा है ?

(1) थ (2) ज (3) च (4) ट

24. निम्न मे से घोष वर्ण कौन–से हैं ?

(1) त, थ (2) ग, घ (3) च, छ (4) क, ग

25. हिन्दी वर्णमाला में मूल स्वर कितने हैं ?

(1) 6 (2) 3 (3) 4 (4) 2

26. निम्न में से महाप्राण वर्ण कौन–से हैं ?

(1) श, ष (2) क, च (3) य, र (4) त, द

27. 'छ', 'झ' किस प्रकार के व्यंजन हैं ?

(1) स्पर्श संघर्षी (2) पार्श्विक (3) संघर्षी (4) लुंठित

28. शब्दकोश में कौन–सा शब्द सबसे पहले आएगा

(1) काम (2) काग (3) काँच (4) कालिख

29. हिंदी वर्णमाला में अयोगवाह ध्वनियों की संख्या है –

(1) 4 (2) 3 (3) 2 (4) 6

30. 'ओ' का उच्चारण होता है–

(1) कंठतालव्य (2) दंत्य (3) दंतोष्ठ्य (4) कंठोष्ठ्य

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

संधि

परिभाषा – दो वर्णों के मेल से उत्पन्न विकार को संधि कहते हैं। संधि के 3 भेद हैं–

(1) स्वर संधि

(2) व्यंजन संधि

(3) विसर्ग संधि

(1) स्वर संधि–

परिभाषा– दो स्वरों के मेल से उत्पन्न विकार को स्वर संधि कहते हैं।

स्वर संधि के 5 भेद हैं–

(i) दीर्घ संधि

(ii) गुण संधि

(iii) वृद्धि संधि

(iv) यण् संधि

(v) अयादि संधि

(i) दीर्घ संधि– दो समान स्वरों के मेल से उत्पन्न विकार को दीर्घ संधि कहते हैं।

अ, आ, इ, ई, उ, ऊ + अ, आ, इ, ई, उ, ऊ = आ, ई, ऊ

अ + अ – आ

अ + आ – आ

आ + अ – आ

आ + आ – आ

हिमालय = हिम + आलय

इ + इ – ई

इ + ई – ई

ई + इ – ई

ई + ई – ई

गिरीश = गिरि + ईश

उ + उ – ऊ

उ + ऊ – ऊ

ऊ + उ – ऊ

ऊ + ऊ – ऊ

भूर्जा = भू + ऊर्जा

(ii) गुण संधि– अ, आ + इ, ई, उ, ऊ, ऋ = ए, ओ, अर्

अ, आ + इ, ई – ए

दिनेश = दिन + ईश

अ + ई = ए

दिनेश

अ, आ + उ, ऊ = ओ

वनोत्सव = वन + उत्सव

अ + उ = ओ

अ, आ + ऋ = अर्

महर्षि = महर्षि

महा + ऋषि

आ + ऋ = अर्

महर्षि

(iii) वृद्धि संधि– अ, आ + ए, ऐ, ओ, औ = ऐ, औ, अ, अ, आ + ए, ऐ = ऐ

सदैव = सदा + एव

आ + ए – ऐ

अ, आ + ओ, औ = औ

महौषधि = महा + औषधि

आ + औ – औ

(iv) यण् संधि– इ, ई, उ, ऊ, ऋ + कोई भी असमान स्वर = य्, व्, र्

अत्यावश्यक = अति + आवश्यक

इ + आ = या

अत्यावश्यक

वध्वागमन = वधू + आगमन

ऊ + आ = वा

मात्राज्ञा = मात्राज्ञा

मातृ + आज्ञा

ऋ + आ = रा

मात्राज्ञा (मात्राज्ञा)

पित्रनुमति = पितृ + अनुमति

ऋ + अ = र

पित्रनुमति

(v) अयादि संधि– ए, ऐ, ओ, औ + कोई भी स्वर

= अय्, आय्, अव्, आव्

नयन = ने + अन

ए + अ = अय–नयन

पवित्र = पो + इत्र

ओ + इ = अवि–पवित्र

नाविक = नौ + इक

औ + इ = आवि

नाविक

स्वर संधि के अपवाद

1. पूर्वाह्ण = पूर्व + अह्न
2. प्रौढ़ = प्र + ऊढ़
3. अक्षौहिणी = अक्ष + ऊहिनी
4. स्वैरिणी = स्व + ईरिणी
5. उपदेष्ट = उप + दिष्ट
6. शुद्धोदन = शुद्ध + ओदन
7. दंतोष्ठ = दंत + ओष्ठ
8. गवाक्ष = गो + अक्ष
9. गवेन्द्र = गो + इन्द्र
10. गव्य = गो + य

नियम– ऋ, ष (ष्), र (र्) + न = ण

रामायण – राम + अयन

प्राँगण – प्र + आँगन

स्वर संधि के उदाहरण

त्र्यंबक = त्रि + अंबक (नेत्र) = यण् संधि

विनायक = विनै + अक = अयादि संधि

जनार्दन = जन + अर्दन (पीड़ा) = दीर्घ संधि

कुशासन = कुश + आसन = दीर्घ संधि

नय = ने + अ = अयादि संधि

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

भाव	= भौ + अ = अयादि संधि
दायिनी	= दै + इनी = अयादि संधि
स्वागत	= सु + आगत = यण् संधि
स्वल्प	= सु + अल्प = यण् संधि
स्वाधीन	= स्व + अधीन = दीर्घ संधि
महीश	= मही + ईश = दीर्घ संधि
गवीश	= गोव + ईश = दीर्घ संधि
विधायक	= विधै + अक = अयादि संधि
मात्रुपदेश	= मातृ + उपदेश = यण् संधि
पित्रानंद	= पितृ + आनंद = यण् संधि
स्वच्छ	= सु + अच्छ = यण् संधि
स्वेच्छा	= स्व + इच्छा = गुण संधि
स्वैच्छिक	= स्व + ऐच्छिक = वृद्धि संधि
भावुक	= भौ + अक = अयादि संधि
शायक	= शै + अक = अयादि संधि
चयन	= चे + अन = अयादि संधि
पित्रुपदेश	= पितृ + उपदेश = यण् संधि
मात्रानंद	= मातृ + आनंद = यण् संधि
स्वस्ति	= सु + अस्ति = यण् संधि
स्वस्त्ययन	= स्वस्ति + अयन = यष्ट संधि
पुत्रैषणा	= पुत्र + एषणा = वृद्धि संधि
हितैषी	= हित + एषी = वृद्धि संधि
सख्यैश्वर्य	= सखी + ऐश्वर्य = यण् संधि
शावक	= शौ + अक = अयादि संधि
नायिका	= नै + इका = अयादि संधि
श्रावण	= श्रौ + अन = अयादि संधि
परीक्षा	= परि + ईक्षा = दीर्घ संधि
अभयारण्य	= अभय + अरण्य = दीर्घ संधि
अभ्यर्थी	= अभि + अर्थी = यण् संधि
अभ्युदय	= अभि + उदय = यण् संधि
अन्वय	= अनु + अय = यण् संधि
अधीक्षक	= अधि + ईक्षक = दीर्घ संधि
पर्यंत	= परि + अंत = यण् संधि
पर्यटन	= परि + अटन = यण् संधि
अध्ययन	= अधि + अयन = यण् संधि
शुभैषी	= शुभ + एषी = वृद्धि संधि
परीक्षक	= परि + ईक्षक = यण् संधि
मतैक्य	= मत + ऐक्य = वृद्धि संधि
वर्षर्तु	= वर्षा + ऋतु = गुण संधि
देवर्षि	= देव + ऋषि = गुण संधि
गंगोर्मि	= गंगा + ऊर्मि = गुण संधि
अन्त्येष्टि	= अन्त्य + इष्टि = गुण संधि
प्रत्यर्पण	= प्रति + अर्पण = यण् संधि
मध्वरी	= मधु + अरि = यण् संधि
छात्रावास	= छात्र + आवास = दीर्घ संधि
प्रेरणास्पद	= प्रेरणा + आस्पद = दीर्घ संधि

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

हिमांचल = हिम + अंचल = दीर्घ संधि
नीलाम्बर = नील + अम्बर = दीर्घ संधि
जलौघ = जल + ओघ (प्रवाह) = वृद्धि संधि
जलौक = जल + ओक = वृद्धि संधि
अभ्यन्तर = अभि + अन्तर = यण् संधि
शयन= शे + अन = अयादि संधि
श्रवण= श्रो + अन = अयादि संधि
विचारैक्य = विचार + ऐक्य = वृद्धि संधि
हृषिकेश = हृषीक + ईश = गुण संधि
कमलेश = कमला + ईश = गुण संधि
राकेश = राका + ईश = गुण संधि
उपर्युक्त = उपरि + उक्त = गुण संधि
भावना = भो + अन = अयादि संधि
देव्यर्पण = देवी + अर्पण = यष्ट संधि
दृश्यावली = दृश्य + अवली = दीर्घ संधि
अभीप्सा = अभि + ईप्सा = दीर्घ संधि
महैश्वर्य = महा + ऐश्वर्य = वृद्धि संधि
भवन = भो + अन = अयादि संधि
कारावास = कार / कारा + आवास = दीर्घ संधि

2. व्यंजन संधि

परिभाषा– व्यंजन के बाद स्वर तथा व्यंजन के मेल से उत्पन्न विकार को व्यंजन संधि कहते हैं।

नियम–1

यदि अघोष व्यंजन के आगे घोष व्यंजन आए तो अघोष व्यंजन घोष व्यंजन में परिवर्तित हो जाता है अर्थात् किसी वर्ग के प्रथम वर्ण के आगे घोष वर्ण आए तो प्रथम वर्ण अपने वर्ग के तीसरे (3) वर्ण में परिवर्तित हो जाता है।

जैसे–

क, + 3, 4, 5, य, र, ल, व, ह, सभी स्वर = ग्
च् + ज्
ट् + ड्
त् + द्
प् + ब्

षडानन = षट् + आनन
अब्ज = अप् + ज
उद्योग = उत् + योग
चिद्रूप = चित् + रूप
सदुपदेश = सत् + उपदेश
तदुपरान्त = तत् + उपरान्त
दिग्गज = दिक् + गज
वाग्जाल = वाक् + जाल
वाग्दान = वाक् + दान
दिग्ज्ञान = दिक् + ज्ञान
अब्द = अप् + द
तद्रूप = तत् + रूप
उद्यान = उत् + यान
जगदीश = जगत् + ईश
वागीश = वाक् + ईश
दिग्भ्रम = दिक् + भ्रम
सदिच्छा = सत् + इच्छा

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

नियम–2

यदि अघोष व्यंजन के आगे अनुनासिक व्यंजन आए तो अघोष व्यंजन अनुनासिक व्यंजन में परिवर्तित हो जाते हैं। अर्थात् किसी वर्ग के प्रथम वर्ण के आगे अनुनासिक वर्ण आए तो प्रथम वर्ण अपने वर्ग के अनुनासिक में परिवर्तित हो जाता है।

क + ङ, ञ, ण, न, म = ङ्
च् + ञ्
ट् + ण्
त् + न्
प् + म्

वाङ्मय = वाक् + मय
जगन्नाथ = जगत् + नाथ
षण्मुख = षट् + मुख
चिन्मय = चित् + मय
सन्मार्ग = सत् + मार्ग
सन्नारी = सत् + नारी
दिङ्मूढ़ = दिक् + मूढ़
विद्युन्माला = विद्युत् + माला
षण्नाम(षण्णाम) = षट् + नाम

नियम–3

यदि त् द् के बाद च छ में से कोई वर्ण आए तो त् द् च में परिवर्तित हो जाते हैं और यदि ज, झ आए तो ज् में ट ठ आए तो ट् में ड, ढ आए तो ड् में और यदि ल आए तो ल् में परिवर्तित हो जाता है।

त् + च, छ – च्
त् + ज – ज्
त् + ट – ट्
त् + ड – ड्
त् + ल – ल्

उज्ज्वल = उत् + ज्वल
सच्चिदानंद = सत् + चित् + आनंद
सज्जन = सत् + जन
तट्टीका = तत् + टीका
उड्डयन = उत् + डयन
उल्लास = उत् + लास
तल्लीन = तत् + लीन
सच्चरित्र = सत् + चरित्र
उच्छेद = उत् + छेद
उच्छिन्न = उत् + छिन्न
जगच्छाया = जगत् + छाया

नियम–4

यदि त्, द् के बाद श आए तो = त्, द्, च् में तथा 'श', 'छ' में परिवर्तित हो जाता है और यदि त्, द् के बाद 'ह' आए तो त्, द् = 'द्' में तथा 'ह', 'ध' में परिवर्तन हो जाता है।

त्, द् + ह = द्, ध (द्ध)

जैसे– उच्छ्वास = उत् + श्वास
सच्छास्त्र = सत् + शास्त्र
उच्छिष्ट = उत् + शिष्ट
जगच्छांति = जगत् + शांति
उच्छृंखल = उत् + शृंखल

उद्धृत = उद्धृत = उत् + हृत
पद्धति = पद्धति = पत् + हति
तद्धित = तद्धित = तत् + हित
उद्धार = उद्धार = उत् + हार
उद्धरण = उद्धरण = उत् + हरण

नियम–5

यदि ह्रस्व स्वर के पश्चात् छ आए तो 'छ' के पूर्व च् का आगमन हो जाता है।

अ इ, उ, ऋ + छ = च्

इच्छा – इ + छा

अनुच्छेद – अनु + छेद
प्रतिच्छवि – प्रति + छवि
आच्छादन – आ + छादन
छत्रच्छाया – छत्र + छाया
स्वच्छंद – स्व + छंद
तरुच्छाया – तरु + छाया
परिच्छेद – परि + छेद
मातृच्छाया – मातृ + छाया

नियम–6

यदि शब्द में ष् के तुरन्त पहले वाले वर्ण में इ, उ, ए में से कोई स्वर आये तो संधि विच्छेद करते समय ष, स में परिवर्तित हो जाता है।

इ, उ, ए + स = ष

अभिषेक – अभि + सेक
सुष्मिता – सु + स्मिता
विषम – वि + सम
निषाद – नि + साद
अनुषंगी – अनु + संगी
निषेचन – नि + सेचन
विषाद – वि + साद

नियम–7

यदि शब्द में ष् के तुरन्त बाद ट, ठ, ण में से कोई वर्ण आए तो संधि विच्छेद करते समय ये क्रमशः त, थ, न में परिवर्तित हो जाते है।

ष् + त, थ, न = ट, ठ, ण

कृष्ण – कृष् + न
विष्णु – विष् + नु
तृष्णा – तृष् + ना
उत्कृष्ट – उत्कृष् + त
आकृष्ट – आकृष् + त
षष्ठ – षष् + थ
युधिष्ठिर – युधि + स्थिर
निष्ठुर – नि + स्थुर
अनुष्ठान – अनु + स्थान
प्रतिष्ठान – प्रति + स्थान

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

नियम–8

यदि शब्द में म् के तुरंत बाद अन्तःस्थ या ऊष्म व्यंजन आए तो म् अनुस्वार' में परिवर्तित हो जाता है।

म् + य, र, ल, व, श, ष, स, ह = अनुस्वार (•)

संस्मरण – सम् + स्मरण

संसार – सम् + सार

संयोग – सम् + योग

संयम – सम् + यम

संहार – सम् + हार

नियम–9

यदि म् के पश्चात् निरनुनासिक वर्ण आए तो म' बाद वाले वर्ण के अनुनासिक में परिवर्तित हो जाता है।

म् + निरनुनासिक

नोट– प्रत्येक वर्ग के 5वें वर्ण को छोड़कर बाकी जो अन्य वर्ण बचते हैं, उन्हें निरनुनासिक वर्ण कहते हैं।

शंकर– शम् + कर

संचय– सम् + चय

संधि – सम् + धि

संतोष – सम् + तोष

गंगा – गम् + गा

नियम–10

यदि 'सम्' उपसर्ग के पश्चात् 'क' आए तो क के पूर्व स् का आगमन हो जाता है।

सम् + क = स

संस्कृत – सम् + कृत

संस्कार – सम् + कार

संस्कृति – सम् + कृति

संस्करण – सम् + करण

नियम–11

यदि म् के पश्चात् स्वर आएतो म् का म् ही रहता है।

म् + स्वर = म्

समाचार – सम् + आचार

समुचित – सम् + उचित

समादर – सम् + आदर

समाहार – सम् + आहार

नोट– यदि शब्द में त् के तुरंत बाद अघोष वर्ण आए तो संधि विच्छेद करते समय 'त्', 'द्' में परिवर्तित हो जाता है।

द् + अघोष वर्ण = त् / विपत्काल = विपद् + काल

संसत्सत्र = संसद् + सत्र

शरत्काल = शरद् + काल

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

3. विसर्ग संधि

परिभाषा– विसर्ग के बाद स्वर या व्यंजन के मेल से उत्पन्न विकार को विसर्ग संधि कहते हैं।

नियम–1

यदि विसर्ग से पहले अ' आए तथा बाद में घोष वर्ण आए (अ, उ, ऊ, ए स्वरों को छोड़कर) तो विसर्ग ओ में परिवर्तित हो जाता है

अः + घोष वर्ण = ओ

यशोदा – यशः + दा

मनोज – मनः + ज

अधोभाग – अधः + भाग

तपोवन – तपः + वन

मनोबल – मनः + बल

सरोरूह – सरः + रूह

नियम–2

यदि विसर्ग से पहले 'अ' आए तथा बाद में भी अ आए तो अ' और विसर्ग (:) ओ में परिवर्तित हो जाते हैं तथा बाद वाले 'अ' का लोप हो जाता है।

अः + अ = ओ

मनोभिलाषा – मनः + अभिलाषा

मनोनुकूल – मनः + अनुकूल

तेजोसि – तेजः + असि

नियम–3

यदि विसर्ग से पहले इ, उ आए तथा बाद में च, छ, श में से कोई वर्ण आए तो विसर्ग श् में परिवर्तित हो जाता है।

इ, उ : + च, छ, श = श

निश्चल – निः + चल

निश्छल – निः + छल

दुश्चरित्र – दुः + चरित्र

निश्शंक – निः + शंक

निश्शुल्क – निः + शुल्क

दुश्शासन – दुः + शासन

नियम–4

यदि विसर्ग से पहले इ, उ आए तथा बाद में त, थ, स में से कोई वर्ण आए तो विसर्ग स् में परिवर्तित हो जाता है।

इ, उ : + त, थ, स = स्

निस्तेज – निः + तेज

दुस्तर – दुः + तर

दुस्साहस – दुः + साहस

निस्संदेह – निः + संदेह

भास्कर – भाः + कर

भास्पति – भाः + पति

पुरस्कार – पुरः + कार

नमस्कार – नमः + कार

नमस्ते – नमः + ते

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

नियम–5

यदि विसर्ग से पहले इ, उ आए तथा बाद में क, ट, ठ, प, फ में से कोई वर्ण आए तो विसर्ग ष् में परिवर्तित हो जाता है।

इ, उ : + क, ट, ठ, प, फ = ष्

निष्फल – निः + फल

दुष्फल – दुः + फल

निष्कंटक – निः + कंटक

आविष्कार – आविः + कार

परिष्कृत – परिः + कृत

धनुष्टंकार – धनुः + टंकार

नियम–6

यदि विसर्ग से पहले स्वर आए (अ, आ स्वरों को छोड़कर) तथा बाद में घोष वर्ण आए तो विसर्ग र् में परिवर्तित हो जाता है।

स्वर : + घोष वर्ण = र्

दुर्ग – दुः + ग

निराशा – निुः + आशा

निरुद्देश्य – निः + उद्देश्य

दुरुपयोग – दुः + उपयोग

निरक्षर – निः + अक्षर

निरीक्षण – निः + ईक्षण

आशीर्वाद – आशीः + वाद

निर्धन – निः + धन

निर्जन – निः + जन

पुनरवलोकन – पुनः + अवलोकन

पुनर्निर्माण – पुनः + निर्माण

पुनरपि – पुनः + अपि

पुनरीक्षण – पुनः + ईक्षण

अन्तर्द्वन्द्व – अन्तः + द्वन्द्व

निर्झर – निः + झर

दुर्जन – दुः + जन

नियम–7

यदि इ विसर्ग तथा उ (:) के बाद र आए तो इ (:), ई में तथा उ (:) ऊ में परिवर्तित हो जाता है।

इः, उः + र = ई, ऊ

नीरोग – निः + रोग

नीरव – निः + रव (आवाज)

नीरस – निः + रस

नीराजन – निः + राजन

नीरन्ध्र – निः + रन्ध्र

दूराज – दुः + राज

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

1. निम्नलिखित किस विकल्प में संधि का सही प्रयोग नहीं हुआ है ?

(1) गण + ईश (2) मधु + आचार्य (3) मात्र + उपदेश (4) हरि + इच्छा

2. 'पित्रनुमति' शब्द का संधि विच्छेद है–

(1) पित्रनु + मति (2) पितृनु + मति (3) पित्र + अनुमति (4) पितृ + अनुमति

3. 'अन्वेषण' शब्द में कौनसी संधि है ?

(1) यण् संधि (2) अयादि संधि (3) व्यंजन संधि (4) विसर्ग संधि

4. 'परमोत्सव' शब्द में कौनसी संधि है ?

(1) वृद्धि संधि (2) दीर्घ संधि (3) गुण संधि (4) यण संधि

5. 'सदैव' शब्द का संधि विच्छेद होगा–

(1) सद + ऐव (2) सदा + ऐव (3) सद + एव (4) सदा + एव

6. 'नमस्ते' में कौनसी संधि है ?

(1) अयादि संधि (2) विसर्ग संधि (3) दीर्घ संधि (4) व्यंजन संधि

7. 'राजर्षि' शब्द में कौनसी संधि है ?

(1) गुण संधि (2) वृद्धि संधि (3) दीर्घ संधि (4) यण संधि

8. निम्नलिखित में से किस शब्द में व्यंजन संधि है ?

(1) जगन्नाथ (2) पावक (3) प्रत्यक्ष (4) नरेश

9. 'पुनर्जन्म' में कौनसी संधि है ?

(1) अयादि संधि (2) विसर्ग संधि (3) स्वर संधि (4) व्यंजन संधि

10. 'अभ्युदय' शब्द में कौनसी संधि है ?

(1) दीर्घ (2) गुण (3) अयादि (4) यण्

11. निम्नलिखित में से अयादि संधि के लिए कौनसा कथन सत्य है ?

(1) ऐ, ऐ के बाद कोई (असवर्ण) स्वर आए तो क्रमशः अय औव हो जाता है।

(2) ऐ, ऐ औ के बाद कोई (असवर्ण) स्वर आए तो क्रमशः आव, अय, आब होता है।

(3) ए, ऐ, ओ, औ के बाद कोई (असवर्ण) स्वर आए तो क्रमशः अय, आय, अव, आव हो जाता है।ऐ, ऐ के बाद कोई (असवर्ण) स्वर आए तो क्रमशः अय औव हो जाता है।

(4) ओ, औ के बाद कोई (असवर्ण) स्वर आए तो क्रमशः अव, आव हो जाता है।

12. 'निरोग' शब्द में कौनसी संधि है ?

(1) अयादि संधि (2) गुण संधि (3) व्यंजन संधि (4) विसर्ग संधि

13. निम्नलिखित में से किस शब्द में व्यंजन संधि है ?

(1) उच्छ्वास (2) देवालय (3) पवन (4) स्वागत

14. पुरः + कृत का संधि–रूप होगा–

(1) पुरूसकार (2) पुरस्कृति (3) पुरसकार (4) पुरस्कृत

15. 'एकैक' शब्द में कौनसी संधि है ?

(1) अयादि (2) दीर्घ (3) वृद्धि (4) गुण

16. 'वागीश' शब्द में कौनसी संधि है ?

(1) गुण संधि (2) व्यंजन संधि (3) विसर्ग संधि (4) दीर्घ संधि

17. 'वेद + उक्त' का सही संधि–रूप होगा–

(1) वेदोक्त (2) वेदूक्त (3) वेदउक्त (4) वेदौक्त

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

18. व्याकरण में संधि का अर्थ है–

(1) दो शब्दों का मेल

(2) दो पदों का मेल

(3) प्रथम पद के अन्तिम तथा द्वितीय पद के प्रथम वर्ण में मेल

(4) वर्ण तथा शब्द का मेल

19. 'आत्मानंद' शब्द का सही संधि–विच्छेद है–

(1) आत्मा + आनंद (2) आत्म + आनंद (3) आत्मन् + आनंद (4) आत्माः + आनंद

20. 'मनोविकार' शब्द का सही सन्धि–विच्छेद है–

(1) मनः + विकार (2) मना + विकार (3) मनो + विकार (4) मन + ओ + विकार

21. 'नद्यागम' शब्द का सही संधि–विच्छेद होगा–

(1) नदी + आगम (2) नदी + अगम (3) नदि + आगम (4) नदि + अगम

22. 'अति + आचार' का शुद्ध संधियुक्त शब्द है–

(1) अतिआचार (2) अत्याचार (3) आताचार (4) अतीचार

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

समास

समास शब्द 'सम् + आस' के योग से बना है, जिसका शाब्दिक अर्थ है समान रूप से दो पदों को पास लाना'।
जबकि समास शब्द का शाब्दिक अर्थ है 'संक्षेप/संक्षिप्त' अर्थात् शब्दों के सार्थक मेल को समास कहते हैं।
समास के भेद है–
समास के 6 भेद हैं (मुख्यतः 4 भेद होते हैं)

(1) अव्ययी भाव समास
(2) तत्पुरुष समास
(3) द्वन्द्व समास
(4) बहुव्रीहि समास
(5) द्विगु समास
(6) कर्मधारय समास

(1) अव्ययी भाव समास– जिस समास का पहला पद अव्यय होता है, उसे अव्ययी भाव समास कहते हैं।

- इस समास का पहला पद उपसर्ग होता है अथवा एक ही शब्द की आवृत्ति होती है। इस आधार पर इसके दो भेद होते हैं–

(i) **अव्यय पद पूर्व –** इसमें पहला पद उपसर्ग होता है

जैसे– यथार्थ – अर्थ के अनुसार
प्रत्यक्ष – अक्षि के आगे या सामने
भरसक – सक (शक्ति) भर
आजन्म – जन्म तक/पर्यन्त

(ii) **नाम पद पूर्व–** इसमें संज्ञा, सर्वनाम व विशेषण शब्दों की आवृत्ति होती है।

जैसे– एकाएक (एक–एक)– एक के बाद एक
दिनोदिन – दिन ही दिन में
बीचोंबीच – बीच के बाद बीच (ठीक बीच में)
बारम्बार – बार के बाद बार (लगातार)

(2) तत्पुरुष समास– तत्पुरुष शब्द तत् + पुरुष' के योग से बना है जिसका शाब्दिक अर्थ है उसका पुरुष अर्थात् जिस समास का दूसरा पद या उत्तर पद प्रधान होता है, उसे तत्पुरुष समास कहते हैं। इस समास के विग्रह में कारक विभक्ति चिह्नों का प्रयोग होता है। परंतु कर्ता व संबोधन कारक का प्रयोग इसमें नहीं किया जाता। अर्थात् इसमें कर्म कारक से लेकर अधिकरण कारक कारक तक की विभक्तियों का प्रयोग होता है। इस आधार इसके 6 भेद हैं–

(i) कर्म तत्पुरुष (को)
शरणागत– शरण को आगत (आया हुआ)
चिड़ीमार– चिड़ियों को मारने वाला
तापमापी– ताप को मापने वाली
गगनचुंबी– गगन को चुभने वाला

(ii) करण तत्पुरुष (से, के द्वारा)
तुलसीकृत – तुलसी के द्वारा कृत
तारोभरी – तारों से भरी हुई
मेघाच्छन्न – मेघों से आच्छन्न (ढका हुआ)
हस्तलिखित – हस्त के द्वारा लिखित
मदांध – मद से अंधा

नोट– सजीव शब्दों के समास विग्रह में द्वा– 'के द्वारा का प्रयोग किया जाता है। जबकि निर्जीव शब्दों के समास विग्रह में'– 'से' का प्रयोग किया जाता है।

(iii) संप्रदान तत्पुरुष (के लिए)
रसोईघर – रसोई के लिए घर
घुड़साल – घोड़ों के लिए साल (घर)
डाकगाड़ी – डाक के लिए गाड़ी
हथकड़ी – (हस्त) हाथों के लिए कड़ी

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

(iv) अपादान तत्पुरुष (से) अलग होने के अर्थ में

देश निकाला – देश से निकाला

जलजात (कमल) – जल से जात (जन्म)

लोकोत्तर – लोक से उत्तर (दूर/परे)

आशातीत – आशा से तीत/अतीत (दूर/परे)

जन्मांध – जन्म से अंधा

(v) संबंध तत्पुरुष (का, के, की)

कठपुतली – काठ की पुतली (आकृति)

पनघट – पानी की घाट

पनवाड़ी – पान की वाड़ी (दूकान)

राष्ट्रपति – राष्ट्र का पति

मृगछौना – मृग का छौना (बच्चा)

(vi) अधिकरण तत्पुरुष–(में, पर)

रेलगाड़ी – रेल पर चलने वाली गाड़ी

आपबीती – आप पर बीती हुई

हरफनमौला – हर फन (कला) में मौला (निपुण)

बटमार (चोर) – बट (रास्ता) में मारने वाला

कविपुंगव – कवियों में पुंगव (श्रेष्ठ)

(vii) नञ् तत्पुरुष समास– संस्कृत में निषेध के अर्थ में नञ् तत्पुरुष का प्रयोग किया जाता है। इसमें निम्नलिखित उपसर्गों का प्रयोग निषेध ा के अर्थ में किया जाता है

जैसे– अ, अन (अन्), न(ना) नालायक – न लायक

- अटूट – न टूटा अनजान – न जाना

अनिच्छुक – न इच्छुक नगण्य – न गण्य

(3) द्विगु समास– जिस समास का पहला पद संख्यावाची होता है, उसे द्विगु समास कहते हैं।

इस समास में संख्याओं का समाहार/समूह होता है, जैसे–

पंजाब – पंच आबों (नदी) का समूह

नवरात्र – नौ (नव) रात्रियों का समूह

शताब्दी – शत अब्दियों का समूह

छत्तीसगढ़ – छत्तीस गढ़ों का समूह

पखवाड़ा – पन्द्रह दिनों का समूह

चवन्नी – चार आनों का समूह

चौराहा – चार राहों का समूह

(4) द्वन्द्व समास– जिस समास के दोनों पद प्रधान होते हैं उसके द्वन्द्व समास कहते हैं। इस समास के विग्रह में 'और' अथवा 'या' शब्दों का प्रयोग किया जाता है।

इस समास के 3 भेद हैं–

(i) इतरेतर द्वन्द्व– इसमें समास विग्रह में और शब्द का प्रयोग किया जाता है।

जैसे– कृष्णार्जुन – कृष्ण और अर्जुन

लोटा डोरी – लोटा और डोरी

अठारह – आठ और दस

(ii) विकल्पात्मक द्वन्द्व– इसके समास विग्रह में 'या' शब्द का प्रयोग किया जाता है।

इसमें विलोम वाले शब्दो को प्रधानता दी जाती है।

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

जैसे– धर्माधर्म – धर्म या अधर्म

पाप–पुण्य – पाप या पुण्य

तीन–चार – तीन या चार

(iii) समाहार द्वन्द्व– इसमें सजीव शब्दों के समास विग्रह में 'आदि' का प्रयोग होता है, जबकि निर्जीव शब्दों के समास विग्रह में 'इत्यादि' शब्द का प्रयोग किया जाता है। इसमें निरर्थक शब्दों का भी प्रयोग किया जाता है।

आमने–सामने – सामने इत्यादि

रुपया–पैसा – रुपया पैसा इत्यादि

कपड़े–लते – कपड़े इत्यादि

जीव–जन्तु – जीव जन्तु आदि।

(5) कर्मधारय समास– जिस समास का प्रथम पद विशेषण तथा दूसरा पद विशेष्य होता है अथवा उपमान (जिससे तुलना की जाती है) उपमेय (जिसकी तुलना की जाती है) होता है, उसे कर्मधारय समास कहते हैं।

इस समास के विग्रह में 'है जो', 'के' समान है जो तथा रूपी' शब्दों का प्रयोग किया जाता है

महापुरुष – महान है जो पुरुष

नवयुवक – नव है जो युवक

खुशबू – खुश है जो बू (गंध)

चरम सीमा – चरम है जो सीमा

चन्द्रमुख – चन्द्रमा के समान है जो मुख

राजीवलोचन – राजीव के समान है जो लोचन

भवसागर – भव रूपी सागर

क्रोधाग्नि – क्रोध रूपी अग्नि

(6) बहुव्रीहि समास– जिस समास के दोनों पद 'गौण' होते हैं तथा अन्य ही तीसरा अर्थ ग्रहण किया जाता है, वहां बहुव्रीहि समास होता है।

इस समास के विग्रह में 'है जिसका', 'है जिसकी' तथा 'है जिसके' शब्दों का प्रयोग किया जाता है।

जैसे–

पीताम्बर– पीत के अम्बर जिसके (विष्णु, कृष्ण)

लम्बोदर– लम्ब है उदर जिसका (गणेश जी)

चतुरानन– चतुर है आनन जिसके (ब्रह्म जी)

चतुर्भुज– चार है भुजाएं जिसकी (विष्णु जी)

शूलपाणि– शूल है पाणि में जिसके (शिव जी)

बारहसिंगा– बारह सींग वाला

पतझड़– पत्ते झड़नें वाली ऋतु

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

1. 'सिंह रूपी नर' विग्रह से निर्मित समास है–

(1) सिंहनर (2) नरसिंह (3) नरसिंहा (4) सिंहानर

2. किस समास में प्रथम पद प्रधान होता है ?

(1) अव्ययीभाव समास (2) कर्मधारय समास (3) तत्पुरुष (4) बहुब्रीहि

3. 'यथाशक्ति' शब्द में कौनसा समास है ?

(1) अवययीभाव (2) कर्मधारय (3) तत्पुरुष (4) द्विगु

4. 'रातोंरात' शब्द का सही समास विग्रह है–

(1) रात और रात (2) रात में रात (3) रात ही रात में (4) रात से रात तक

5. समानाधिकरण तत्पुरुष समास के नाम से जाना जाता है–

(1) अव्ययीभाव समास (2) कर्मधारय समास (3) द्वन्द्व समास (4) बहुब्रीहि समास

6. 'यथाशक्ति' शब्द का समास विग्रह होगा–

(1) यथा और शक्ति (2) शक्ति के अनुसार (3) शक्ति और अनुसार (4) यथा शक्तिनुसार

7. 'गुरुदक्षिणा' शब्द का समास–विग्रह होगा–

(1) गुरु की कृपा के लिए दक्षिणा (2) गुरु की दक्षिणा (3) गुरु के लिए दक्षिणा (4) गुरु के कारण दक्षिणा

8. प्रथम पद संख्यात्मक होने पर कौनसा समास होता है ?

(1) द्विगु (2) द्वंद्व (3) बहुब्रीहि (4) अव्ययीभाव

9. 'किस शब्द में 'कु' उपसर्ग नहीं है ?

(1) कुशल (2) कुरूप (3) कुकर्म (4) कुचाल

10. किस समास में दोनों पदों के बीच उपमेय–उपमान अथवा विशेषण–विशेष्य का सम्बन्ध होता है ?

(1) अव्ययीभाव समास (2) द्विगु समास (3) कर्मधारय समास (4) तत्पुरुष समास

11. किस समास में प्रथम पद विशेषण (उपमान) एवं द्वितीय पद विशेष्य (उपमेय) होता है ?

(1) अलुक् तत्पुरुष समास (2) बहुव्रीहि समास (3) कर्मधारय समास (4) अञ् तत्पुरुष समास

12. 'नीति–निपुण' शब्द का सही समास–विग्रह है–

(1) नीति के लिए निपुण (2) नीति में निपुण (3) नीति का निपुण (4) नीति से निपुण

13. 'मेघाच्छादित' सामासिक पद में कौनसा समास है?

(1) अपादान तत्पुरुष (2) कर्म तत्पुरुष (3) करण तत्पुरुष (4) संप्रदान तत्पुरुष

14. 'बलिवेदी' में कारक की दृष्टि से कौनसा समास है?

(1) सम्बन्ध तत्पुरुष (2) करण तत्पुरुष (3) सम्प्रदान तत्पुरुष (4) अपादान तत्पुरुष

15. 'हस्तलिखित' शब्द का सही समास विग्रह है–

(1) हस्त से निमित्त किया हुआ (2) हस्त और लिखित (3) हस्त पर लिखा हुआ (4) हस्त द्वारा लिखा हुआ

16. 'दुर्दमनीय' शब्द में कौनसा उपसर्ग है ?

(1) दुः (2) दुर् (3) दुस् (4) दु

17. निम्नलिखित पदों में कर्मधारय समास का उदाहरण है–

(1) यथाशीघ्र (2) पीताम्बर (3) महाजन (4) कष्टसाध्य

18. जिस समास में दोनों पदों की प्रधानता होती है, वह कहलाता है–

(1) द्वन्द्व समास (2) तत्पुरुष (3) द्विगु समास (4) बहुव्रीहि समास

19. 'विद्यालय' शब्द का सही विग्रह है–

(1) विद्या से आलय (2) विद्या के लिए आलय (3) विद्या में आलय (4) विद्या को आलय

20. 'पांच तंत्रों का समाहार' विग्रह का सही समास है–

(1) पंचातंत्र (2) पंचमतंत्र (3) पंचतंत्र (4) पंचिकातंत्र

21. 'सत्यासत्य' शब्द का सही विग्रह है–

(1) सत्य ही असत्य (2) सत्य का असत्य (3) सत्य या असत्य (4) सत्य और असत्य

****

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

उपसर्ग व प्रत्यय

उपसर्ग– जो शब्दांश शब्दों के पूर्व में लगकर उनके अर्थ में परिवर्तन कर देते हैं या विशेषता ला देते हैं, उन्हें उपसर्ग कहते हैं।

विशेषताएं–

(i) उपसर्ग तथा प्रत्यय दोनों शब्दांश होते हैं तथा सदैव मूल शब्द में जुड़ते हैं।

(ii) उपसर्ग तथा प्रत्यय शब्द में जुड़ने के बाद भी शब्द का अर्थ निकलना चाहिए तथा शब्द में से हटने के बाद भी शब्द का अर्थ निकलना चाहिए।

(iii) उपसर्ग लगभग शब्दों के अर्थ में परिवर्तन करते हैं।

जैसे–पराजय, अजय, विस्मरण।

(iv) उपसर्ग बहुत कम अर्थ में विशेषता लाते है

जैसे– विजय, संस्मरण

Q.1	Q.2	Q.3	Q.4
उपसर्ग है	**अन् उपसर्ग है**	**उपसर्ग नहीं है**	**उपसर्ग नहीं**
1. औदक	1. अनजान	1. नीरोग	1. पराजय
2. औपल	2. अन्वय	2. नीरव	2. पराभव
3. औतार	3. अनेक	3. नीरन्ध्र	3. पराक्रम
4. कुलीन	4. अनपढ़	4. नीरज	4. पराधीन

नोट– 'परा' तथा 'पर' उपसर्गों का अर्थ कभी भी दूसरे के अर्थ में नहीं किया जाता बल्कि दूसरे के अर्थ में प्रयुक्त होने वाला पर' संस्कृत का अव्यय है जो संस्कृत में उपसर्ग की तरह प्रयुक्त होता है।

जैसे– पराश्रित, परावलम्बन, परदेश, पराधीन।

1. पर' उपसर्ग– बड़ा, मुख्य या दूसरी पीढ़ी का परदादा, परनाना, परकोटा (क्षेत्र), परपोता

संस्कृत के उपसर्ग

अति	अधिक	अत्यंत, अतिरिक्त, अतिरंजित, अतिक्रमण, अत्यधिक, अत्याचार।
अधि	श्रेष्ठ या ऊपर	अध्यक्ष, अध्यादेश, अधिकार, अधिपति, अधिकृत, अधिकार।
अनु	पीछे, गौण, समान, बाद में आने वाला	अनुज, अनुचर, अनुगामी, अनुभव, अनुकूल, अनुसार, अनुसंधान।
अप	बुरा या अनुचित	अपयश, अपमान,अपकार, अपशब्द, अपव्यय,अपादान, अपहरण
अभि	सम्मुख, ओर	अभिमान, अभ्यास, अभयागत, अभिभावक, अभिमुख, अभिवादन
अव	बुरा, हीन, उप	अवगुण, अवनति, अवतार, अवकाश, अवमूल्यन, अवचेतन, अवशेष अवतरण, अवनत
आ	तक, समेत	आजन्म, आमरण, आरक्षण, आक्रमण, आकंठ, आदान, आजीवन
उत्	ऊँचा, ऊपर, श्रेष्ठ	उच्छ्वास, उच्छिष्ट, उल्लंघन, उड्डयन, उन्नायक, उद्गम, उद्धार, उत्थान, उत्कर्ष
उप	निकट, समान, गौण, छोटा	उपवन, उपसर्ग, उपभेद, उपयोग, उपकरण, उपदेश, उपस्थिति, उपग्रह।
दुस	कठिन, बुरा	दुस्साहस, दुस्साध्य, दुष्कर, दुष्कर्म, दुश्शासन, दुस्तर, दुगर्म।
दुर्	कठिन, बुरा	दुर्लभ, दुर्गुण, दुराचार, दुर्भाग्य, दुर्जन, दुर्दशा।
निस्	रहित, निषेध, बिना, पूरा।	निष्काम, निष्पाप, निष्फल, निस्तेज, निश्छल
निर्	बिना, रहित, निषेध	निर्बल, निर्धन, निर्गुण, निर्मल, निराश, निरपराध

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

नि	नीचे, अधिकता	निषेध, निकट, निवारण, निकृष्ट, निहार, निवास, नियुक्ति, निबंध,
परा	विपरीत, नाश, पीछे	पराजय, पराभाव, पराधीन, परामर्श।
परि	चारों ओर, पूर्णता	परिचालक, परिमार्जन, परिपूर्ण, परिवर्तन पर्यटन, पर्यंत
प्र	अधिक, आगे, गति, उत्पत्ति	प्रकार, प्रगति, प्रबल, प्रसिद्ध, प्रचार, प्रहार, प्रयोग, प्रस्थान, प्रकोप, प्रदर्शन
अति	अधिक	अत्यंत, अत्याचार।
प्रति	विरुद्ध, सामने	प्रतिकूल, प्रतिध्वनी, प्रतिवादी, प्रतिदिन, प्रत्यक्ष, प्रतिनिधि।
वि	विशिष्ट, भिन्न, असमानता	विकार, वियोग, विकल , विभाग, विशुद्ध, विभिन्न, विकल्प, विजय, विनय, विपक्ष
सम्	पूर्णता, साथ अच्छा	संपूर्ण, संहार, सम्मान, संग्राम, संकल्प, सम्मुख, सम्मति, सम्मेलन, सम्मिलित, संगम, संवाद, संस्कार।
सु	अच्छा, श्रेष्ठता	सुफल, सुदिन, सुलभ, सुशील, सुयोग, सुपात्र, सुशिक्षित, स्वच्छ, स्वागत, सुबोध, सुदूर ।

संस्कृत में कुछ शब्द/शब्दांश प्रायः समास रचना के पहले भाग में आते थे। अब वे इतने प्रचलित हो गए कि उनका प्रयोग हिंदी में उपसर्ग की तरह होने लगा है। जैसे –

अतः/अंतर्	अंतर (भीतर)	अंतः करण, अंतर्धान, अंतर्मुखी, अंतःपुर, अंतर्गत
अधः	नीचे	अधःपतन, अधोगति, अधोलिखित, अधोभाग
अलम्	सुंदर	अलंकार, अलंकृत, अलंकरण।
पुनः (पुनर्)	दुबारा	पुनर्जन्म, पुनर्निर्माण, पुनरुक्ति, पुनर्विवाह, पुनर्मिलन, पुनवा, पुनरावृत्ति, पुनर्जागरण, पुनरवलोकन ।
न	(अभाव)	नपुंसक, नगण्य, नास्तिक।
चिर	देर	चिरकाल, चिरंजीव, चिरपरिचित, चिरंजीवी, चिरस्थायी, चिरायु।
सत्	अच्छा	सत्पुरुष, सज्जन, सन्मार्ग, सदाचार, सद्गति, सत्कर्म, सत्संग, सद्भावना, सत्कार।
स	सहित	सजीव, सफल, सजल, सरस, सजग, सादर, सविनय, सानुरोध,
सह	साथ	सहचर, सहयोग, सहोदर, सहानुभुति, सहकारी, सहपाठी, सहमति, सहकारिता, सहभोगी
पर	अन्य	परोपकार, परहित, पराधीन, परमुखापेक्षी, परपुरुष, परनिन्दा।
प्राक्	पहले	प्राक्कथन, प्रागैतिहासिक, प्राग्वैदिक, प्राक्ज्ञान
स्व	अपना	स्वराज्य, स्वदेश, स्वतंत्र, स्वाधीन, स्वचालित, स्वजन, स्वरूप, स्वावलंबन
स्वयं	अपने आप	स्वयंसेवक, स्वयंवर, स्वयंचालित, स्वयंसेवी
सम	समान	समकोण, समकालीन, समकालिक।
बहिस्/बहिर्	बाहर	बहिष्कार, बहिष्कृत, बहिर्गमन, बहिर्मुखी।
अन्	अभाव	अनेक, अनर्थ, अनाचार, अनुचित।
तिरः/तिरस्	निषेध	तिरस्कार, तिरोभाव, तिरोहित।
पुरा	पहले	पुरातन, पुराकाल, पुरातत्व।

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

हिंदी के उपसर्ग

हिंदी के उपसर्ग तद्भव, देशज और विदेशज शब्दों के साथ प्रयुक्त होते हैं।

अ	अभाव या निषेध	अछूत, अचेत, अथाह, अनजान, अचिच्छुक।
अन	अभाव या निषेध	अनपढ़, अनमोल, अनथक, अनदेखा।
अध	आधा	अधपका, अधमरा, अधकचरा, अधखिला।
औ	हीन, निषेध	औगुन, औघट, औढर।
उन(उन्)	कम	उनचालीस, उन्नीस, उनचास, उनसठ।
क/कु	बुरा	कपूत, कुमार्ग, कुपात्र, कुकर्म, कुसमय, कुचाल, कुख्यात, कुटेव, कुमेल।
नि	रहित	निडर, निकम्मा, निहत्था, निपूता, निधड़क, निगौड़ा निठल्ला।
स/सु	अच्छा	सुडौल, सुजान, सुराज, सपूत, सरस, सफल, सहित, सबल।
भर	पूरा	भरपेट, भरसक, भरपूर, भरमार।
दु	बुरा	दुबला, दुकाल, दुसाध।
दु	संख्या (दो)	दुगुना, दुपहर, दुधारा।
बिन	बिना	बिनबात, बिनकहे, बिनमाँगी।
पर	दूसरी पीढ़ी का	परदादा, परपोता, परनाना।
चौ	चार	चौराहा, चौमासा, चौपाई, चौपाया, चौगुना, चौकोर।

उर्दू/फारसी

कम	थोड़ा	कमबख्त, कमजोर, कमउम्र, कमासिन।
खुश	अच्छा	खुशखबरी,खुशखत, खुशबू, खुशमिजाज, खुशदिल, खुशकिस्मत।
गैर	भिन्न	गैरहाजिर, गैर, सरकारी, गैर कानूनी।
ऐन	ठीक	ऐनवक्त, ऐनमौका, ऐनदिन,।
बिला	बिना	बिलावजह, बिलानागा, बिलाअक्ल ।
दर	में	दरअसल, दरहकीकत, दरख्वास्त, दरम्यान, दरकार।
ना	नहीं	नामुराद, नासमझ, नालायक, नादान, नाजायज, नापसंद।
ब	अनुसार, के साथ	बदौलत, बनाम, बहरहाल।
बा	अनुसार	बाकायदा, बाइज्जत, बाअदब, बाकलम, बामुलायजा।
बद	बुरा	बदनाम, बदकिस्मत, बदतमीज, बदहजमी, बदबू, बदचलन, बदमाश।
बर	पर, ऊपर	बरवक्त, बरतरफ, बरखास्त, बरदाश्त।
बे	रहित	बेहोश, बेईमान, बेवक्त, बेवकूफ, बेचारा, बेकायदा, बेरहम, बेचैन, बेसहारा।
ला	बिना	लाचार, लाजवाब, लावारिस, लाइलाज, लापरवाह, लापता।
सर	मुख्य	सरपंच, सरताज, सरपरस्त, सरदार, सरहद, सरनाम।

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

हम	साथ	हमसफर, हमशक्ल, हमउम्र, हमराज, हमदर्द, हमजोली, हमदम।
हर	प्रत्येक	हर रोज, हर दिन, हर साल, हर वक्त, हर तरफ।

अंग्रेजी के उपसर्ग

सब (Sub)	सब इंसपेक्टर, सब जज।
डिप्टी (Deputy)	डिप्टी कलेक्टर, डिप्टी कमिश्नर।
हेड (Head)	हेडमास्टर, हेडक्लर्क, हेडपोस्ट आफिस।
हॉफ (Half)	हॉफ पैंट, हॉफ कमीज, हॉफ टिकट, हॉफ माइन्ड।
चीफ (Chief)	चीफ मिनिस्टर, चीफ ऑफिसर, चीफ इंजीनियर, चीफ गेस्ट।

प्रत्यय

जो शब्दांश शब्दों के अंत में लगकर उनके अर्थ में प्रत्यय परिवर्तन कर देते हैं या विशेषता ला देते हैं, उन्हें प्रत्यय कहते हैं।

प्रत्यय के 2 भेद हैं–

(i) कृत/कृदंत प्रत्यय– धातु के अंत में लगने वाले प्रत्ययों को कृत/कृदंत प्रत्यय कहते हैं।

जैसे– लुटेरा – लूट + एरा
घुमाव – घूम + आव
लिखावट – लिख (लिख्) + आवट
सजावट – सज + आवट

(ii) तद्धित/तद्धितान्त प्रत्यय– संज्ञा, सर्वनाम, अव्यय व विशेषण शब्दों के अंत में लगने वाले प्रत्ययों को तद्धित/तद्धितांत प्रत्यय कहते हैं।

जैसे– नमकीन – नमक + ईन
दूरी – दूर + ई
सौंदर्य – सुंदर + य

नियम–1

धातु के साथ कभी भी ईय' प्रत्यय का प्रयोग नहीं किया जाता बल्कि धातु के साथ अनीय' प्रत्यय का प्रयोग होता है

जैसे– दर्शनीय – दृश् + अनीय
पूजनीय – पूज् + अनीय
नमनीय – नम् + अनीय

कृत प्रत्यय मुख्य रूप से पाँच प्रकार के होते हैं –

1. कर्तृवाचक कृत् प्रत्यत –

जिन प्रत्ययों के जोड़ने से क्रिया से कर्ता का बोध होता है, उन्हें कर्तृवाचक कृत् प्रत्यय कहते हैं। हार, सार, इयल, अक्कड़, आका, आकू, आरी, आडी, आलू, एरा, आक, क, ऐया, आऊ, ओड़, आवना, ओड़ा, ओरा आदि ऐसे ही प्रत्यय है।

प्रत्यय	मूल धातु	कृदंत शब्द
हार	पाल, हो	पालनहार, होनहार
सार	मिल	मिलनसार
इयल	मर, अड़, सड़	मरियल, अड़ियल, सड़ियल

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

अक्कड़	भूल, पी	भुलक्कड़, पियक्कड़
आका	लड़	लड़ाका
आकू	उड़, लड़, पढ़	लड़ाकू, पढ़ाकू
आड़ी/आरी	खेल, काट	खिलाड़ी, कटारी
आलू	झगड़	झगड़ालू
एरा	लूट, बस	लूटेरा, बसेरा
आक	तैर	तैराक
क	पाल, लिख, गा	पालक, लेखक, गायक
ऐया	खे, गा	खिवैया, गवैया
आऊ	टिक, जड़ कमा, बेच	टिकाऊ, जड़ाऊ, कमाऊ, बिकाऊ
ओड़ा, ओरा	भाग, चाटना	भगोड़ा, चटोरा
ओड़	हँस	हँसोड़
आवना	डर, सुहा	डरावना, सुहावना

2. कर्मवाचक कृत् प्रत्यय –

जो प्रत्यय मूल धातु के साथ जुड़कर कर्म का बोध कराते हैं, इन्हें कर्मवाचक कृत् प्रत्यय कहा जाता है। जैसे –

प्रत्यय	मूल धातु	कृदंत शब्द
औना	बिछ, खेल	बिछोना, खिलौना
नी	कर, कतर, ओढ़	करनी, कतरनी, ओढ़नी

3. करणवाचक कृत् प्रत्यय –

जो प्रत्यय मूल धातु के अंत में जुड़कर क्रिया के साधन (करण) का बोध कराएँ, उन्हें करणवाचक कृत् प्रत्यय कहते हैं। जैसे –

प्रत्यय	मूल धातु	कृदंत शब्द
आ	झूल, घेर, ठेल	झूला, घेरा, ठेला।
ई	फॉस, खाँस	फाँसी, खाँसी।
नी	कतर, चट, सूँघ	कतरनी, चटनी, सूँघनी।
ई	रेत	रेती।
ऊ	झाड़	झाड़ू।
न	बेल, ढक	बेलन, ढक्कन।
औटी	कस	कसौटी।

4. भाववाचक कृत् प्रत्यय –

जो प्रत्यय मूल धातु के अंत में जुड़कर इसे भाववाचक संज्ञा का रूप दे देते हैं, उन्हें भाववाचक कृत् प्रत्यय कहते हैं।

प्रत्यय	मूल धातु	कृदंत शब्द
आवा	भूल, दिख, बुला	भुलावा, दिखावा, बुलावा।
आव	घिर, चढ़, बह, बच	घिराव, चढ़ाव, बहाव, बचाव।
आई	पढ़, चढ़, सिल, लिख	पढ़ाई चढ़ाई, लड़ाई, सिलाई, लिखाई।
आन	उठ, मिल, उड़	उठान, मिलान, उड़ान।
ई	बोल, हँस, कह, सुन, कमा	बोली, हँसी, कही, सुनी, कमाई।
आवट	बल, गिर, थक, मिल, सज, रुक	बनावट, गिरावट, थकावट, मिलावट, सजावट, रुकावट।
आहट	घबरा, गड़गड़ा, मुसकरा, जगमगा	घबराहट, गड़गड़ाहट, मुस्कराहट, जगमगाहट।
ती	गिन, भर, बढ़, चढ़	गिनती, भरती, बढ़ती, चढ़ती।
ओती	कट, चुन, फिर, मान	कटौती, चुनौती, फिरौती, मनौती।
आ	झगड़ा झटक, मिल, जोड़	झगड़ा, झटका, मेला, जोड़ा
न	चल, ले, दे, गा	चलन, लेना, देना, गाना।
नी	कर, भर	करनी, भरनी।
अंत	गढ़, भिड़	गढ़ंत, भिड़ंत।

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

त	बच, खप	बचत, खपत।
आन	लग, चढ़, उठ	लगान, चढ़ान उठान।

5. क्रियावाचक कृत् प्रत्यय –

जिन प्रत्ययों को जोड़ने से धातुएँ विशेषण रूप में प्रयुक्त होती हैं, उन्हें क्रियावाचक कृत् प्रत्यय कहते हैं। इसके दो भेद है –

जैसे – ता, ते, ती चल, गा, हँस, बह, दौड़ चलता, गाता, हँसता हुआ, बहता हुआ, दौड़ती हुई, बहती हुई आदि।

जैसे – पढ़ = पढ़ा, पढ़ा हुआ, सुन = सुना हुआ, पढ़ी = पढ़ी हुई, सुनी हुई।

संस्कृत के कुछ कृत् प्रत्यय

1. अन = भवन, जलन, चलन, गमन।
2. अना = भावना, वंदना, कामना, रचना।
3. आ,या = पूजा, इच्छा, प्रथा, विद्या, कथा।
4. ति = गति, मति, नीति, शक्ति।
5. अक = सेवक, पाठक, गायक, चालक।
6. उक = भिक्षुक, भवुक।
7. ता = दाता, कर्ता, धर्ता, वक्ता, नेता, विधाता।
8. य = देय, गेय, पेय।

तद्धित प्रत्यय – क्रिया को छोड़कर शेष सभी (संज्ञा , सर्वनाम, अव्यय) शब्दों में जुड़ने वाला शब्दांश को तद्धित प्रत्यय कहते हैं। इनके योग से बनने वाले शब्दों को तद्धितांत शब्द कहते हैं।

(क) कर्तृवाचक (कता का बोध कराने वाले शब्द)

आर	=	सुनार, लुहार, चमार, कुम्हार।
आरा	=	बनजारा, हत्यारा।
आरी,आड़ी	=	जुआरी, पुजारी, भिखारी, खिलाड़ी।
एरा	=	चितेरा, सँपेरा, अँधरा, लुटेरा।
हार, हारा	=	सिरजनहार, होनहार, लकड़हारा।
ऐत	=	लठैत, टिकैत, डकैत।
इया	=	मुखिया, दुखिया, बिचौलिया, आढ़तिया।
कार, कारी	=	गीतकार, कलाकार, जानकार, गुणकारी, हितकारी, लाभकारी।

(ख) भाववाचक (भाववाचक संज्ञा का बोध कराने वाले शब्द)

पन	=	बचपन, लड़कपन, पागलपन।
आहट	=	चिकनाहट, कड़वाहट, लिखावट, बनावट।
त्व	=	मनुष्यत्व, देवत्व, अपनत्व, ममत्व।
ई	=	बुराई, भलाई, महँगाई, अच्छाई, गरमी, नरमी।
आस	=	मिठास, खटास, भड़ास।
कार	=	जयकार, अहंकार, तिरस्कार, हाहाकार।
ता	=	मानवता, दानवता, पशुता, लघुता।
त	=	रंगत, संगत।
क	=	ठंडक, कड़क

(ग) लघुतावाचक (कम या छोटेपन का बोध कराने वाले शब्द)

ई	=	टोकरी, खुरपी, रस्सी, कोठरी, प्याली, पहाड़ी, कटारी, कुल्हाड़ी।
ड़ी	=	टुकड़ी,पंखुड़ी, संदूकड़ी, गठड़ी
इया	=	खटिया, बछिया, बिटिया।

(घ) संबंधवाचक (व्यक्ति या वस्तु के संबंध दर्शाने वाले शब्द)

हाल, आल	=	ननिहाल, ससुराल।
औती	=	बपौती, मनौती, कटौती।
एरा	=	फुफेरा, ममेरा, चचेरा।

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

इक = धार्मिक, आर्थिक, नैतिक, सामाजिक, पैराणिक।
ई = बंगाली, मद्रासी, गुजराती, लखनवी, देहलवी।

(ङ) **क्रमवाचक (जिनमें क्रम को बोध हो)**
वाँ = आठवाँ, पाँचवाँ दसवाँ।
सरा = दूसरा, तीसरा।

(च) **स्थानवाचक (जिनसे स्थान का बोध हो)**
वाला = शहरवाला, गाँववाला, दिल्लीवाला।
ई = शहरी, देहाती, परदेशी, पंजाबी, गुजराती, हिंदुस्तानी, जापानी।
वी = देहलवी, लखनवी, लुधियानवी, हरियाणवी।

उपसर्ग

1. 'निवारण' शब्द में प्रयुक्त उपसर्ग है–
(1) नि (2) निव् (3) निवा (4) निः

2. 'अभ्युदय' शब्द में प्रयुक्त उपसर्ग है–
(1) अभी (2) अभि (3) अभ्य (4) अभ्

3. निम्नलिखित में से 'सत्' उपसर्ग से बना शब्द नहीं है–
(1) सदिच्छा (2) सद्रूप (3) सच्छास्त्र (4) सतर्क

4. 'अधकचरा' शब्द किस उपसर्ग से बना है ?
(1) आध उपसर्ग (2) आधि उपसर्ग (3) अ उपसर्ग (4) अध उपसर्ग

5. 'कुपात्र' में कौनसा उपसर्ग है ?
(1) कु (2) कुस् (3) क (4) कू

6. 'उपनाम' शब्द में उपसर्ग है–
(1) ऊ (2) उपि् (3) उप (4) उ

7. 'प्रार्थी' शब्द में प्रयुक्त उपसर्ग है–
(1) **प्रथ्** (2) **प्रः** (3) **प्रा** (4) **प्र**

8. किस शब्द में 'वि' उपसर्ग का प्रयोग नहीं हुआ है?
(1) विहग (2) विशुद्ध (3) विख्यात (4) विज्ञान

9. 'सम्भव' शब्द में कौनसा उपसर्ग लगाने से वह विपरीतार्थक शब्द जायेगा ?
(1) निर् (2) सु (3) अ (4) कु

10. 'प्रत्याशा' शब्द में प्रयुक्त उपसर्ग है–
(1) प्रः (2) प्रति (3) प्रत् (4) प्रती

11. निम्नलिखित में से 'निर्' उपसर्ग से बना शब्द है –
(1) **निर्देश** (2) **निरीह** (3) **निभृत** (4) **निसर्म**

12. 'पुरोहित' शब्द में उपसर्ग है–
(1) पुरा (2) पुरस् (3) पुरः (4) पुर

13. 'प्रेषण' शब्द में प्रयुक्त उपसर्ग है–
(1) प्रेष् (2) प्रे (3) प्र (4) प्रः

14. 'बिनबोया' में कौनसा उपसर्ग है ?
(1) बि (2) बिन (3) विन (4) बीन

15. निम्नलिखित में से उपसर्ग रहित शब्द कौनसा है ?
(1) **प्रहार** (2) **सुरेश** (3) **अत्यधिक** (4) **कुमार्ग**

16. 'प्रोन्नति' शब्द में प्रयुक्त उपसर्ग है–
(1) **प्रो** *(2) **प्र** (3) **प्रः** (4) **प्रन्**

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

17. किस शब्द में 'सु' उपसर्ग का प्रयोग नहीं हुआ है?

(1) सुकान्त (2) सुनार (3) सुशील (4) सुमन

प्रत्यय

1. निम्नलिखित में से कौनसा शब्द कृदन्त प्रत्यय से बना है ?

(1) रंगीला (2) बिकाऊ (3) दुधारु (4) कृपालु

2. वे प्रत्यय जो संज्ञा शब्दों के साथ लगाकर उनके रूप को बदल देते हैं, वे कहलाते हैं–

(1) फारसी प्रत्यय (2) कृत् प्रत्यय (3) तद्धित प्रत्यय (4) अरबी प्रत्यय

3. 'चालाक' शब्द में प्रत्यय है–

(1) लक (2) आक (3) क (4) लाक

4. 'आवट' प्रत्यय से कौनसा शब्द नहीं बना है ?

(1) गुर्राहट (2) सजावट (3) रुकावट (4) तरावट

5. 'अंश' शब्द में 'इक' प्रत्यय लगाने पर शब्द बनेगा–

(1) अंशीक् (2) अंशिक (3)आंशिक (4) अंशुक

6. निम्नलिखित में से किस शब्द में 'अक' प्रत्यय नहीं है ?

(1) पावक (2) अंकक (3) गायक (4) तैराक

7. 'काश्तकार' में प्रत्यय है–

(1) आकार (2) अकार (3) कार (4) तकार

8. 'शासिका' शब्द में प्रयुक्त प्रत्यय है–

(1) ईका (2) का (3) सिका (4) इका

9. 'इक' प्रत्यय से निर्मित शब्द नहीं है–

(1) दैनिक (2) मोहक (3) सात्विक (4) नैमित्तिक

10. 'भुलावा' शब्द में कौनसा प्रत्यय है ?

(1) लावा (2) इनमें से कोई नहीं (3)आवा (4) वा

11. निम्नलिखित में से किस शब्द में 'ईय' प्रत्यय है ?

*(1) मानवीय (2) लावण्य (3) उत्तरदायी (4) शौर्य

12. किस विकल्प में सभी प्रत्यय स्त्री बोधक 'तद्धित प्रत्यय' के हैं ?

(1) ननद, शेरनी, जलज (2) सेठानी, मोरनी, खटोला (3) प्रिया, वारि, हथौड़ी (4) देवरानी, लेखिका, इन्द्राणी

13. 'य' प्रत्यय से निर्मित शब्द नहीं है–

(1) तारूण्य (2) दांपत्य (3) धैर्य (4) दर्शनाय

14. निम्नलिखित पद 'इक' प्रत्यय से बने हैं, इनमें से कौनसा पद गलत है ?

(1) सामाजिक (2) दैविक (3) पक्षिक (4) पैतृक

15. कौनसा शब्द 'आहट' प्रत्यय का उदाहरण नहीं है?

(1) गड़गड़ाहट (2) छनछनाहट (3) जगमगाहट (4) रूकावट

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

16. 'प्रायोगिक' शब्द में प्रयुक्त प्रत्यय है–

(1) इक (2) गिक (3) ईक (4) क

वाक्य

शब्दों का ऐसा सार्थक समूह जो व्यवस्थित क्रम में हो तथा वक्ता के आशय/मतलब को स्पष्ट करता हो, उसे वाक्य कहते हैं।

वाक्य के गुण–

वाक्य में 6 गुण होते हैं–

1. सार्थकता
2. योग्यता/क्षमता
3. आकांक्षा/इच्छा
4. आसत्ति/निकटता
5. पदक्रम
6. अन्वय/मेल

- **वाक्य के अंग**

वाक्य के 2 अंग है–

1. **कर्ता/उद्देश्य–** वाक्य में कर्ता को उद्देश्य कहते हैं अथवा कर्ता व कर्ता का विस्तार उद्देश्य कहलाता है।
2. **क्रिया/विधेय–** वाक्य में क्रिया को विधेय कहते हैं अथवा वाक्य में कर्ता व कर्ता के विस्तार को छोड़कर बाकी जो कुछ बचता है, उसे विधेय कहते हैं अथवा वाक्य में कर्म कर्म का विस्तार क्रिया व क्रिया का विस्तार विधेय कहलाता है।

वाक्य के भेद

1. अर्थ के आधार पर – अर्थ के आधार पर वाक्य के आठ (8) भेद होते हैं।

2. रचना के आधार पर – रचना के आधार पर वाक्य के तीन (3) भेद होते हैं।

1. अर्थ के आधार पर वाक्य के भेद–

(i) विधानवाचक/विधानार्थक वाक्य –

जिन वाक्यों में क्रिया के करने या होने की सूचना मिले, उन्हें विधानवाचक वाक्य कहते हैं। इन्हे सकारात्मक वाक्य भी कहते हैं।

जैसे – मैंने दूध पिया। वर्षा हो रही है।

(ii) निषेधवाचक –

जिन वाक्यों से कार्य न होने का भाव प्रकट होता है, उन्हें निषेधवाचक वाक्य कहते हैं। इन्हें नकारात्मक वाक्य भी कहते हैं।

जैसे – मैंने खाना नहीं खाया। तुम मत पढ़ो। इसमें 'नही' व 'मत' शब्दों का प्रयोग होता है।

(iii) आज्ञावाचक –

जिन वाक्यों से आज्ञा, प्रार्थना, उपदेश आदि का ज्ञान होता है, उन्हें आज्ञावाचक वाक्य कहते हैं।

जैसे – सीता तुम कहाँ से आ रही हो ? मोहन तुम बैठ कर पढो। बड़ों का सम्मान करो।

(iv) प्रश्नवाचक/प्रश्नार्थक वाक्य –

जिन वाक्यों से किसी प्रकार का प्रश्न पूछने का ज्ञान होता है, उन्हें प्रश्नवाचक वाक्य कहते हैं।

जैसे – सीता तुम कहाँ से आ रही हो ? तुम क्या पढ़ रहे हो ? रमेश कहाँ जाएगा ?

(v) इच्छावाचक/इच्छार्थक वाक्य –

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

जिन वाक्यों से इच्छा, आशीष एंव शुभकामना आदि का ज्ञान होता है, उन्हें इच्छावाचक वाक्य कहते हैं।

जैसे – तुम्हारा कल्याण हो। आज तो मैं केवल फल खाऊँगा। भगवान तुम्हें लंबी उमर दे।

(vi) संदेहवाचक –

जिन वाक्यों से संदेह या संभावना व्यक्त होती है, उन्हें, संदेहवाचक वाक्य कहते हैं।

जैसे – शायद शाम को वर्षा हो जाए। वह आ रहा हो, पर हमें क्या मालूम । हो सकता है राजेश आ जाए।

(vii) विस्मयवाचक–

जिन वाक्यों से आश्चर्य, घृणा, क्रोध, शोक, हर्ष इत्यादि भावों की अभिव्यक्ति होती है, उन्हें विस्मयवाचक वाक्य कहतें है।

जैसे – वाह! कितना सुंदर दृश्य है। हाय! उसके माता–पिता दोनों ही चल बसे। शाबाश! तुमने बहुत अच्छा काम किया।

(viii) संकेतवाचक –

जिन वाक्यों में एक क्रिया का होना दूसरी क्रिया पर निर्भर होता है, उन्हें संकेतावाचक कहतें है। इन्हें हेतु वाचक भी कहते हैं। इनसे कारण या शर्त का बोध होता है। जैसे –

यदि परिश्रम करोगे तो अवश्य सफल होंगे।

पिताजी अभी आते तो अच्छा होता ।

अगर वर्षा अच्छी होगी तो फसल भी अच्छी होगी।

2. रचना के आधार पर वाक्य के भेद

रचना के आधार पर वाक्य के निम्नलिखित तीन भेद होते हैं –

1. सरल वाक्य/साधारण वाक्य –

जिन वाक्यों में केवल एक ही उद्देश्य और एक ही विधेय होता है, उन्हें सरल वाक्य या साधारण वाक्य कहते हैं। इन वाक्यों में एक ही क्रिया होती है। जैसे–

1. शिल्पा पढ़ती है।
2. मैं दिल्ली में रहने वाले अपने एक मित्र से मिला था।
3. लता मंगेशकर की बहिन आशा भोंसले ने पार्श्व गायन में अपार ख्याति अर्जित की है।

2. संयुक्त वाक्य –

जिन वाक्यों में दो या दो से अधिक सरल वाक्य समुच्चयबोधक अव्ययों (और, तथा, एवं पर, परंतु, आदि) से जुड़े हो ,उन्हे संयुक्त वाक्य कहते हैं। जैसे –

1. वह सुबह गया और राम को लौटा आया।
2. प्रिय बोलो पर असत्य नहीं।
3. उसने परिश्रम तो बहुत किया किंतु सफलता नहीं मिली।

प्रमुख योजक अव्यय शब्द – और, या, तथा, एंव, पर, परंतु, किंतु, मगर, बल्कि, लेकिन, इसलिए आदि।

3. मिश्रित/मिश्र वाक्य –

जिन वाक्यों में एक मुख्य या प्रधान वाक्य हो और एक या एकाधिक आश्रित उपवाक्य हों, उन्हें मिश्रित वाक्य कहते हैं। जैसे –

1. ज्यों ही उसने दवा पी, वह सो गया।
2. यदि परिश्रम करोग तो ,उत्तीर्ण हो जाओगे।
3. मैं जानता हूँ कि तुम्हारे अक्षर अच्छे नही बनते ।

आश्रित उपवाक्य तीन प्रकार के होते हैं –

(i) संज्ञा उपवाक्य (ii) विशेषण उपवाक्य (iii) क्रियाविशेषण उपवाक्य

(i) संज्ञा उपवाक्य

जो आश्रित उपवाक्य 'कि' से प्रारंभ होते हैं, उन्हें संज्ञा उपवाक्य कहते हैं।

जैसे –

1. मैं जानता हूँ कि मोहन बहुत ईमानदार है।

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

2. उसका विचार है कि कृष्ण सच्चा आदमी है।
3. पूनम ने कहा कि उसका भाई पटना गया है।

(ii) विशेषण उपवाक्य –

जब कोई आश्रित उपवाक्य प्रधान वाक्य की संज्ञा पद की विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेषण उपवाक्य कहते हैं। ये उपवाक्य जो, जब, जिसे, जहाँ से प्रारंभ हैं।

जैसे– रोहन का भाई गणेश है जो दिल्ली में पढ़ता है।

(iii) क्रियाविशेषण उपवाक्य – जो आश्रित उपवाक्य क्योंकि, ताकि, यदि तो से प्रारंभ होते हैं। शब्दों की आवृति (जिसका – उसका, जब–तक, जिधर–उधर) भी इसी में होती है।

जैसे – यदि मोहन पढ़ता तो अवश्य उत्तीर्ण हो जाता।

जिधर देखों उधर भ्रष्टाचार ही भ्रष्टाचार है।

वाक्य

1. बसंत ऋतु आने पर फूल खिलने लगते हैं।

(1) संयुक्त वाक्य (2) सरल वाक्य (3) मिश्र वाक्य (4) इनमें से कोई नहीं

2. मोहन बेईमान भी है।

(1) सरल वाक्य (2) संयुक्त वाक्य (3) मिश्र वाक्य (4) इनमें से कोई नहीं

3. गीतेश केवल चोर ही नहीं बल्कि झूठा भी है।

(1) सरल वाक्य (2) संयुक्त वाक्य (3) मिश्र वाक्य (4) इनमें से कोई नहीं

4. कल बारिश हो रही थी, इसलिए कपड़े नहीं सूख पाए।

(1) सरल वाक्य (2) मिश्र वाक्य (3) संयुक्त वाक्य (4) इनमें से कोई नहीं

5. मैंने अनुराग को समझाया पर वह नहीं माना।

(1) मिश्र वाक्य (2) संयुक्त वाक्य (3) साधारण वाक्य (4) असाधारण वाक्य

6. मैं खाना खाना चाहती थी पर खाना नहीं बना था।

(1) सरल वाक्य (2) संयुक्त वाक्य (3) मिश्र वाक्य (4) मिश्र–संयुक्त वाक्य

7. मैं तुम से विवाह करना चाहती थी।

(1) सरल वाक्य (2) मिश्र वाक्य (3) संयुक्त वाक्य (4) इनमें से कोई नहीं

8. जैसा करोगे वैसा भरोगे।

(1) सरल वाक्य (2) मिश्र वाक्य (3) संयुक्त वाक्य (4) इनमें से कोई नहीं

9. ज्यों ही मैं घर पहुँची वैसे ही बिजली चली गई।

(1) संयुक्त वाक्य (2) सरल वाक्य (3) मिश्र वाक्य (4) इनमें से कोई नहीं

10. मैं उस लड़के से मिली थी, जो पतंग उड़ा रहा था।

(1) सरल वाक्य (2) मिश्र वाक्य (3) संयुक्त वाक्य (4) मिश्र–संयुक्त वाक्य

11. पापा बहुत जोर दे रहे थे, अतः मुझे हाँ करनी पड़ी।

(1) साधारण वाक्य (2) मिश्र वाक्य (3) संयुक्त वाक्य (4) इनमें से कोई नहीं

12. सोहन यह बताओ कि तुम कल कहाँ थे ?

(1) सरल वाक्य (2) मिश्र वाक्य (3) संयुक्त वाक्य (4) मिश्र–सरल वाक्य

13. मेरे स्टेशन पहुँचने से पहले ही गाड़ी आ चुकी थी।

(1) सरल वाक्य (2) संयुक्त वाक्य (3) मिश्र वाक्य (4) इनमें से कोई नहीं

14. यह पुस्तक किसने लिखी है ?

(1) निषेधात्मक (2) संयुक्त वाक्य (3) विधिवाचक (4) प्रश्नवाचक

15. गणेश को पत्र लिखो।

(1) आज्ञावाचक (2) प्रश्नवाचक (3) निषेधात्मक (4) विधानवाचक

16. निम्न में से असुमेलित है–

(1) प्रश्नवाचक (2) नकारात्मक (3) विधानवाचक (4) आज्ञार्थक

17. शायद मैं कल आऊँ।

(1) संदेहवाचक (2) प्रश्नवाचक (3) विस्मयादिबोधक (4) संकेतवाचक

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

18. राधा पुस्तक पढ़ रही है।

(1) संकेतवाचक (2) निषेधवाचक (3) विधानवाचक (4) इच्छा वाचक

19. वाह! कितना सुंदर दृश्य है ?

(1) विधानवाचक (2) इच्छावाचक (3) आज्ञावाचक (4) विस्मयवाचक

20. वाह! क्या छक्का मारा है ?

(1) विधानवाचक (2) संदेहवाचक (3) विस्मयवाचक (4) नकारात्मक

21. क्या दिनेश डॉक्टर है ?

(1) संकेतवाचक (2) निषेधात्मक (3) प्रश्नवाचक (4) आज्ञावाचक

22. रोहन बाजार जाए।

(1) संकेतवाचक (2) निषेधात्मक (3) इच्छावाचक (4) आज्ञावाचक

23. यदि मोहन काम करेगा तो भूखा नहीं मरेगा।

(1) इच्छावाचक (2) नकारात्मक (3) संकेतवाचक (4) आज्ञावाचक

24. तुम जयपुर जा रही हो ?

(1) विस्मयवाचक (2) प्रश्नवाचक (3) निषेधात्मक (4) विधानवाचक

25. शाबाश! तुमने अच्छा काम किया।

(1) प्रश्नवाचक (2) नकारात्मक (3) विस्मयवाचक (4) संदेहवाचक

26. शायद आज बरसात होगी।

(1) संदेहवाचक (2) निषेधवाचक (3) विधानवाचक (4) इच्छावाचक

27. जैसे ही हम बाहर निकले वैसे ही बारिश होने लगी।

(1) सरल वाक्य (2) संयुक्त वाक्य (3) मिश्र वाक्य (4) इनमें से कोई नहीं

28. "जब बच्चों ने खाना खा लिया तब वे विद्यालय चले गए।" इसमें कौनसा वाक्य है ?

(1) मिश्र वाक्य (2) संयुक्त वाक्य (3) सरल वाक्य (4) इनमें से कोई नहीं

29. निम्नलिखित में से कौनसा निषेधात्मक वाक्य का उदाहरण है–

(1) सोहन तुम गाना गाओ। (2) रीता घर पर नहीं है।

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

(3) राम बाजार जाता है।
(4) माता जी खाना बना रही हैं।

(2)

शब्द – शुद्धि

अशुद्ध		शुद्ध
अगम	–	अगम्य
अगामी	–	आगामी
अजमाइश	–	आजमाइश
अतिथी	–	अतिथि
अत्याधिक	–	अत्यधिक
अबकाश	–	अवकाश
अनेकों	–	अनेक
अलोकिक	–	अलौकिक
अनुतर	–	अनुत्तर
अनुदित, अनुवादित	–	अनूदित
अनुगृह	–	अनुग्रह
अनूजा	–	अनुजा
अनुग्रहीत	–	अनुगृहीता
अन्तरीक्ष	–	अंतरिक्ष
अनधेरा, अंधेरा	–	अँधेरा
अन्ताक्षरी	–	अंत्याक्षरी
अत्येक्ति	–	अत्युक्ति
अध्यन	–	अध्ययन
अधीनस्त	–	अधीनस्थ
अधार	–	आधार
अन्वेशण	–	अन्वेषण
अमावस / अमावश्या	–	अमावस्या / अमावास्य
अवश्यकता	–	आवश्यकता
अभीनेता	–	अभिनेता
अभिष्ट	–	अभीष्ट
असुया	–	असूया (ईर्ष्या)
आसीस	–	आशीष्
अनाथिनि	–	अनाथा, अनाथिनी
आधीन	–	अधीन
अनाधिकार	–	अनधिकार
अपरान्ह	–	अपराह्न
अहार	–	आहार
अहिल्या	–	अहल्या
अहरनिस	–	अहर्निश (दिन–रात)
अद्वितिय	–	अद्वितीय
अक्षेहिणी	–	अक्षौहिणी (सेना)
अन्वीष्ट	–	अन्विष्ट
आईये	–	आइए
आवो	–	आओ
आजीवका	–	आजीविका
आत्मक	–	आत्मिक
आदेस	–	आदेश
आदीत्य	–	आदित्य
आमात्य	–	अमात्य
अध्यात्मिक	–	आध्यात्मिक
आल्हाद	–	आह्लाद
आवाहन	–	आह्वान
आद्र	–	आर्द्र (नम)
इंद्रीय	–	इंद्रिय
इतिहासिक / एतिहासिक	–	ऐतिहासिक
उच्छवास	–	उच्छ्वास
उज्वल,उज्ज्वल	–	उज्ज्वल
उधोग	–	उद्योग
उपरोक्त	–	उपर्युक्त
उपन्यासिक	–	औपन्यासिक
उत्कर्षता	–	उत्कर्ष
उच्छिष्ठ	–	उच्छिष्ट
श्रृंगार	–	शृंगार
श्रृंखला	–	शृंखला
संगृह	–	संग्रह
एच्छिक	–	ऐच्छिक
ऐशवर्य,एश्वर्य	–	ऐश्वर्य
ऐक्यता	–	एकता या ऐक्य
ओद्योगिक	–	औद्योगिक
ओताार	–	अवतार
ओषध	–	औषध
औदार्यता	–	औदार्य, उदारता
कठनाई	–	कठिनाई
कनिष्ट	–	कनिष्ठ
कर्त्तव्य	–	कर्तव्य
कलस	–	कलश
कविंद्र	–	कवींद्र
कृतिज्ञ, क्रतज्ञ	–	कृतध्न
कवियत्री, कवित्री	–	कवयित्री
कालीदास	–	कालिदास
किरपान / क्रपाण	–	कृपाण
क्रितृम	–	कृत्रिम
कर्त्ता	–	कर्ता
कृशांगिनी	–	कृशांगी
कृत्यकृत्य	–	कृतकृत्य
करिए, किजिए	–	कीजिए
कुतुहल	–	कौतुहल, कुतूहल
कुमुदनी	–	कुमुदिनी
कैलाश	–	कैलास

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

कोमलांगिनी	–	कोमलांगी
कोमदी	–	कौमुदी
क्रोधित	–	क्रुदध
क्योंकी	–	क्योंकि
खावेंगे	–	खाएँगे
गर्भीणी	–	गर्भिणी
गिरस्थी	–	गृहस्थी
गणमान्य	–	गण्यमान्य
गीतांजली	–	गीतांजलि
गुरू	–	गुरु
गृहणी	–	गृहिणी
गृहण	–	ग्रहण
गत्यावरोध	–	गत्यवरोध
घनिष्ट	–	घनिष्ठ
घ्रत	–	घृत
चाहये	–	चाहिए
चाहर दीवारी	–	चहारदीवारी
चिंगारी	–	चिनगारी
चिक्कीषा	–	चिकीर्षा
चिन्ह	–	चिह्न
छिति	–	क्षिति (पृथ्वी)
ज्योतसना	–	ज्योत्स्ना
जागृत	–	जाग्रत
जाग्रति	–	जागृति
झनकृत	–	झंकृत
झिल्लाया	–	झल्लाया
झौंपड़ी	–	झोंपड़ी
तत्व	–	तत्त्व
तदोपरान्त	–	तदुपरान्त
तनखा	–	तनख्वाह
तदंतर	–	तदनंतर
तरिका	–	तरीका
तरस्कार	–	तिरस्कार
तत्कालिक	–	तात्कालिक
तिथी	–	तिथि
तियालीस	–	तैंतालीस
त्यौहार, त्योंहार	–	त्योहार
दयालू	–	दयालु
दवागिन	–	दावाग्नि
दिवारात्रि	–	दिवारात्र
दिवाली	–	दीवाली, दीपावली
दमपति	–	दंपती
दियासलाई	–	दीयासलाई
दुख	–	दुःख
दुरावस्था	–	दुरवस्था
दुशासन, दुश्शासन	–	दुःशासन
दुसाध्य	–	दुस्साध्य
द्वारिका	–	द्वारका./द्वारका
दृष्टा	–	द्रष्टा
द्रष्टि	–	दृष्टि
दोगुना	–	दुगुना
धनाड्य	–	धनाढ्य
धुरंदर	–	धुरंधर
नयी	–	नई
नराज	–	नाराज
निरलंब	–	निरवलंब (बिना सहारे)
निःस्वार्थी	–	निःस्वार्थ
निरोग	–	नीरोग
न्यौछावर	–	न्योछावर
निरिक्षण	–	निरीक्षण
निरसता	–	नीरसता
निरव	–	नीरव
निशंग	–	निषंग
नृसंश	–	नृशंस
पकोड़ी	–	पकौड़ी
परणीता	–	परिणीता
परीक्षा	–	परीक्षा
परिस्थित	–	परिस्थिति
परिक्षित	–	परीक्षित
परिक्षण	–	परीक्षण
परुश	–	पुरुष (कठोर)
पत्नि	–	पत्नी
परीतौषिक	–	पारितोषिक
पितांबर	–	पीतांबर
पुरष्कार/पुरुसकार	–	पुरस्कार
पुनरोत्थान, पुर्नुत्थान	–	पुनरुत्थान
परिणित	–	परिणत
पक्षि	–	पक्षी
पक्षीगण	–	पक्षिगण
पुर्नजन्म	–	पुनर्जन्म
पुष्टी	–	पुष्टि
पुज्य, पूज्यनीय	–	पूज्य, पूजनीय
पौरुषत्व	–	पुरुषत्व, पौरुष
प्रशाद	–	प्रसाद
प्रज्जवलित	–	प्रज्वलित
प्रतिनिधी	–	प्रतिनिधि
प्रतिद्बंद	–	प्रतिद्वंद्व
प्रमाणिक	–	प्रामाणिक
प्रभू	–	प्रभु
प्रदर्शिनी	–	प्रदर्शनी
प्रादुभाव	–	प्रादुर्भाव
प्रगट	–	प्रकट

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

फिटकरी	–	फिटकिरी
फैंकना	–	फेंकना
बहुब्रीही	–	बहुव्रीहि
बहन	–	बहिन
बंधू	–	बंधु
बाहू	–	बाहु
बजार	–	बाजार
बहार	–	बाहर
बुद्धिमान	–	बुद्धिमान्
बदानम	–	बादाम
ब्राम्हण	–	ब्राह्मण, (ब्राह्मन)
बिंदू	–	बिंदु
बाल्मीकी	–	वाल्मीकि
बेफिजूल	–	फजूल, फिजूल
बेइमान	–	बेईमान
ब्रहस्पति	–	बृहस्पति
व्योपार	–	व्यापार
भगनी	–	भगिनी
भगीरथी, भागिरथी	–	भागीरथी
भरम	–	भ्रम
भाग्यमान	–	भाग्यवान्
भगत	–	भक्त
भाषाएं	–	भाषाएँ
भिखरिणी	–	भिखारिन
भीसण	–	भीषण
मंजू	–	मंजु
मृत्यूंजस / मृत्युन्जय	–	मृत्युंजय
मतबल	–	मतलब
मध्यान्त, मध्यान्ह	–	मध्याह्न
महत्व	–	महत्त्व
महिना, महना	–	महीना
महात्म्य	–	माहात्म्य
मानवीयकरण	–	मानवीकरण
मिहीर	–	मिहिर
मिठायी	–	मिठाई
मूलतयः	–	मूलतः, मूलतया
मैथलीशरण	–	मैथिलीशरण
मूहुर्त	–	मुहूर्त
मात्रभाषा	–	मातृभाषा
योगीराज	–	योगिराज
युधष्ठर	–	युधिष्ठिर
याज्ञवलक	–	याज्ञवल्क्य
यूँ	–	यों
यौवनावस्था	–	युवावस्था
रचयता, रचियता	–	रचयिता
रविंद्र	–	रवींद्र
रामायन	–	रामायण
रवी	–	रवि
रहिम	–	रहीम
लघुत्तर	–	लघूत्तर
लब्ध प्रतिष्ठित	–	लब्ध प्रतिष्ठ
लछमी	–	लक्ष्मी
लिपी	–	लिपि
लिखत	–	लिखित
लिखेगें	–	लिखेंगे
लीजिये, लिजिये	–	लीजिए
लोकिक	–	लौकिक
वापिस	–	वापस
विरहणी	–	विरहिणी
विस्मरण्न	–	विस्मरण
विश्वासनीय	–	विश्वसनीय
विद्वान स्त्री	–	विदुषी
वरिष्ट	–	वरिष्ठ
विशिष्ठ, विशीष्ट	–	विशिष्ट
वैश्या	–	वेश्या
व्यवहारिक	–	व्यावहारिक
व्यवसायिक	–	व्यावसायिक
व्यंग	–	व्यंग्य
ब्याकरण	–	व्याकरण
शाबास	–	शाबाश
श्वसुर	–	श्वशुर
श्रोत	–	स्रोत
शंशय	–	संशय
शिखिर	–	शिखर
शोनित	–	शोणित
श्रद्धामान	–	श्रद्धावान्
श्रीमति	–	श्रीमती
मिष्ठान्न	–	मिष्टान्न
पड़ौसी	–	पड़ोसी
संवैधानिक	–	सांविधानिक
सरीता	–	सरिता
सन्तती	–	संतति
समिक्षा	–	समीक्षा
संग्रहीत	–	संगृहीत
खदोपदेश	–	सदुपदेश
सन्यासी	–	संन्यासी (सन्न्यासी)
संन्यासनी	–	संन्यासिनी
सरोजनी	–	सरोजिनी
सम्पति	–	सम्पत्ति
सप्ताहिक	–	साप्ताहिक

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

सीधा–साधा	–	सीधा–सादा
सामिग्री	–	सामग्री
सुदामिनी	–	सौदामिनी
सुभाव	–	स्वभाव
सृजन	–	सर्जन
सोभाग्य	–	सौभाग्य
सोंदर्य, सौंदर्यता	–	सौंदर्य / सुंदरता
स्वास्थ्य	–	स्वस्थ / स्वास्थ्य
सकुशलतापूर्वक	–	कुशलतापूर्वक, सकुशल
स्थिती	–	स्थिति
स्वपन	–	स्वप्न
समाधी	–	समाधि
हाथिन	–	हथिनी / हथनी
हानी	–	हानि
हिंदुवों	–	हिंदुओं
हतोत्सहित	–	हतोत्साह
पाणिनी	–	पाणिनि
अतीक्रमण	–	अतिक्रमण
अड़यल	–	अड़ियल
अतिंद्रीय	–	अतींद्रिय
अंतर्ध्यान	–	अंतर्धान
अतैव, अतःएव	–	अतएव
अँकुर	–	अंकुर
अकेद्मिक	–	अकादमिक
अंतर्रात्मा	–	अंतरात्मा
अधिग्रहीता	–	अधिगृहीता
आर्शिवाद	–	आशीर्वाद
आंधी	–	आँधी

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

काल

काल क्रिया के जिस रूपांतर द्वारा उसके होने के समय का बोध हो, उसे काल कहते हैं। इसके मुख्य रूप से तीन भेद हैं।

1. **वर्तमानकाल –** जो अब हो रहा है। जैसे – राम पुस्तक पढ़ता है।
2. **भूतकाल –** जो पहले हो चुका है। जैसे – राम ने पुस्तक पढ़ी
3. **वर्तमान काल –** जो आगे होगा। जैसे – राम पुस्तक पढ़ेगा।

1. वर्तमान काल के तीन भेद हैं –

(i) सामान्य वर्तमान (ii) तात्कालिक वर्तमान (iii) संदिग्ध वर्तमान

(i) सामान्य वर्तमान :– क्रिया के जिस रूप से उसके वर्तमान काल में सामान्य रूप से होने का पता चले, उसे सामान्य काल कहते हैं।

कर्ता + धातु + ता / ते / ती + है / हैं / हूँ / हो।

जैसे – हरीश दौड़ता है राधा नाचती है। मैं पढता हूँ। तुम स्नान करते हो।

(ii) तात्कालिक वर्तमान – क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि वह अभी जारी है, उसे अपूर्ण वर्तमान काल कहते हैं।

कर्ता + धातु + रहा / रहे / रही + है / हैं / हूँ / हो /

जैसे – हम लट्टू नचा रहे हैं।, लता खाना खा रही है।

(iii) संदिग्ध वर्तमान – क्रिया के जिस रूप से उसके वर्तमान समय में होने का निश्चत न हो अर्थात् उसके लेने में संदेह की स्थिति हो, उसे संदिग्ध वर्तमान काल कहा जाता है। जैसे – राम पुस्तक पढ़ता होगा। प्रभा रोटी पकाती होगी।

कर्ता + धातु + ता / ते / रहा / रहे / रही / होगा / होगी / होंगी / होंगे / हूँगा। आदि

2. भूतकाल –

क्रिया के जिस रूप से उसके बीते हुए समय में होने का बोध हो, उसे भूतकाल कहते हैं। इसके मुख्य रूप से छः भेद है।

(i) सामान्य भूत (ii) आसन्न भूत (iii) पूर्ण भूत

(iv) अपूर्ण भूत (v) संदिग्ध भूत (vi) हेतुहेतुमद्भूत

(i) सामान्य भूतकालः – क्रिया के जिस रूप से सामान्यतः कार्य का बीते हुए समय में होना पाया जाए, उसे सामान्य भूतकाल कहा जाता है। जैसे – उसने कहा। लोग आए । रवि ने खाना खाया।

कर्ता + धातु + आ / ए / ई / चुका / चुके / चुकी / या / ये / यी।

(ii) आसन्न भूत :– आसन्न का अर्थ है निकट। क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि वह भूतकाल में आंरभ होकर अभी –अभी समाप्त हुई है, उसे आसन्न भूत कहतें है। सामान्य भूतकाल + है / हैं / हूँ / हो /

जैसे – हरिश्चंद्र ने गाना गाया है। मैंने घड़ी खरीदी है। तुम अभी–अभी आए हो।

(iii) पूर्णभूत :– क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि कार्य भूतकाल में बहुत पहले ही पूर्ण हो चुका था, वहाँ पूर्ण भूतकाल होता है। सामान्य भूतकाल + था / थे / थी ।

जैसे – वाल्मीकि ने रामायण की रचना की थी।

हम छुट्टियों में दक्षिण भारत की यात्रा पर गए थे।

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

(iv) अपूर्ण भूत – क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि वह भूतकाल में हो रही थी, परंतु उसकी समाप्ति भूतकाल में सूचित न हो, उसे अपूर्ण कहते हैं। कर्ता + धातु + ता / ते / रहा / रहे / रही + था / थे / थी।

जैसे – मैं पुस्तक लिख रहा था (लिखता था।)

वह परीक्षा की तैयारी करता था।

(v) संदिग्ध भूत : – बीते हुए समय में जिस क्रिया के होने में संदेह पाया जाए, उसे संदिग्ध भूतकाल कहते हैं।

जैसे –बस चली गई होगी। तुम्हारे भाई ने मुझे स्मरण किया होगा। माता जी ने खाना बनाया होगा।

सामान्य भूतकाल + होगा / होगी / होंगे / होंगी / हूँगा।

(vi) हेतुहुतुमद् भूत :– जब भूतकाल की एक क्रिया दूसरी क्रिया पर आश्रित हो, तो वहाँ पर हेतुहुतुमद् भूतकाल होता है।

जैसे – यदि तुम आते तो हम मेला देखने चलते।

यदि सरला परिश्रम करती तो अवश्य पास हो जाती।

भविष्यत्काल –

क्रिया के जिस रूप से आने वाले समय में उसके करने या होने का बोध हो, उसे भविष्यत्काल कहते हैं। इसके मुख्य रूप से तीन भेद है

(i) सामान्य भविष्यत्

(ii) संभाव्य भविष्यत्

(iii) हेतुहेतुमद् भविष्यत्

(i) सामान्य भविष्यत् – जब सामान्य रूप से आने वाले समय में क्रिया का करना या होना प्रकट हो, तो वहाँ पर सामान्य भविष्यत् काल होता है। जैसे – हम कल कश्मीर की यात्रा पर जाएँगे। श्याम बाँसुरी बजाएगा। सैनिक देश की रक्षा करेंगे

(ii) संभाव्य भविष्यत् – जहां भविष्य में काम करने की संभावना हो। जैसे – शायद आज वर्षा हो।

(iii) हेतुहेतुमद् भविष्यत् – भविष्य में कोई कार्य हो जाएगा यदि ऐसा होगा का पता चलता है। जैसे – यदि तुम आओगे तो मैं घूमने चलूँगा।

काल

1. किस वाक्य में क्रिया वर्तमान काल में है ?

(1) राधा ने फल खा लिए थे।
(2) मैं तुम्हारा पत्र पढ़ रहा हूँ।
(3) अचानक बिजली कौंध उठी।
(4) कल वे आने वाले थे।

2. किस वाक्य में क्रिया भूतकाल में नहीं है ?

(1) वह पढ़ रहा था।
(2) उसने पढ़ाई की थी।
*(3) वह पढ़ने वाला है।
(4) उसने पढ़ाई की थी।

3. इनमें से तात्कालिक वर्तमान (अपूर्ण वर्तमान) काल का उदाहरण कौनसा है ?

(1) वह जाता है।
(2) वह जा चुका है।
(3) वह जा रहा है।
(4) वह जाता होगा।

4. अपूर्ण भूत का उदाहरण कौनसा वाक्य है ?

(1) वह आता होगा।
(2)वह आ रहा था।
(3) वह आया था।
(4) तुमने खाया होगा।

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

5. किस वाक्य में क्रिया भविष्यकाल में है ?

(1) मैं आपका आभारी हूँ।
(2) मैं आपकी प्रतीक्षा करूँगा।
(3) मैंने एक पेड़ काट लिया।
(4) मैं पुस्तक पढ़ने वाला था।

6. किस वाक्य में क्रिया सामान्य भूतकाल में है ?

(1) उसने पुस्तक पढ़ी
(2) उसने पुस्तक पढ़ी है
(3) वह पुस्तक पढ़ रही थी
(4) उसने पुस्तक पढ़ी होगी

लोकोक्तियाँ एवं मुहावरे

लोकोक्ति

लोकोक्ति शब्द लोक + उक्ति के योग से बना है जिसका शाब्दिक अर्थ है लोगो द्वारा कहा गया कथन। लोकोक्ति लोगों द्वारा कही गयी अनुभवपूर्ण बाते हैं, इन्हें कहावतें भी कहते हैं। यह पूर्ण वाक्य होती है। अधिकतर लोकोक्तियों का संबंध प्राचीन लोककथाओं से है।

मुहावरा

जो वाक्यांश निरन्तर अभ्यास में आने के कारण एक विशेष अर्थ में रूढ़ हो गए, उन्हें मुहावहरा कहते हैं। यह वाक्यांश होता है। एक मुहावरे के एक से अधिक अर्थ ग्रहण किए जा सकते हैं। जबकि एक अर्थ में एक से अधिक मुहावरे आ सकते हैं। मुहावरे के मूल रूप में परिवर्तन नहीं किया जा सकता अर्थात् आँखों का तारा होना के स्थान पर नयंनो का तारा होना नहीं किया जा सकता। इसके अन्त में ना का प्रयोग किया जाता है।

लोकोक्ति और अर्थ

1. अंधों में काना राजा –
मूर्खो में कम पढ़–लिखे का सम्मान/अज्ञानियों में थोड़ा जानकार ही विद्वान माना जाता है।

2. अकेला चना भाड़ नही फोड़ सकता–
किसी बड़े कार्य को अकेला आदमी कर सकने में असमर्थ होता है।

3. अधजल गगरी छलकत जाय–
बिना सामार्थ्य के डींग हाँकना

4. अंधी पीसे कुत्ता खाय–
मूर्ख की दौलत का दूसरों के द्वारा लाभ उठाना।

5. अक्ल का अंधा/दुश्मन होना –
बहुत बड़ा बेवकूफ/ महामूर्ख होना।

6. आँख का अंधा नाम नयन सुख –
गुणों के विरूद्ध नाम होना।

7. आँख का अंधा गाँठ का पूरा।
मूर्ख परन्तु धनी व्यक्ति।

8. आग लगन्ते झोंपड़ा, जो निकले सो लाभ।
अधिक नुकसान होते – होते, जो कुछ बचाया जा सके वही लाभ है।

9. आगे नाथ न पीछे पगहा।
सभी तरह की जिम्मेवारी से मुक्त होना।

10. आम के आम गुठलियों के दाम।
दोहरा लाभ, अधिक लाभ।

11. ऊँट के मुँह में जीरा।
जरूरत की तुलना में अत्यधिक कम पूर्ति।

12. आ बैल मुझे मार।
जानबूझकर मुसीबत मोल लेना।

13. आए थे हरिभजन को ओटन लगे कपास।
उत्तम लक्ष्य की पूर्ति न कर तुच्छ कार्य में लग जाना।

14. आस्तीन का साँप होना।
अपने ही खास व्यक्ति का विश्वासघाती होना

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

15. अपना हाथ जगन्नाथ।
स्वावलम्बी होना/स्वयं कार्य करना ही विश्वसनीय होता है।

16. अरहर की टट्टी गुजराती ताला।
ना कुछ वस्तु के लिए अधिक खर्च करना।

17. आठ कन्नौजिया नौ चूल्हे।
संख्या मे कम हेाने पर भी आपसी फूट होना।

18. इन तिलों में तेल नहीं।
किसी प्रकार के लाभ की संभावना का न होना।

19. ईश्वर की माया, कही धूप कही छाया।
विश्व में व्याप्त भिन्नता/दैव गति कौन जानता है।

20. ऊँची दुकान फीके पकवान।
मात्र बाहरी दिखावा/ अधिक प्रदर्शन किन्तु सार कम होना।

21. एक पंथ दो काज।
एक कार्य से दूसरा कार्य भी हो जाना/एक साथ दो लाभ

22. एक अनार सौ बीमार।
वस्तु एक, चाहने वाले अनेक होना/वस्तु की पूर्ति की तुलना में माँग अधिक।

23. उल्टे बाँस बरेली को।
जो वस्तु जहाँ बहुतायत में उपलब्ध हो , वही पर वह वस्तु पहुँचाना/ विपरीत कार्य।

24. उतर गई लोई तो क्या करेगा कोई।
बेशर्म व्यक्ति पर कोई प्रभाव नहीं डाल सकता।

25. ऊँट किस करवट बैठता है।
लाभ किस पक्ष को होता है इसकी प्रतीक्षा करना/ऐसी परिस्थिति की प्रतीक्षा करना जिसका अनुमान लगाना सम्भव नहीं।

26. एक हाथ से ताली नहीं बजती।
कोई कार्य इकतरफा नहीं होता/ केवल एक पक्ष के सक्रिय होने से कार्य पूरा नहीं होता।

27. एक और एक ग्याहर होते हैं।
समूह में बड़ी ताकत होती है/संघ ही शक्ति है

28. एक तो करेला दूसरे नीम चढ़ा।
एक साथ दो–दो कमियाँ/एक साथ दो–दो प्रतिकूलताएँ।

29. ओखली में सिर दिया, तो मूसलों से क्या डर।
किसी कठिन कार्य को हाथ में लेने के बाद मुसीबतों से न घबराना।

30. कहाँ राजा भोज कहाँ गंगू तेली।
एक दूसरे के सामर्थ्य में आकाश–पाताल का अन्तर होना/ऊँचे और सामान्य की तुलना कैसी ?

31. काठ की हाँडी बार–बार नहीं चढ़ती।
कपटपूर्ण व्यवहार स्थायी नहीं रहता।

32. काम प्यार है, चाम प्यारा नहीं
कार्य ही प्रशंसित होते हैं, रंग या पद नहीं।

33. कोऊ नृप होई हमें का हानि।
निरपेक्ष रहना/किसी भी बदलाव के प्रति उदासीनता।

34. कौआ (कागा) चले हंस की चाल।
दुष्प्रवृति के व्यक्ति द्वारा अच्छे व्यवहार का दिखावा

35. कोयले की दलाली में हाथ काले।
दुष्कर्म से सम्बद्ध होने से बुराई मिलती है/ बुरे सान्निध्य का दुष्परिणाम होता है।

36. काला अक्षर भैंस बराबर ।
निपट निरक्षर होना।

37. खग जाने खग ही की भाषा।
अपने – अपने समुदाय के लोगों की बात सब समझते हैं/ जो जिस परिवेश में रहता है उसका भेद वही जानता है।

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

38. खरी मजूरी चोखा काम।
पूरे काम का पूरा पारिश्रमिक मिलता है/ उचित मेहनताना देने पर उचित कार्य का मिलना

39. खाली दिमाग शैतान का घर।
व्यर्थ बैठे रहने पर शैतानी सूझती है।

40. ख़ुदा गंजे को नाखून नहीं देता।
अयोग्य व्यक्ति को अधिकार नहीं मिलता/ओछा आदमी सम्मान पाकर इतराता है।

41. खोदा पहाड़ और निकली चुहिया।
अधिक परिश्रम पर कम लाभ/कठिन मेहनत से सामान्य प्राप्ति

42. गंगा गए गंगादास, जमुना गए जमुनादास।
अवसरवादी व्यक्ति/ मुँह देखकर आचरण करने वाला

43. घर का जोगी जोगना आन गाँव का सिद्ध।
योग्य अपनों की बजाय दूसरों को महत्व देना

44. घर का भेदी लंका ढाए।
घर का रहस्य जानने वाला ही सबसे अधिक नुकसान पहुँचाता है।,

45. घर का न घाट का
कही का नहीं होना

46. घर में नही दाने, बुढ़िया चली भुनाने
थोथा प्रदर्शन/ अवास्तविक दिखावा।

47. घर खीर तो बाहर खीर।
घर में इज्जत है तो बाहर भी इज्जत होती है।

48. घायल की गति घायल जाने।
जिसे दुःख भोगने का अनुभव होता है वही दूसरे का दुःख को समझता है

49. चंदन की चुटकी भली गाड़ी भरा न काठ।
गुणवान थोड़ी वस्तु भी, गुण रहित अधिक वस्तु से अच्छी होती है।

50. चमड़ी जाय पर दमड़ी न जाए।
बहुत बड़ा कंजूस।

51. चार दिन की चाँदनी फिर अँधेरी रात।
क्षणिक सुख अधिक दुःख

52. चिराग (दीपक) तले अंधेरा
अपनी कमियाँ (बुराइयाँ) नहीं दीखती।

53. चुपड़ी और दो दो ।
अच्छी वस्तु और वह भी बहुतायत में /श्रेष्ठ वस्तु अधिक मात्रा में।

54. चोरन कुतिया मिल गई पहरा किसका देय।
जब रक्षक की ही नियत खराब हो जाए/ जब पहरेदार ही चोरों से मिल जाए तो पहरेदार का क्या फायदा

55. चोर की दाढ़ी में तिनका।
अपराधी स्वयं सशंकित रहता है/दोषी अपने व्यवहार से ही दोष का संकेत दे देता है।

56. चोरी और सीनाजोरी।
अपराध भी करे और अकड़े भी

57. चोरी का माल मोरी में ।
अनुचित साधन से कमाई सम्पत्ति यों ही बर्बाद होती है।

58. छछूंदर के सर में चमेली का तेल।
स्तरहीन व्यक्ति द्वारा स्तरीय वस्तु का उपयोग।

59. जल में रह कर मगर से बैर।
जिसके आश्रय में रहे उसी से शत्रुता/अपने से अधिक ताकतवरों के बीच रहकर उन्हीं से दुश्मनी बढ़ाना।

60. जस दूल्हा तस बनी बरात।
जैसा व्यक्ति वैसे साथी।

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

61. जान बची और लाखों पाए।
जीवन है तो जहान है।

62. जिन ढूंढ तिन पाइयाँ गहरे पानी पैठ।
परिश्रमशील को फल अवश्य मिलता है।

63. जिसकी लाठी उसकी भैंस।
शक्तिशाली ही सम्पत्ति/अधिकार/विजय प्राप्त करता है।

64. जैसे साँपनाथ वैसे नागनाथ।
एक जैसा चरित्र होना।

65. जैसा देश वैसा भेष।
स्थान एवं अवसर के अनुसार व्यवहार

66. जो गुड़ खाए सो कान छिदाए।
लाभ प्राप्त करने वाले को ही तकलीफ उठानी पड़ती है।

67. जो जस करहिं सो तस फल चाखा।
कर्मानुसार फल प्राप्ति

68. झूठ के पैर नहीं होते ।
झूठ अधिक समय तक नहीं चलती।

69. डूबते को तिनके का सहारा।
संकट के समय थोड़ा सहारा भी बहुत होता है।

70. ढाक के तीन पात।
सदैव एक सा रहना/ परिवर्तन रहित मनुष्य।

71. तबेले की बला बंदर के सिर।
करे कोई भरे कोई/अपराध किसी एक ने किया दोष दूसरे के सिर डाल देना।

72. तीन में न तेरह में ।
जिसका किंचित् भी महत्व न हो /पूर्णतया महत्वहीन।

73. तीन लोक से मथुरा न्यारी।
सबसे अलग हालात/विचित्र रीति–नीति।

74. तिनके की ओट में पहाड़।
अल्प साधन से बड़ा काम/ तुच्छ वस्तु के पीछे बड़े रहस्य का छिपा होना।

75. तुरन्त दान महाकल्याण।
शुभ कार्य का फल तुरन्त मिलता है।

76. थोथा चना बाजे घना।
कमजोर व्यर्थ की डींग मारता है/ अकर्मण्य बात ज्यादा करता है।

77. थोड़ी पूँजी धणी को खाय।
कम पूँजी से व्यापार में नुकसान/घाटा होता है।

78. दान की बछिया के दाँत नहीं गिने जाते ।
मुफ्त में प्राप्त के दोष नहीं देख जाते

79. दाख पके तब काग के होय कंठ में रोग।
किसी वस्तु के उपयोग करने के समय उपभोग करने की क्षमता का अभाव/दाढ़ है तो चने नहीं, चने हैं तो दाढ़ नही।

80. दाल में काला होना।
कुछ संदेहास्पद बात होना।

81. दाल–भात में मूसलचंद।
दो के बीच में बिना आमंत्रण दखलंदाजी करना/अनुचित हस्तक्षेप करना।

82. दूध का दूध पानी का पानी।
उचित न्याय करना

83. दूध का जला छाछ को फूँक फूँक कर पीता है।
भुक्तभोगी आगे सतर्क रहता है/एक बार हानि उठाकर भविष्य के लिए सचेष्ट रहना।

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

84. धोबी का कुत्ता घर का ना घाट का।
जो व्यक्ति दोनों तरफ जुड़ा रहता है वह कहीं का नहीं रहता।

85. न उधो का लेना न माधो का देना।
किसी का किसी से कोई मतलब नहीं होना।

86. न नौ मन तेल होगा, न राधा नाचेगी।
कार्य नहीं करने के लिए बहाना/किसी कार्य को करने के लिए अनुचित शर्त रखना।

87. नक्कारखाने में तूती की आवाज।
कमजोर की कोई नहीं सुनता/बड़ों के बीच में छोटे की कोई नहीं सुनता।

88. न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी।
किसी कार्य के मूल कारण को ही नष्ट कर देना।

89. नाच न जाने आँगन टेढ़ा।
अपनी अयोग्यता को छिपाने हेतु साधनों को दोष देना/अयोग्यता पर पर्दा डालना।

90. नाम बड़े और दर्शन छोटे।
ख्याति के अनुरूप व्यक्तित्व का न होना।

91. नीम हकीम खतरा–ए जान।
अज्ञानी, मूर्ख एवं अनुभवहीन खतरनाक होता है।

92. नेकी और पूछ–पूछ।
अच्छे कार्य करने के लिए अनुमति की आवश्यकता नहीं /शुभ कार्य करने के लिए किसी से क्या पूछना

93. नेकी कर दरिया में डाल।
किसी की भलाई करके भूल जाना/भलाई के लिए भलाई की अपेक्षा न करना।

94. नौ दिन चले अढ़ाई कोस।
अत्यधिक सुस्ती से कार्य करना/मंदगति से काम होना।

95. पर उपेदश कुशल बहुतेरे।
दूसरों को उपदेश देना आसान है, करना कठिन।

96. पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं।
पराधीनता में सुख नहीं मिलता।

97. प्रभुता पाहि काहि मद नाहिं।
उच्च पदासीन होने पर किसी को घमंड नहीं होता ।

98. बद अच्छा बदनाम बुरा।
अपयश बुरा होता है/नुकसान उठाना बेहतर है बजाय बदनामी के।

99. बोया पेड़ बबूल का आम कहाँ से खाय
बुरे कार्यों से सुफल की प्राप्ति कहाँ ?

100. फिसल पड़े तो हर गंगा।
कार्य के बिगड़ जाने पर यह कहना कि यही होना था।

101. बंदर क्या जाने अदरख का स्वाद।
मूर्ख अच्छी वस्तु की कद्र नहीं जानता/मूर्ख को गुणों की पहचान कहाँ।

102. बासी बचे न कुत्ता खाय।
अपव्यय न होना/आवश्यकता के अनुसार काम करना।

103. बैठे से बेगार भली।
बेकार बैठने की बजाय कुछ न कुछ करना।

104. भूखे भजन न होय गुपाला।
भूखे पेट कोई कार्य नहीं हो सकता ।

105. भागते चोर की लँगोटी भली।
जिससे कुछ न मिलने की उम्मीद हो उससे कुछ भी पा लेना अच्छा है।

106. मन की मन में रह जाना।

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

इच्छा पूरी न होना।

107. मन चंगा तो कठौती में गंगा।

मन की पवित्रता ही महत्त्वूर्ण है/मन की शांति ही श्रेष्ठ है।

108. मान न मान मैं तेरा मेहमान।

जबर्दस्ती किसी के गले पड़ना/ अनचाहे गले पड़ना।

109. मुख में राम बगल में छुरी।

दिखावें में अच्छा, किन्तु व्यवहार में धोखा देने की नीयत

110. यथा राजा तथा प्रजा।

जैसा शासक वैसी जनता।

111. लिखित सुधाकर लिखिगा राहू।

कोई अच्छी उपलब्धि के योग्य हो, लेकिन दुर्योग से बुरा परिणाम भोगना पड़े।

112. लिखे ईसा पढ़े मूसा।

अस्पष्ट लिखावट/अपाठ्य लेख।

113. सहज पके सो मीठा होय

स्वाभाविक रूप से किया हुआ कार्य अच्छा होता है।/ धैर्यपूर्वक कार्य करना।

114. समय चूकि पुनि का पछिताने।

अवसर निकल जाने के बाद पछताने से क्या फायदा

115. साझे की हाँडी चौराहे पर फूटती है।

साझेदारी समाप्त होते ही सबके सामने उजागर हो जाती है।

116. साँप भी मर जाये और लाठी भी न टूटे।

बिना किसी हानि के लक्ष्य प्राप्त करना।

117. साँप–छछूँदर की गति होना।

असमंजस की स्थिति / दुविधाग्रस्त।

118. सावन हरे न भादो सूखा।

सदैव एक जैसा रहना।

119. सब धान बाईस पंसेरी।

मूर्ख के लिए अच्छा–बुरा सब बराबर है।

120. सौ सौ चूहे खाकर बिल्ली हज को चली।

जीवन पर्यन्त पाप करते रहे और अन्त में भक्त बनने का ढ़ोंग।

121. हथेली पर सरसों उगाना।

कोई भी कार्य बिना एक प्रक्रिया तथा समय के पूर्व नहीं होता ।

122. हाथ कंगन को आरसी क्या।

प्रत्यक्ष को प्रमाण की आवश्यकता नहीं।

123. हाथी के दाँत खाने के और दिखाने के और होते हैं।

कथनी – करनी में अंतर होना।

124. होनहार बिरवान के होते चीकने पात।

पूत के पाँव पालने में ही दिख जाते हैं/ प्रतिभा के लक्षण बचपन से ही दिखने लगते हैं।

मुहावरे और अर्थ

1. अंक भरना

गोद भर लेना/लिपटा लेना

2. अंडे सेना

घर में निठल्ले होकर बैठना/घर पर रहना

3. अँगूठा दिखा देना

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

सहायता करने से मुकर जाना / समय पर धोखा देना

4. **अंगारों पर पैर रखना**
   जानबूझ कर संकटपूर्ण कार्य करना।
5. **अगर–मगर करना**
   बहाना बनाना / टाल–मटोल करना।
6. **अपना उल्लू सीधा करना**
   अपना स्वार्थ सिद्ध करना / अपना काम निकालना
7. **अपनी खिचड़ी अलग पकाना**
   सबसे अलग बात रखना / स्वार्थी होना / सबसे अलग रहना।
8. **अपना–सा मुँह देखते रह जाना**
   लज्जित होना / निराश हो जाना।
9. **अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारना**
   अपन नुकसान स्वयं ही करना / स्वयं संकट मोल लेना।
10. **अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना**
    स्वयं की बडाई करना / अपनी प्रशंसा आप करना
11. **अपने पैरों खड़ा होना**
    स्वावलम्बी होना / आत्मनिर्भर होना
12. **आँख का कांटा होना**
    शत्रु होना / बुना लगना
13. **आँख रखना**
    निगाह रखना / निगरानी रखना
14. **आँख की किरकिरी**
    जिसे देख कर कष्ट हो / अवांछित व्यक्ति
15. **आँख लगाना**
    चौकन्ना रहना / निगाह रखना / कुदृष्टि
16. **आँखे खुलना**
    आभास होना / होशियार रहना / ज्ञान होना
17. **आँखे चार करना**
    आमना–सामना करना
18. **आँखें चुराना**
    कतरा जाना / सामना नहीं करना / लज्जित होना
19. **आँखें नीची होना**
    शर्म से आँखें ने मिलाना
20. **आँखे बिछाना**
    प्रेम एवं उत्साहपूर्वक स्वागत करना / बाट जोहना / इंतजार करना।
21. **आँखों से गिरना**
    सम्मान खो देना / किसी का विश्वास खो देना।
22. **आँखों में खून उतरना**
    क्रोध में आँखे लाल होना / बहुत ज्यादा क्रोधित होना।
23. **आँखों का तारा**
    बहुत प्यारा / अत्यत्न प्रिय
24. **आँखों में धूल झोंकना**
    धोखा देना
25. **आँखें मं चर्बी छा जाना**
    घमण्ड होना / घमण्ड से उपेक्षा करना
26. **आग लगने पर कुआँ खोदना**

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

संकट सामने आने पर बचाव के उपाय ढूंढना शुरू करना।

27. आँच न आने देना

जरा भी कष्ट या दोष न आने देना

28. आटे–दाल का भाव मालूम होना

सांसारिक परेशानियों का ज्ञान होना/जीवन के कठोर यथार्थ का अनुभव करना

29. आकाश के तारे तोड़ना

असम्भव को सम्भव करने का प्रयत्न करना

30. आकाश पाताल का अन्तर होना

अत्यधिक अंतर होना।

31. आड़े हाथों लेना

किसी की गलती पर उसको फटकारना या खिंचाई करना

32. आपे से बाहर होना

किसी के व्यवहार पर अत्यन्त क्रुद्ध या उत्तेजित होकर होश खो देना

33. आसमान टूट जाना

बहुत बड़ी मुसीबत आना/प्राकृतिक आपदा आना

34. आसन डोलना

विचलित या क्षुब्ध होना

35. ईद का चाँद होना।

बहुत दिनों बाद या कभी कभी दिखाई देने वाला

36. उँगली पर नचाना

किसी से अपनी इच्छानुसार कार्य करवाना

37. उँगली पकड़ कर पहुँचा पकड़ना

प्रारम्भ में थोड़ा प्राप्त कर बाद में धीरे–धीरे पूरा लेने का प्रयास करना

38. उड़ती चिड़िया पहचानना

सूक्ष्म दृष्टि रखना/मन की या रहस्य की बात ताड़ना/थोड़े से इशारे से रहस्य की बात जान लेना/ रहस्य की बातों को जानना

39. उड़ता तीर झेलना

दूसरे की मुसीबत को सामने से अपने ऊपर लेना

40. उलटी गंगा बहाना

परम्परा विरूद्ध कार्य करना/रीति के विपरीत कार्य करना

41. उलटी माला फेरना

किसी के प्रति अशुभ सोचना/ किसी का अहित सोचना

42. एक आँख से देखना

समान समझना/ भेदभाव नहीं करना/ बराबर मानना।

43. एक ही थैली के चट्टे बट्टे

सभी समान रूप से बुरे मनुष्य

44. एक लाठी से सबको हाँकना

सबके साथ एक सा आचरण करना/ उचित–अनुचित का विचार किये बिना व्यवहार करना

45. कंधा लगाना

किसी को सहारा देना

46. कमर कसना

पूर्णतः तैयार होना

47. कच्चा चिट्ठा खोलना

पर्दाफाश करना/किसी की कमजोरियों को उजागर करना।

48. कलई खोलना

किसी की गलती का पर्दाफाश करना/ पता लगाना।

49. कलेजा थामना

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

अशुभ की आशंका या भय से स्तम्भित रह जाना

50. कलेजा मुँह को आना

अत्यधिक घबरा जाना

51. कलेजा ठंडा होना

शांति मिलना/संतोष होना

52. कान पर जूँ नहीं रेंगना

किसी की परवाह नहीं करना / किसी बात का प्रभाव नहीं होना

53 कान खड़े होना

सावधान या चौकन्ना होना

54. कान भरना

बहकाना/किसी की लुक छिपकर चुगली करना

55. कान लगाना

ध्यान देना/केन्द्रित होना

56. काला मुँह होना

बदनाम होना/दोषारोपण हो जाना/कालिख पुतना

57. काठ का उल्लू

निरा मूर्ख

58. किए कराए पर पानी फेरना

अपनी गलती से पूर्ण होते अच्छे कार्य को नष्ट करना

59. कोढ़ में खाज होना

दुःख के बाद दुःख आना

60. कौड़ी के मोल

अत्यधिक सस्ता

61. खाक छानना

व्यर्थ भटकना/इधर –उधर लक्ष्यहीन भटकना

62. ख्याली पुलाव पकाना

केवल व्यर्थ की कल्पनाएँ करना

63. खून पसीना एक करना

कठोर परिश्रम करना/ अत्यधिक मेहनत करना

64. खून सूखना

अत्यधिक भयभीत हो जाना

65. गंगा नहाना

कोई श्रेष्ठ किन्तु अत्यधिक कठिन कार्य पूर्ण करना

66. खून सफेद हो जाना

दया भाव का अभाव होना

67. गड़े मुर्दे उखाड़ना

बीती कटु बातों का स्मरण करना/दबी हुई बात को फिर से उभारना

68. गरदन पर छुरी फेरना

किसी को जानबूझ कर नष्ट करने का कार्य करना

69. गागर में सागर

कम शब्दों में अधिक कहना/थोड़े में बहुत

70. गाँठ बांधना

दृढ़ प्रतिज्ञ होना/सदा–सदा के लिए याद रखना/खूब याद रखना

71. गुल खिलाना

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

किसी बखेड़ा के खड़े करने की आशंका

72. गुदड़ी का लाल
गरीब एवं साधारण घर में प्रतिभा सम्पन्न का जन्म होना

73. गुड़ गोबर करना
रंग में भंग करना/अच्छे कार्य का बरबाद होना

74. घाट–घाट का पानी पीना
जगह–जगह का अनुभव होना/बहुत चालाक होना

75. घी के दीपक जलाना
खुशियाँ एवं आनन्द मनाना

76. घास काटना
चलता एवं निम्न स्तरीय कार्य करना/ बिना सोचे–समझे गुणवता हीन कार्य करना

77. घुटने टेकना
हार स्वीकार करना/असमर्थता स्वीकारना

78. घर में गंगा बहना
किसी उत्तम वस्तु का निकट ही सहज उपलब्ध होना

79. चल बसना
दिवंगत होना / मृत्यु हो जाना

80. चींटी के पर निकलना
विनाश के लक्षण प्रकट होना/मृत्यु के दिन निकट आना

81. चुल्लू भर पानी में डूबना
लज्जा के मारे मुँह नहीं दिखाना

82. चोली दामन का साथ
गहरी मित्रता/अत्यन्त निकटता

83. चौथ का चाँद होना
किसी अन्य के लिए शुभ होना

84. छाती पर साँप लोटना
ईर्ष्या करना/विपक्षी की सम्पन्नता देख कर जलना

85. छक्के छुड़ाना
विपक्षी को परेशान करना/ हिम्मत पस्त करना

86. छठी का दूध याद दिलाना
विकट स्थिति में डालना /संकट में डालना

87. छप्पर फाड़ कर देना
लाटरी की तरह आकस्मिक धन प्राप्त होना/भाग्य से या अनाचक प्राप्त होना

88. छाती पर पत्थर रखना
हिम्मत करके घोर विपत्ति में भी विचलित न होना/हृदय कठोर करना

89. छाती पर मूँग दलना
सदैव पास रहकर हार्दिक कष्ट देना

90. जड़ जमाना
किसी कार्य में अपनी मजबूत स्थिति करना या जमना

91. जहर उगलना
अपमानजनक बात कहना

92. जान पर खेलना
जीव जोखिम में डालना/प्राणों का संकट मोल लेना

93. जिंदा मक्खी निगलना
जानबूझ कर गलती या अन्याय करना/सरासर अन्याय करना

94. टेढ़ी खीर होना

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

दुष्कर या कठिन कार्य होना

95. टोपी उछालना

अपमान या बेइज्जत करना/ अनादर करना

96. ठिकाने लगाना

समाप्त कर देना/मार देना

97. डकार जाना

किसी की सम्पत्ति अनुचित ढंग से हड़प करना

98. थूक कर चाटना

अपने वचनों से मुकर जाना।

99. दर–दर की ठोकरें खाना

मारे–मारे भटकना/बहुत कष्ट उठाना

100. दाँत काटी रोटी

अत्यधिक घन्ष्ठिता होना

101. दाँतो तले उँगली दबाना

आश्चर्य चकित होना

102. दाँत खट्टे करना

हरा देना/परास्त करना/पराजित करना

103. दाना पानी उठना

स्थान परिवर्तन/जीविकोपार्जन हेतु किसी स्थान से जाने का संयोग होना

104. दाहिना हाथ

निकट सहायक/अत्यधिक महत्वपूर्ण सहारा/विश्वसनीय

105. दिन–रात एक करना

कठिन परिश्रम करना।

106. दिन–दूना रात चौगुना

अत्यधिक उन्नति होना

107. दूध का दूध पानी का पानी

उचित न्याय

108. दूर के ढोल सुहावने

दूर की चीजें अच्छी लगना

109. दो नावों पर पैर रखना

दोनों पक्षों का आश्रय लेना/अस्थिर चित्त

110. धूप में बाल सफेद न होना

अनुभव प्राप्त होना

111. नजर करना

भेंट करना

112. नमक – मिर्च लगाना

किसी बात को व्यर्थ की झूठी–सच्ची बातें लगाकर बढ़ा–चढ़ा कर कहना

113. नस–नस पहचानना

किसी को गहराई से समझना/किसी के बारे में विस्तृत जानकारी रखना

114. नाक का बाल होना

अतिप्रिय व्यक्ति

115. नाक रगड़ना

चापलूसी करना/ बहुत मिन्नत करना।

116. नाकों चने चबाना

अत्यधिक परेशानियाँ झेलना/ बहुत परेशान करना

117. निन्यान्वें का फेर

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

धन कमाने का अत्यधिक लालच/लोभ में पड़ना

118. पगड़ी उछालना

किसी का अपमान करना

119. पगड़ी रखना

इज्जत बचाना

120. पहाड़ टूट पड़ना

बहुत कष्ट उठाना/कष्ट झेलना

121. पापड़ बेलना

बहुत कष्ट उठाना/कष्ट झेलना

122. पर हंडी ऊँची होना

पराई वस्तु का श्रेष्ठ नजर आना

123. पीठ दिखाना

हार मान कर भाग जाना

124. पेट का पानी न पचना

किसी की बात को कहे बिना न रह पाना

125. पेट में दाढ़ी होना

बचपन में ही बड़ों सी बातें करना/समय से पूर्व समझदार होना

126. पेट में चूहे कूदना

अत्यधिक भूख लगना

127. बाग – बाग होना

खुश होना/ अत्यधिक प्रसन्न होना

128. बालू से तेल निकालना

असंभव कार्य करना

129. भैंस के आगे बीन बजाना

मूर्ख को उपदेश देना/नासमझ से ज्ञान की बातें करना

130. मक्खी मारना

बेकार बैठे रहना/निकम्मा होना

131. मन के लड्डू खाना

मन ही मन प्रसन्न होना

132. माथे पर शिकन न आना

विपरीत परिस्थितियों में भी कष्ट से विचलित नहीं होना।

133. मुट्ठी गरम करना

रिश्वत देना/घूस देना

134. रंग में भंग होना

खुशनुमा माहौल में दुःख या शोक का होना

135. रंगा सियार होना

बाहर कुछ, अंदर कुछ/कपटपूर्ण व्यवहार

136. रोज कुआँ खेदना रोज पानी पीना

ताजा खाना, ताजा कमाना/प्रतिदिन कमाकर जीविका यापन करना

137. लोहा मानना

अधीनता स्वीकार करना/प्रतिपक्षी की महत्ता स्वीकार करना

138. लोहे के चने चबाना

अति कठित कार्य करना

139. लोहा लेना

टक्कर लेना/मुकाबला करना

140. विष उगलना

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

किसी के प्रति अपशब्द कहना/किसी के विरूद्ध जली कटी कहना

141. समय पर पत्थर पड़ना

विवेक खो देना /अविवेकी होना/बुद्धिभ्रष्ट होना

142. साँच को आँच नहीं

सत्यवादी को किसी का भय नहीं

143. श्रीगणेश करना

किसी कार्य का शुभारम्भ करना/शुरूआत करना/अच्छा काम शुरू करना

144. साँप सूँघना

स्तब्ध रह जाना /सहम जाना

145. सब्जबाग दिखना

झूठे आश्वासन देना/झूठा लालच देना/व्यर्थ की आशा दिलाना

146. सूरज को दीपक दिखाना

सुविख्यात व्यक्ति का परिचय देना

147. हथेली पर सरसों उगना

अति शीघ्रता करना/समय से पूर्व असंभव कार्य करना

148. हवा हो जाना

अतिशीघ्रता से लुप्त हो जाना

149. हाथ का मैल

तुच्छ और त्याज्य वस्तु / मामूली वस्तु होना

150. हाथ धो बैठना

किसी व्यक्ति या वस्तु को खो देना

151. हाथ पीले करना

पुत्री या लड़की का विवाह करना

152. हाथ डालना

किसी कार्य में हस्तक्षेप करना

153. हाथ पर हाथ धरे बैठना

बेकार बैठना/निकम्मा बैठना

154. हाथों हाथ रखना

अत्यधिक देखभाल करते हुए रखना

155. हाथ मलना

पछताना

मुहावरे

1. 'ईद का चांद होना' मुहावरे का सही अर्थ है–

(1) बहुत दिनों बाद दिखाई देना
(2) ईद पर चांद को लाना
(3) ईद का त्योहार होना
(4) ईद पर चांदी काटना

2. 'सब्जबाग दिखाना' मुहावरे का सही अर्थ है–

(1) भ्रमित करना
(2) अच्छी बातें कहकर बहकाना
(3) मीठी बातें करना
(4) बहलाना

3. 'बहुत ऊधम मचाना' के लिए उपयुक्त मुहावरा है–

(1) सिर मारना
(2) सिर पर उठा लेना
(3) मारधाड़ करना
(4) सिर पर भूत सवार होना

4. 'निन्यानवें के फेर में पड़ना' मुहावरे का सही अर्थ है–

(1) **परिवार के झंझटों में फंसे रहना**
(2) **धर जोड़ने में लगे रहना**
(3) **मूर्खता के कार्य कर बैठना**
(4) **किसी चक्कर में पड़ जाना**

5. 'अक्ल पर पत्थर पड़ना' मुहावरे का अर्थ है–

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

(1) मूर्ख होना (2) प्रतिभावान होना
(3) बुद्धिमान होना (4) बुद्धिभ्रष्ट होना

6. 'एक पंथ दो काज' मुहावरे का उचित अर्थ है–
(1) एक साथ दो–दो दोष। (2) समय पर कार्य करना।
(3) एक प्रयत्न से दो काम हो जाना। (4) एक राह पर दो लोग साथ होना।

7. 'अन्धा होना' मुहावरे का अभिप्राय है–
(1) आंखों से दिखाई न देना (2) आंख से काना
(3) विवेक भ्रष्ट होना (4) जहां धांधली का बोलबाला हो

8. चाँदी का जूता मारना
(1) रिश्वत देना (2) धनवान होना (3) धोखा देना (4) दिखावा करना

9. चींटी के पर निकलना
(1) नष्ट होने के करीब होना (2) बहुत चालाक होना
(3) तुच्छ कार्य करना (4) मृत्यु होना

10. डेढ़ चावल की खिचड़ी
(1) भिन्न विचार रखना (2) तुच्छ कार्य (3) कठिन कार्य (4) उपर्युक्त सभी

11. तवे की बूँद होना
(1) बहुत कीमती होना (2) तुरंत अदृश्य हो जाना (3) तुच्छ कार्य करना (4) महत्वहीन होना

12. दाल भात में मूसलचंद
(1) दो के बीच किसी अनावश्यक व्यक्ति का हस्तक्षेप करना (2) अनमोल मेल
(3) मूर्ख व्यक्ति (4) व्यर्थ व्यक्ति

13. दुधारी तलवार कलेजे पर फिरना
(1) दुखी होना (2)दोहरा दुःख होना (3) कष्ट को झेलना (4) घायल होना

14. नाक में कौड़ी डालना
(1) असंभव कार्य करना (2) निराश करना (3) बेबस करना (4) कठिन कार्य करना

15. सिंहावलोकन करना
(1) नजर का फेर (2) नजर फेर लेना
(3) आगे बढ़ते हुए पीछे की बातों पर नजर डालना (4) गंभीर दृष्टि से देखना

16. फिसल पड़े तो हर–हर गंगा
(1) मजबूरी में काम करना (2) नुकसान उठाना
(3) एक साथ दो काम करना (4) विपत्ति पड़ने पर ईश्वर का स्मरण करना

17. मुंशी प्रेमचन्द उपन्यास सम्राट कहे जाते हैं, कथा क्षेत्र में उनका लेखन अति उत्तम है। रेखांकित वाक्यांश के लिए उपयुक्त मुहावरा है–
(1) टोपी उछालना (2) कलम तोड़ना (3) कान काटना (4) तुती बोलना

18. भादों का मेंढक होना
(1) बहुत बोलना (2) अत्यंत मोटा होना (3) बुद्धिमान होना (4) उपर्युक्त सभी

19. किसी वस्तु का आवश्यकता से कम होना के लिए सही मुहावरा है–
(1) अँगुली चाटना (2) ऊँट के मुँह में जीरा
(3) ओस के चाटे प्यास न बुझना (4) एक अनार सौ बीमार

20. रानी रूठेगी अपना सुहाग लेगी
(1) रानी अपने पति की हत्या कर सकती हैं (2) अमीर व्यक्ति किसी को भी मार सकता हैं
(3) स्वामी नाराज होकर नौकरी के सिवा क्या लेगा (4) उपर्युक्त सभी

21. शेर के कान कतरना
(1) कठिन कार्य करना (2) बहुत चालाक होना (3) शेर को डराना (4) विद्वान होना

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

22. निम्नलिखित मुहावरों में किसका अर्थ 'काम बिगाड़ना' हैं

(1) आसमान सिर पर उठाना। (2) लुटिया डुबोना।

(3) कच्चा चिट्ठा खोलना। (4) इतिश्री करना।

23. मालूम होता है तुम्हारे यहां <u>रहने का संयोग समाप्त हो गया।</u> रेखांकित वाक्यांश के लिए सही मुहावरा है–

(1) नाता टूट जाना (2) डेरा उठ जाना (3) अन्न जल उठ जाना (4) हाथ तंग होना

लोकोक्ति

1. 'जो अपनी बात से टले नहीं' आशय के लिए उपयुक्त लोकोक्ति है–

(1) मौन (2) बातूनी (3) अटल (4) बड़बोला

2. 'मांग अधिक आपूर्ति कम' आशय के लिए उपयुक्त लोकोक्ति है–

(1) ऊंची दुकार फीके पकवान (2) एक अनार सौ बीमार

(3) ऊंट के मुंह में जीरा (4) एक पंथ दो काज

3. निम्नलिखित में से लोकोक्ति चुनिए–

(1) टांग अड़ाना (2) एक पंथ दो काज (3) कमर कसना (4) दम भरना

4. निम्नलिखित में से लोकोक्ति का चयन कीजिए–

(1) अंगारे उगलना (2) कौआ चले हंस की चाल (3) आंखे दिखाना (4) दांत खट्टे करना

5. लोकोक्ति व मुहावरे में सही अन्तर है–

(1) लोकोक्ति पूर्ण वाक्य होती है, जबकि मुहावरा वाक्यांश मात्र होता है।

(2) लोकोक्ति और मुहावरा, **दोनों ही पूर्ण वाक्य होते हैं।**

(3) मुहावरा पूर्ण वाक्य होता है, लोकोक्ति वाक्यांश मात्र होती है।

(4) **लोकोक्ति और मुहावरा, दोनों ही वाक्यांश मात्र होते हैं।**

6. 'लाख प्रयत्न करो तब भी कुटिल व्यक्ति अपनी कुटिलता नहीं छोड़ता' अर्थ के लिए उपयुक्त लोकोक्ति है–

(1) कुत्ते की दुम बारह बरस नली में रखो तो भी टेड़ी कीटेड़ी।

(2) कै हंसा मोती चुगे कै भूखा मर जाय।

(3) कोई माल मस्त कोई हाल मस्त।

(4) गधा धोने से बछड़ा नहीं हो जाता।

7. 'जैसी बहे बयार पीठ तब जैसी दीजे' लोकोक्ति का अर्थ है–

(1) पवन की तरह कभी शीतल और कभी उष्ण होना। (2) राजनीति में दलबदल करते रहना चाहिए।

(3) ऐसा काम करना चाहिए, जिससे संकट में न फंसा जाए। (4) समय का रूख देखकर काम करना चाहिए।

8. 'स्थिति दयनीय होने पर भी घमंड न छोड़ना' के लिए उपयुक्त लोकोक्ति है–

(1) ऊँट के मुंह में जीरा (2) रस्सी जल गयी पर ऐंठन न गयी

(3) चोर की दाढ़ी में तिनका (4) गरजै पर बरसे नहीं

9. 'घर में नहीं दाने अम्मा चली भुनाने' लोकोक्ति का सही अर्थ होगा–

(1) सामर्थ्य से बाहर कार्य करना (2) शेखी मारना

(3) व्यर्थ के कामों में समय नष्ट करना (4) ना होने पर भी ढोंग करना

10. 'चिराग तले अन्धेरा' लोकोक्ति का सही अर्थ है–

(1) **अपनी बुराई नहीं दीखना।** (2) **काम न जानना और बहाने बनाना।**

(3) **न कारण होगा न कार्य होगा।** (4) **परिश्रम का फल अन्धेरे से उजाला लाता है।**

11. 'द्रोपदी का चीर' मुहावरे का सही अर्थ है–

(1) बहुत पवित्र (2) लज्जा हरण

(3) अत्यधिक कुलम (4) ऐसी वस्तु जो समाप्त ही न हो

12. किस क्रम में मुहावरा नहीं है–

(1) भागीरथ–प्रयत्न (2) समझ पर पत्थर पड़ना

(3) अशर्फियाँ लुटें कोयलों पर मोहर (4) हाथों के तोते उड़ना

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

13. 'कहाँ राजा भोज कहाँ गंगू तेली' लोकोक्ति का सही अर्थ क्या है ?

(1) आकाश–पाताल का अन्तर होना (2) बराबरी करना

(3) अत्यधिक मित्रता (4) बहुत दूर की बात

14. किस क्रम में सही मेल नहीं है ?

(1) खोदा पहाड़ निकली चुहिया– लोकोक्ति (2) एक और एक ग्यारह–मुहावरा

(3) दुविधा में दोनों गये माया मिली न राम – लोकोक्ति (4) हम्मीर हठ– मुहावरा

15. ठंडा लोहा गरम लोहे को काट देता है।

(1) शांति पर क्रोध की विजय होती है। (2) क्रोध पर शांति की विजय होती है।

(3) धैर्य पर उतावले पन की विजय होती है। (4) झूठ पर सत्य की विजय होती है।

16. तन पर नहीं लत्ता पान खाएं अलबत्ता–

(1) झूठी शेखी बघारना। (2) वैभव का प्रदर्शन।

(3) दंभ का प्रदर्शन। (4) चालाकी।

17. तेल व मिठाई, चूल्हे धरी कड़ाही

(1) सफलता से सबको लगाव होता है (2) बिना सामान के काम नहीं होता

(3) सफलता सरलता से नहीं मिलती (4) उपर्युक्त सभी

18. दान की बछिया के दांत नहीं देखे जाते–

(1) दांत देखकर पशु की उम्र ज्ञात हो जाती है (2)मुफ्त की वस्तु के गुण–अवगुण नहीं देखे जाते

(3) दान की वस्तु का मूल्य नहीं पूछा जाता (4) दान की बछिया के दांत नहीं होते

19. दुधारू गाय की लात भी भली–

(1) जिससे फायदा हो उसकी झिड़की भी सुननी पड़ती है। (2) योग्य व्यक्ति बिगडैल भी हो तो उसे सहना पड़ता है।

(3) दुधारू गाय लात भी मारती है। (4) इसमें से कोई नहीं।

20. नदी नाव संयोग–

(1) चमत्कार करना। (2) दुर्लभ मिलन।

(3) नदी और नाव का परम्परागत साथ। (4) इनमें से कोई भी नहीं।

21. पानी मथने से घी नहीं निकलता–

(1) छोटे कार्य करने से कोई लाभ नहीं। (2) व्यर्थ की बहस से कोई लाभ नहीं।

(3) घी दही से निकलता है। (4) उपर्युक्त सभी।

22. पंच कहें बिल्ली तो बिल्ली–

(1) अपनी अलग राय। (2) जो सबकी राय सो अपनी राय।

(3) पंचों में अत्यधिक विश्वास। (4) इनमें से कोई नहीं।

23. मेंढकी को भी जुकाम हुआ–

(1) बड़े आदमी का अकड़ या नखरा दिखाना। (2) बड़े आदमी का विनम्र होना।

*(3) छोटे आदमी का अकड़ या नखरा दिखाना। (4) ये सभी।

24. मियाँ की दौड़ मस्जिद तक–

(1) नमाज पढ़ना। (2) सीमित क्षेत्र तक पहुंच।

(3) मियाँ का प्रतिदिन मस्जिद में जाना। (4) ये सभी।

25. मरी बछिया बामन के सिर–

(1) स्वार्थी (2) दिखावा करना

(3) व्यर्थ का दान (4) पाखंडता

26. लालफीताशाही

(1) सरकारी सेवा (2) लाल क्रांति

(3) सरकारी अड़ंगा (4) ये सभी

27. सिर मुंडाते ही ओले पड़ना।

Click Here For All Subjects Free Notes www.maharathacademy.in

(1) बाल कटवाते ही वर्षा होना (2) कार्य में विध्न पड़ना
(3) मन प्रसन्न होना (4) मन निराश होना

28. सौ मन चूहे खा बिल्ली हज को चली
(1) जीवन भर लोगों पर अत्याचार करना (2) जीवन के अंत में लोगों पर उपकार करना
(3) जीवन भर कुकर्म करने के बाद अंत समय में सुकर्म करना (4) बिल्ली का चूहे खाना

29. निम्नलिखित में एक लोकोक्ति है, उसका चयन कीजिए–
(1) कठपुतली होना (2) आँख चुराना
(3) आस्तीन का साँप होना (4) एक पंथ दो काज

30. अरहर की टाटी, गुजराती ताला
(1) छोटी वस्तु की सुरक्षा में अधिक व्यय (2) बेमेल वस्तु
(3) मूर्खतापूर्ण कृत्य (4) निरर्थक उपदेश

31. आठ वार नौ त्यौहार
(1) हिन्दुओं में त्यौहारों की अधिकता है। (2) मौज–मस्ती का जीवन।
(3) त्यौहार मनाने का शौक। (4) कोई भी नहीं।

32. उतर गई लोई तो क्या करेगा कोई
(1) प्रतिष्ठा नष्ट होने पर व्यक्ति निर्लज्ज हो जाता है। (2) एक बार अपराध करने से दिल खुल जाता है।
(3) चद्दर का उतर जाना। (4) कोई नहीं।

33. एक तो करेला दूजे नीम चढ़ा
(1) एक साथ दो दुर्गुण होना (2) करेले का पौधा नीम पर वृद्धि करता है
(3) करेले और का नीम का संयोग (4) ये सभी

34. कहाँ राजा भोज कहाँ गंगू तेली
(1) बहुत अधिक अंतर होना (2) राजा के कारण प्रजा का कष्ट उठाना
(3) राजा और प्रजा में असमानता (4) बड़े व्यक्ति का सम्मान और छोटे का अपमान

35. खाक डाले चाँद नहीं छिपता
(1) अच्छे आदमी की निंदा अच्छी बात है (2) अच्छे आदमी की निंदा से उसका कुछ नहीं बिगड़ता
(3) मूर्ख व्यक्ति की निंदा से उसका कुछ नहीं बिगड़ेगा (4) धुल से चाँद नहीं छिपता

36. गए रोजे छुड़ाने नमाज गले पड़ी
(1) उपकार के बदले स्वयं को दुःख भोगना पड़ा (2) स्वार्थ बुरी बला है
(3) व्यक्ति को कामचोर नहीं होना चाहिए (4) ये सभी

37. घर में दीया जलाकर, मस्जिद में दीया जलाना
(1) स्वार्थ के साथ परमार्थ (2) पहले परमार्थ फिर स्वार्थ
(3) पहले स्वार्थ फिर परमार्थ (4) उपर्युक्त सभी।

38. चिकने मुँह को सब चूमते हैं–
(1) सुंदर व्यक्ति को सभी पसंद करते हैं (2) सामर्थ्यवान के सब साथी है
(3) सौंदर्य का जीवन में बहुत महत्व है (4) ये सभी

39. चुपड़ी और दो–दो
(1) दो चुपड़ी रोटियाँ (2) सब प्रकार से लाभ
(3) स्वादिष्ट भोजन (4) ये सभी।

निम्न लोकोक्तियों में सही अर्थ का चयन कीजिए

40. 'ओछा व्यक्ति अधिक इतराता है।'
(1) अधजल गगरी छलकत जाए। (2) उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे।
(3) ओछे की प्रीति बालू की भीत। (4) ऊंची दुकान फीका पकवान।